FAIZAN-E-MADINA

माहनामा

फ़ैज़ाने मदीना

(दावते इस्लामी)

जनवरी 2026 ई. / शाबानुल मुअज़्ज़म 1447 हि.

- नुज़ूले क़ुरआन के मक़ासिद और ह़िक्मतें 3
- ह़ालात और ख़यालात 17
- इस्लाम का निज़ामे मुवाख़ात 19
- इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की इ़ल्मी जलालत व अ़ज़मत 37
- बेटियों को मेहमान नवाज़ी का सलीक़ा सिखाएं 52

टेन्शन से हिफ़ाज़त

اَللّٰهُ الصَّمَد

100 बार

हर नमाज़ के बाद पढ़ने वाला ग़मों, दुखों, परेशानियों और टेन्शन वग़ैरा से महफ़ूज़ रहे। (اِنْ شَآءَاللّٰهُ الْكَرِيْم)

अल्लाह पाक चाहे तो ही फ़ाइदा होगा, येह ज़ेहन रखना ज़रूरी है।

औलादे नरीना और रोज़ी में बरकत

يَا اَوَّلُ

40 बार

पढ़ कर पानी या शहद मिले पानी पर दम कर के आधा ख़ुद पिए और आधा ज़ौजा को पिलाए। اِنْ شَآءَاللّٰهُ الْكَرِيْم बेटा होगा और रिज़्क़ में भी बरकत होगी। (येह अ़मल 40 दिन मुसल्सल करना है)

शादी के लिये ग़ैबी अस्बाब हों

يَا وَهَّابُ

300 बार (अव्वल आख़िर ग्यारह बार दुरूदे इब्राहीम)

रोज़ाना सोने से पहले पढ़ लीजिये।

(जब तक शादी न हो जाए रोज़ाना पढ़ना है)

नज़र कमज़ोर हो तो

सात बादाम और सात सफ़ेद मिर्च (यानी दखनी मिर्च) रोज़ाना रात पानी में भिगो दीजिये, सुब्ह नहार मुंह (यानी ख़ाली पेट) चबा कर खा लीजिये (रोज़ा हो तो सुब्ह भिगो कर इफ़्तार में इस्तिमाल कीजिये) اِنْ شَآءَاللّٰهُ الْكَرِيْم नज़र में बेहतरी आएगी और अल्लाह पाक चाहे तो ऐनक भी उतर जाए। (मुद्दत : ता हुसूले मुराद)

बच्चों को पीस कर शहद मिला कर भी खिला सकते हैं।

ताकीद : हर इलाज अपने त़बीब के मश्वरे से कीजिये।

माहनामा

फ़ैज़ाने मदीना

(दावते इस्लामी)

जनवरी 2026 ई.

ब फ़ैज़ाने नज़र

सिराजुल उम्मह, काशिफ़ुल ग़ुम्मह,
इमामे आज़म हज़रते सय्यिदुना
इमाम अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ

ब फ़ैज़ाने करम

आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत
मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह
इमाम अहमद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना धूम मचाए घर घर
या रब जा कर इश्क़े नबी के जाम पिलाए घर घर

(अज़ : अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ)

क़ुरआनो ह़दीस

नुज़ूले क़ुरआन के मक़ासिद और हिक्मतें 3
मरीज़ का इलाज 6

फ़ैज़ाने सीरत

रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ والہ وسلم के नींद से बेदार हो कर चन्द अन्दाज़ 8

फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत

अमीर और ग़रीब गाहक को मुख़्तलिफ़ क़ीमत बताना कैसा ? मअ़ दीगर सुवालात 10

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

बहालते रोज़ा नाक में दवा डालने का हुक्म मअ़ दीगर सुवालात 12

मज़ामीन

इस्लामी मुआ़शरा ही मिसाली मुआ़शरा है 14
हालात और ख़यालात 17
इस्लाम का निज़ामे मुवाख़ात 19
नमाज़े तहज्जुद : क़ुर्बे इलाही का सुन्हरी ज़ीना 22
मौत के बाद की फ़िक्र 24
बाजमाअ़त नमाज़ की हिक्मतें 26

ताजिरों के लिये

अह़कामे तिजारत 28

बुज़ुर्गाने दीन की सीरत

हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ علیہ السلام पर आज़माइशें 30
सिद्दीक़े अकबर رضی اللہ عنہ की फ़िरासत और मुआ़मला फ़हमी 32
हज़रते शुरह़बील बिन ह़सना رضی اللہ عنہما 34
हज़रते अ़म्र बिन हुरैस رضی اللہ عنہما 36
इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा رحمۃ اللہ علیہ की इ़ल्मी जलालतो अ़ज़मत 37
अपने बुज़ुर्गों को याद रखिये 40

क़ारिईन के सफ़ह़ात

नए लिखारी 42

बच्चों का “माहनामा फ़ैज़ाने मदीना”

नजात की रात 46
एड़ी की ठोकर से चश्मा जारी हो गया 47
मजूसी को इस्लाम कैसे मिला : 48
अपने बच्चों को शुक्र गुज़ार बनाइये 50

इस्लामी बहनों का “माहनामा फ़ैज़ाने मदीना”

बेटियों को मेहमान नवाज़ी का सलीक़ा सिखाएं 52
इस्लामी बहनों के शरई मसाइल 54

नुज़ूले क़ुरआन के मक़ासिद और ह़िक्मतें

(क़िस्त : 01)

क़ुरआने करीम अल्लाह तआ़ला की आख़िरी आस्मानी किताब है जो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर नाज़िल की गई। येह मह़ज़ एक किताब नहीं बल्कि इन्सानिय्यत के लिये मुकम्मल ज़ाबित़ए ह़यात, हिदायत का सरचश्मा और रह़मत का पैग़ाम है। अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआने पाक में मुतअ़द्दद मक़ामात पर इस किताबे अ़ज़ीम के नुज़ूल की ह़िक्मतों, मक़ासिद और अस्बाब को बयान फ़रमाया है। कहीं "نَزَّلَ" और "اَنْزَلَ" के अल्फ़ाज़ इस्तिमाल हुए हैं तो कहीं "اٰتَیْنَا" और दीगर अल्फ़ाज़े अ़त़ा के साथ येह मक़ासिद वाज़ेह़ किये गए हैं। येह मक़ासिद इतने जामेअ़ और हमागीर हैं कि इन्सानी ज़िन्दगी के हर पहलू को मुह़ीत़ हैं। ज़ैल में हम क़ुरआने करीम की रौशनी में उन मक़ासिद और ह़िक्मतों का तफ़्सीली जाइज़ा पेश करते हैं :

हिदायत और राहे रास्त की त़रफ़ रहनुमाई

नुज़ूले क़ुरआन का सब से बुन्यादी और अहम मक़्सद क़ुरआने करीम में येह इरशाद फ़रमाया गया है कि येह किताब इन्सानिय्यत की हिदायत के लिये नाज़िल की गई है। अल्लाह तआ़ला ने सूरतुल बक़रह में फ़रमाया :

﴿ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَیْبَ ۚۖ فِیْهِ ۚ هُدًى لِّلْمُتَّقِیْنَ(۲)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह बुलन्द रुतबा किताब (क़ुरआन) कोई शक की जगह नहीं उस में हिदायत है डर वालों को।[1]

इसी त़रह़ सूरतुल बक़रह में माहे रमज़ान के तज़्किरे के साथ फ़रमाया : ﴿شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِیْۤ اُنْزِلَ فِیْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَ بَیِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَ الْفُرْقَانِۚ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : रमज़ान का महीना जिस में क़ुरआन उतरा लोगों के लिये हिदायत और रहनुमाई और फ़ैसले की रौशन बातें।[2]

मज़ीद सूरए यूनुस में इरशाद है : ﴿یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ شِفَآءٌ لِّمَا فِی الصُّدُوْرِ ۙ۬ وَ هُدًى وَّ رَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِیْنَ(۵۷)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ लोगो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से नसीह़त आई और दिलों की सेह़त और हिदायत और रह़मत ईमान वालों के लिये।[3]

येह आयाते करीमा वाज़ेह़ करती हैं कि क़ुरआन का बुन्यादी मक़्सद इन्सानिय्यत को गुमराही की तारीकियों से निकाल कर हिदायत की रौशनी की त़रफ़ लाना है। इन्सान अपनी फ़ित़रत के एतिबार से सच्चाई का त़ालिब है लेकिन शैत़ानी वसाविस, नफ़्सानी ख़्वाहिशात और माह़ौल के मन्फ़ी असरात उसे राहे रास्त से भटका

देते हैं। क़ुरआन वोह नूरे हिदायत है जो हर दौर में, हर मुआशरे में और हर फ़र्द के लिये राहे नजात मुतअय्यन करता है। क़ुरआने करीम इन्सान को उस की इन्फ़िरादी और इज्तिमाई ज़िन्दगी में राहनुमाई फ़राहम करता है। मुआशरे में जब लोग क़ुरआन की हिदायत से दूर हो जाते हैं तो इन्तिशार, बे राहरवी और अख़्लाक़ी ज़वाल जन्म लेता है, लेकिन जब क़ुरआन की तालीमात पर अ़मल होता है तो मुआशरा अम्न, सुकून और तरक़्क़ी की राह पर गामज़न हो जाता है।

ह़क़ व बाति़ल में फ़र्क़ और फ़ैसला

नुज़ूले क़ुरआन का एक अहम मक़्सद क़ुरआने करीम में येह इरशाद फ़रमाया गया है कि येह किताब ह़क़ और बाति़ल में फ़र्क़ करने वाली और फ़ैसला कुन है।

अल्लाह तआला ने सूरतुल फ़ुरक़ान में फ़रमाया : ﴿تَبٰرَكَ الَّذِیْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰى عَبْدِهٖ لِیَكُوْنَ لِلْعٰلَمِیْنَ نَذِیْرَاۙ(۱)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बड़ी बरकत वाला है वोह कि जिस ने उतारा क़ुरआन अपने बन्दे पर जो सारे जहान को डर सुनाने वाला हो।(4)

क़ुरआने करीम को "الفرقان" का नाम इस लिये दिया गया कि येह हर मुआमले में ह़क़ और बाति़ल के दरमियान वाज़ेह ख़त़ खींचता है। येह सिर्फ़ अ़क़ाइद में ही नहीं बल्कि अख़्लाक़िय्यात, मुआशरती मुआमलात, मुआशी निज़ाम, सियासी उमूर और ज़िन्दगी के हर शोबे में सह़ीह़ और ग़लत़ का मेयार मुतअय्यन करता है। आज की दुनिया में जहां नसबिय्यत पसन्दी (Relativism) का ग़लबा है, वहां क़ुरआन वाज़ेह और क़त़ई मेयारात फ़राहम करता है। येह इन्सान को तारीकी में भटकने से बचाता है और उसे यक़ीन की राह दिखाता है। क़ुरआन की तालीमात पर अ़मल कर के मुआशरा एक वाज़ेह अख़्लाक़ी ढांचे का ह़ामिल बन जाता है।

मोमिन के लिये बिशारत और ख़ुशख़बरी

नुज़ूले क़ुरआन का एक मक़्सद क़ुरआने करीम में येह इरशाद फ़रमाया गया है कि येह किताब ईमान लाने वालों के लिये बिशारत और ख़ुशख़बरी है।

सूरए बनी इसराईल में अल्लाह तआला फ़रमाता है : ﴿اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ یَهْدِیْ لِلَّتِیْ هِیَ اَقْوَمُ وَ یُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِیْنَ الَّذِیْنَ یَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا كَبِیْرًاۙ(۹)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक येह क़ुरआन वोह राह दिखाता है जो सब से सीधी है और ख़ुशी सुनाता है ईमान वालों को जो अच्छे काम करें कि उन के लिये बड़ा सवाब है।(5)

सूरतुन्नह़ल में भी इसी मज़मून को बयान किया गया है : ﴿وَ نَزَّلْنَا عَلَیْكَ الْكِتٰبَ تِبْیَانًا لِّكُلِّ شَیْءٍ وَّ هُدًى وَّ رَحْمَةً وَّ بُشْرٰى لِلْمُسْلِمِیْنَ۠(۸۹)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने तुम पर येह क़ुरआन उतारा कि हर चीज़ का रौशन बयान है और हिदायत और रह़मत और बिशारत मुसलमानों को।(6)

येह आयात बताती हैं कि क़ुरआन सिर्फ़ डर सुनाने के लिये नहीं बल्कि ईमान वालों को उम्मीद दिलाने और उन के दिलों में इत़मीनान पैदा करने के लिये भी नाज़िल हुवा। मोमिन जब क़ुरआन की तिलावत करता है और उस के अह़काम पर अ़मल करता है तो उसे अल्लाह की रिज़ा, जन्नत की नेमतों और अबदी कामयाबी की ख़ुशख़बरी मिलती है। येह बिशारतें इन्सान के दिल में उम्मीद और अ़ज़्म पैदा करती हैं। दुनिया की मुश्किलात और आज़माइशों में जब इन्सान थक जाता है तो क़ुरआन की येह ख़ुशख़बरियां उसे ताज़ा दम करती हैं। मुआशरे में जब मायूसी और नाउम्मीदी फैलती है तो क़ुरआन की येह बिशारतें मोमिनों को मुस्बत सोच और अ़मल की त़रफ़ राग़िब करती हैं।

काफ़िरों के लिये इन्तिबाह और तम्बीह

नुज़ूले क़ुरआन का एक मक़्सद क़ुरआने करीम में येह इरशाद फ़रमाया गया है कि येह किताब मुन्किरीन और काफ़िरों को ख़बरदार करने और उन्हें अ़ज़ाब से डराने के लिये नाज़िल की गई।

सूरए त़ाहा में अल्लाह तआला फ़रमाता है :

﴿مَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَیْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰۤىۙ(۲) اِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ یَّخْشٰىۙ(۳)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मह़बूब हम ने तुम पर येह क़ुरआन इस लिये न उतारा कि तुम मशक़्क़त में पड़ो हां उस को नसीह़त जो डर रखता हो।(7)

سورۃ حٰمٓ السجدة में फ़रमाता है : ﴿فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ وَّ ثَمُوْدَؕ(۱۳)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर

अगर वोह मुंह फेरें तो तुम फ़रमाओ कि मैं तुम्हें डराता हूं एक कड़क से जैसी कड़क आ़द और समूद पर आई थी।[8]

सूरतुल फ़ुरक़ान में भी येह मज़मून है : ﴿تَبٰرَكَ الَّذِیْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰى عَبْدِهٖ لِیَكُوْنَ لِلْعٰلَمِیْنَ نَذِیْرَا ۙ(۱)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बड़ी बरकत वाला है वोह कि जिस ने उतारा क़ुरआन अपने बन्दे पर जो सारे जहान को डर सुनाने वाला हो।[9]

क़ुरआन का येह इन्ज़ारी पहलू इन्तिहाई अहम है क्यूंकि येह इन्सान को उस के अन्जाम से आगाह करता है। जो लोग अल्लाह के अह़काम से रूगर्दानी करते हैं, उस की निशानियों को झुटलाते हैं और ज़ुल्मो फ़साद में मुब्तला रहते हैं, क़ुरआन उन्हें दुनिया और आख़िरत के अ़ज़ाब से ख़बरदार करता है। येह तम्बीह रह़मत ही का ह़िस्सा है क्यूंकि उस से इन्सान को तौबा और इस्लाह़ का मौक़अ़ मिलता है। गुज़श्ता क़ौमों के वाक़िआ़त और उन पर नाज़िल होने वाले अ़ज़ाब का तज़्किरा इस लिये किया जाता है ताकि मौजूदा नस्ल इ़ब्रत ह़ासिल करे। मुआ़शरे में जब बुराइयां आ़म हो जाती हैं और लोग अख़्लाक़ी हुदूद को पामाल करने लगते हैं तो क़ुरआन की येह तम्बीहात उन्हें एहतिसाब की त़रफ़ बुलाती हैं। येह डराना मह़ज़ ख़ौफ़ज़दा करना नहीं बल्कि इन्सान को तबाही से बचाने की कोशिश है।

दिलों की तस्कीन और इत़मीनान

नुज़ूले क़ुरआन का एक मक़्सद क़ुरआने करीम में येह इरशाद फ़रमाया गया है कि येह किताब मोमिनों के दिलों को सुकून और इत़मीनान फ़राहम करती है।

सूरतुर्रअ़द में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : ﴿اَلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ تَطْمَىٕنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِؕ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَىٕنُّ الْقُلُوْبُؕ(۲۸)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो ईमान लाए और उन के दिल अल्लाह की याद से चैन पाते हैं सुन लो अल्लाह की याद ही में दिलों का चैन है।[10]

सूरए यूनुस में फ़रमाया : ﴿یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ شِفَآءٌ لِّمَا فِی الصُّدُوْرِ ﳔ وَ هُدًى وَّ رَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِیْنَ(۵۷)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ लोगो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से नसीह़त आई और दिलों की सेह़त और हिदायत और रह़मत ईमान वालों के लिये।[11]

येह आयात वाज़ेह़ करती हैं कि क़ुरआन दिलों की दवा और रूहों की ग़िज़ा है। जब इन्सान क़ुरआन की तिलावत करता है, उस के मआ़नी पर ग़ौर करता है और उस के अह़काम पर अ़मल करता है तो उस के दिल में एक ख़ास क़िस्म का सुकून और इत़मीनान पैदा होता है जो दुनिया की किसी दूसरी चीज़ से ह़ासिल नहीं हो सकता। आज की दुनिया में जहां ज़ेहनी बीमारियां, डिप्रेशन, बेचैनी और इज़्त़िराब आ़म हैं, वहां क़ुरआन का येह रूह़ानी इ़लाज इन्तिहाई मुअस्सर है। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

اِنَّ هٰذَا الْقُرْآنَ مَأْدُبَةُ اللهِ فَتَعَلَّمُوا مِنْ مَأْدُبَتِهِ مَا اسْتَطَعْتُمْ

“बेशक येह क़ुरआन अल्लाह का दस्तरख़्वान है, पस उस के दस्तरख़्वान से जितना सीख सको सीखो।”[12] मुआ़शरे में जब लोग क़ुरआन से तअ़ल्लुक़ मज़बूत करते हैं तो उन में सब्र, शुक्र, तवक्कुल और रिज़ा जैसी सिफ़ात पैदा होती हैं जो ज़िन्दगी की मुश्किलात का सामना करने में मुआ़विन होती हैं। (जारी है)

---

(1)پ1، البقرۃ:2 (2)پ2، البقرۃ: 185 (3)پ11، یونس:57 (4)پ18، الفرقان:1 (5)پ15، بنی اسرآءیل:9 (6)پ14، النحل:89 (7)پ16، طٰہٰ:2، 3 (8)پ24، حٰمٓ السجدۃ:13 (9)پ18، الفرقان:1 (10)پ13، الرعد:28 (11)پ11، یونس:57 (12) معجم کبیر، 9/130، رقم:8646

मोजिज़ए मेराज का तफ़्सीली बयान पढ़ने के लिये येह किताब “मक्तबतुल मदीना” से ह़ासिल कीजिये या दावते इस्लामी की वेबसाइट से मुफ़्त डाउनलोड कीजिये।

लो मदीने का फूल लाया हूं
मैं ह़दीसे रसूल लाया हूं

शर्हे ह़दीसे रसूल

मरीज़ का इ़लाज

मुस्लिम शरीफ़ मे है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : لِكُلِّ دَاءٍ دَوَاءٌ فَاِذَا اُصِيْبَ دَوَاءُ الدَّاءِ بَرَاَ بِاِذْنِ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ तर्जमा : हर बीमारी की दवा है, जब दवा बीमारी तक पहुंचा दी जाती है तो अल्लाह पाक के हुक्म से मरीज़ अच्छा हो जाता है।(1)

इस ह़दीसे पाक के पहले हि़स्से "**हर बीमारी की दवा है**" का मफ़्हूम एक और ह़दीसे मुबारक में भी बयान हुवा चुनान्चे नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : مَا اَنْزَلَ اللّٰهُ دَاءً اِلَّا اَنْزَلَ لَهٗ شِفَاءً तर्जमा : अल्लाह पाक ने कोई ऐसी बीमारी नाज़िल नहीं फ़रमाई जिस की शिफ़ा न उतारी हो।(2) इस ह़दीसे पाक में बुढ़ापे और मौत का इस्तिसना नहीं किया गया क्युंकि येह ह़क़ीक़त में बीमारियों में शुमार ही नहीं होते।(3)

शर्हे ह़दीस

इमाम नववी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه शुरूअ़ में बयान कर्दा ह़दीसे पाक की वज़ाहत में फ़रमाते हैं : येह ह़दीसे पाक बिल्कुल वाज़ेह है, क्यूंकि त़बीब ह़ज़रात कहते हैं कि "बीमारी" दरअस्ल जिस्म का अपनी क़ुदरती ह़ालत से हट जाना है, और "**इ़लाज**" का मक़्सद येह होता है कि जिस्म को दोबारा इसी फ़ित़री ह़ालत पर लौटा दिया जाए। "**सेह़त**" को बरक़रार रखने का मत़लब येह है कि इन्सान अपने जिस्म को इसी एतिदाल पर क़ाइम रखे। येह काम दुरुस्त और मुतवाज़िन ग़िज़ा से और दीगर मुनासिब तदाबीर से होता है। और जब इन्सान बीमार हो जाए तो उसे ऐसी दवाएं दी जाती हैं जो बीमारी के असर के मुख़ालिफ़ हों, ताकि तवाज़ुन बह़ाल हो जाए। मशहूर त़बीब बुक़रात़ भी येही कहता है कि अश्या का इ़लाज उन की ज़िद से किया जाता है। अलबत्ता बाज़ औक़ात बीमारी की ह़क़ीक़त या दवा की अस्ल कैफ़िय्यत इतनी बारीक और पोशीदा होती है कि त़बीब के लिये उसे पहचानना मुश्किल हो जाता है। ऐसी सूरत में इ़लाज में ग़लती हो सकती है। मिसाल के त़ौर पर त़बीब येह समझता है कि बीमारी किसी गर्म माद्दे की वज्ह से है, ह़ालांकि वोह किसी ठन्डे माद्दे से पैदा हुई होती है, या वोह गर्मी के किसी दूसरे दर्जे की वज्ह से होती है, जिस का अन्दाज़ा ग़लत़ लगाया जाता है। इस वज्ह से शिफ़ा नहीं होती।

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कलाम के आख़िरी हि़स्से से इशारा मिलता है कि अगर कोई येह कहे कि "आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि हर बीमारी की दवा है, मगर हम देखते हैं कि बहुत से मरीज़ इ़लाज कराते हैं फिर भी ठीक नहीं होते" तो उस का जवाब येह है कि येह दवा के न पाए जाने की वज्ह से नहीं बल्कि उस दवा की ह़क़ीक़त और सह़ीह़ इस्तिमाल के इ़ल्म के न होने की वज्ह से है। येही उस ह़दीस का मफ़्हूम है, और अल्लाह ही बेहतर जानता है।(4)

फ़रिश्ते की आड़

शर्हे मिरक़ात में है : जब अल्लाह पाक किसी बीमार की शिफ़ा नहीं चाहता तो दवा और मरज़ के दरमियान एक फ़िरिश्ते के ज़रीए आड़ कर देता है जिस की वज्ह से दवा मरज़ पर वाक़ेअ़ (यानी लागू) नहीं होती, जब शिफ़ा का इरादा होता है तो वोह पर्दा हटा दिया जाता है जिस से दवा मरज़ पर वाक़ेअ़ (यानी लागू) होती है और शिफ़ा हो जाती है।[5]

अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه लिखते हैं : रब्बे ज़ुल जलाल चाहे तो दवा शिफ़ा का ज़रीआ़ बने वरना ऐन मुम्किन है कि वोह दवा मौत का पैग़ाम साबित हो ! और येह भी देखा जाता है कि माहिर डॉक्टर की त़रफ़ से मिलने वाली दुरुस्त दवा के बावुजूद किसी मरीज़ को मन्फ़ी असर (REACTION) हो जाता और वोह मज़ीद शदीद बीमार या माज़ूर हो जाता या दम तोड़ देता है और फिर बाज़ लोगों की जहालत के बाइ़स बेचारे डॉक्टर की शामत आ जाती है।[6]

इ़लाज करवाना मुस्तह़ब है

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इमाम नववी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के ह़वाले से लिखते हैं : येह ह़दीस इस बात की त़रफ़ इशारा करती है कि इ़लाज कराना मुस्तह़ब है (पसन्दीदा) अ़मल है। येही सह़ाबए किराम और बाद के अकाबिर उ़लमा की राय है। इस में उन लोगों का रद भी है जो इ़लाज के मुन्किर हैं और कहते हैं कि हर चीज़ अल्लाह के फ़ैसले और तक़्दीर से होती है, इस लिये इ़लाज की कोई ज़रूरत नहीं। अक्सर अहले इ़ल्म की दलील येही अह़ादीस हैं जिन से येह बात वाज़ेह होती है कि अल्लाह ही दर अस्ल सब कुछ करने वाला है, और इ़लाज भी अल्लाह की तक़्दीर ही का एक हिस्सा है। बिल्कुल इसी त़रह़ जैसे दुआ़ करना, या हलाकत में अपने आप को डालने से बचाना (येह सब भी तक़्दीर के दाइरे में होते हुए इन्सान के ज़िम्मे हैं) अगर्चे मौत का वक़्त मुक़र्रर है और तक़्दीर नहीं बदलती (मगर अस्बाब को इख़्तियार करना भी अल्लाह के हुक्म से है)।

इस के बाद अ़ल्लामा अ़ली क़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : ख़ुलासा येह कि इ़लाज करवाना तवक्कुल (यानी अल्लाह पर भरोसा) के मनाफ़ी नहीं, बिल्कुल इसी त़रह़ जैसे भूक मिटाने के लिये खाना खाना या प्यास बुझाने के लिये पानी पीना तवक्कुल के ख़िलाफ़ नहीं। इसी लिये इमाम मुह़ासबी ने फ़रमाया : "सच्चा तवक्कुल करने वाला शख़्स भी इ़लाज कराता है, क्यूंकि वोह सय्यिदुल मुतवक्किलीन (यानी रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की पैरवी करता है।"[7]

---

(1) مسلم، ص933، حدیث: 5741 (2) بخاری، 4/16، حدیث: 5678 (3) عمدۃ القاری، 14/669۔ حاشیۃ السندی علی البخاری، 4/16، تحت الحدیث: 5678 (4) شرح صحیح مسلم للنووی، 14/192 (5) مرقاۃ المفاتیح، 8/288، تحت الحدیث: 4515 (6) نیکی کی دعوت، ص423 (7) مرقاۃ المفاتیح، 8/289۔

बीमारी के फ़ज़ाइल, बीमारी और मुसीबत पर सब्र की बरकात और बीमारियों के रूह़ानी इ़लाज पर मुश्तमिल नायाब रिसाला मक्तबतुल मदीना से ह़ासिल कीजिये या दावते इस्लामी की वेबसाइट से मुफ़्त डाउनलोड कीजिये।

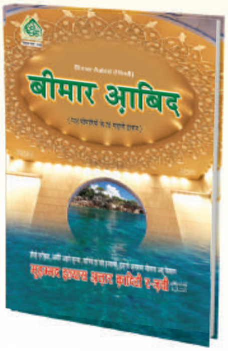

अन्दाज़ मेरे हुज़ूर के

आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुह़म्मदे अ़रबी के नींद से बेदार हो कर चन्द अन्दाज़

अल्लाह करीम का हम पर एह़सान है कि उस ने हमें नींद की उस नेमत से नावाज़ा जो हमारे ज़ेहन को सुकून, रूह़ को तस्कीन, दिल को राह़त और जिस्म को सेह़तमन्द रखने में मदद करती है और करमे ख़ुदावन्दी से हम नींद से बेदार हो कर कामों को मज़ीद बेहतर त़ौर पर करने के क़ाबिल हो जाते हैं।

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नींद से बेदार होने का अन्दाज़ कैसा था ? एक उम्मती होने की ह़ैसिय्यत से हमारे लिये येह जानना ज़रूरी है ताकि हम अन्दाज़े मुस्त़फ़ा अपना कर पूरे दिन में ख़ैरो भलाई पा सकें।

बेदार हो कर सफ़ाई का एहतिमाम

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सो कर उठने के बाद मुंह की सफ़ाई का एहतिमाम फ़रमाते चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं : नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब रात में तहज्जुद के लिये बेदार होते तो अपना मुंह मिस्वाक से साफ़ फ़रमाते।[(1)] दरअस्ल सोते हुए मेदे से गैस मुंह की त़रफ़ आती है जिस की वज्ह से मुंह का ज़ाइक़ा बदल जाता है और बदबू आती है।[(2)] रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उम्मत की तालीम के लिये सो कर उठने के बाद मुस्तक़िल मिस्वाक करने का अन्दाज़ हमें दिया ताकि हम इसे अपना कर मुंह की बदबू और बदज़ाइक़े से नजात ह़ासिल कर सकें।

बेदार हो कर पढ़ी जाने वाली दुआ़एं

नींद से बेदार हो कर अपने ह़क़ीक़ी ख़ालिक़ो मालिक का नाम ज़बान पर आने की आ़दत बन जाए तो दिन किस क़दर ख़ूबसूरत गुज़रेगा। येह आ़दत बनाने के लिये हम अपने प्यारे करम नवाज़ आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अन्दाज़ मुलाह़ज़ा करते हैं चुनान्चे

1 रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नींद से बेदार हो कर येह दुआ पढ़ते : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَحْیَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَیْهِ النُّشُوْرُ यानी तमाम तारीफ़ें अल्लाह पाक के लिये जिस ने हमें मौत (नींद) के बाद ज़िन्दगी दी और (क़ियामत के दिन) इसी की त़रफ़ उठना है।[(3)]

रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस अन्दाज़े दुआ़ से हमें येह बात सीखनी चाहिये कि नींद से बेदार होते ही हमारा सब से पहला काम **"यादे ख़ुदा"** होना चाहिये, फ़तावा आ़लमगीरी में है : सुब्ह़ होने से पहले ही उठ जाना चाहिये नीज़ ख़ुदा को याद करते हुए नींद से बेदार हो और इस बात का पक्का इरादा करे कि ह़राम कामों से बचेगा और किसी पर ज़ुल्म नहीं करेगा।[(4)]

2 रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सो कर उठने के बाद हमें येह दुआ़ सिखाई है चुनान्चे ह़ज़रते उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللهُ عَنْهُ से रिवायत है कि रसूले पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने रात के वक़्त नींद से बेदार हो कर कहा : "لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسُبْحٰنَ اللهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ" (यानी अल्लाह पाक के सिवा कोई माबूद नहीं वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाही है और उसी

के लिये तमाम तारीफ़ें हैं और वोह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिये हैं, वोह पाक है, उस के सिवा कोई माबूद नहीं और वोह सब से बड़ा है, गुनाह से बचने की तौफ़ीक़ और नेकी की क़ुव्वत अल्लाह ही की त़रफ़ से है।) फिर वोह येह कहे : "اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ" यानी ऐ अल्लाह ! मुझे बख़्श दे, या कोई और दुआ मांगे तो उस की दुआ क़बूल की जाएगी फिर अगर वोह वुज़ू करे (और नमाज़ पढ़े) तो उस की नमाज़ भी क़बूल की जाएगी।(5)

ह़दीस में मज़कूर येह कलिमात "لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْكَ لَہٗ لَہُ الْمُلْكُ وَلَہُ الْحَمْدُ وَھُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ" अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام की दुआ चुनान्चे रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अ़र्फ़े के दिन येह सब से बेहतर दुआ है जो मैं ने और मुझ से पहले अम्बिया ने मांगी है।(6)

बेदार हो कर पढ़ी जाने वाली नमाज़

ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं : अल्लाह के रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सब से ज़ियादा वोह अ़मल पसन्द था जो हमेशा हो। आप से अ़र्ज़ की गई : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किस वक़्त क़ियाम फ़रमाते थे ? फ़रमाया : जब मुर्ग़ की आवाज़ सुनते।(7)

ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ने रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रात की नमाज़ के अह़वाल की ख़बर दी है कि आप रात के अव्वल हिस्से में आराम फ़रमाते और फिर रात के तीसरे हिस्से में कि जब मुर्ग़ा बांग देता उस वक़्त उठ कर तहज्जुद की नमाज़ अदा फ़रमाया करते थे कि उस वक़्त अल्लाह पाक की रह़मत नाज़िल होती है और येह वक़्त काफ़ी सुकून वाला होता है जिस में बन्दा शोर न होने के सबब सुकून से नमाज़ अदा कर सकता है। अपने रब की इ़बादत करने के बाद हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रात के आख़िरी और छटे हिस्से में यानी सेह़री के वक़्त फ़ज्र की नमाज़ पर चुस्ती ह़ासिल करने और जिस्म व जान को आराम पहुंचाने के लिये सो जाते या लेट जाते थे।(8)

रिवायात के मज़ामीन का ख़ुलासा बाज़ रिवायतों में येह आया है कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़े इ़शा के बाद कुछ देर सोते फिर कुछ देर तक उठ कर नमाज़ पढ़ते फिर सो जाते फिर उठ कर नमाज़ पढ़ते। ग़रज़ सुब्ह़ तक येह ह़ालत क़ाइम रहती। कभी दो तिहाई रात गुज़र जाने के बाद बेदार होते और सुब्ह़ सादिक़ तक नमाज़ों में मश्ग़ूल रहते। कभी निस्फ़ रात गुज़र जाने के बाद बिस्तर से उठ जाते और फिर सारी रात बिस्तर पर पीठ नहीं लगाते थे और लम्बी लम्बी सूरतें नमाज़ों में पढ़ा करते, कभी रुकूअ़ो सुजूद त़वील होता कभी क़ियाम त़वील होता। कभी छे रक्अ़त, कभी आठ रक्अ़त, कभी उस से कम कभी उस से ज़ियादा। आख़ीर उ़म्र शरीफ़ में कुछ रक्अ़तें खड़े हो कर, कुछ बैठ कर अदा फ़रमाते, नमाज़े वित्र नमाज़े तहज्जुद के साथ अदा फ़रमाते, नमाज़ों के साथ साथ कभी खड़े हो कर, कभी बैठ कर, कभी सर बसुजूद हो कर निहायत आहो ज़ारी और गिर्या व बुका के साथ गिड़गिड़ा गिड़गिड़ा कर रातों में दुआएं भी मांगा करते।(9)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने अन्दाज़े मुस्त़फ़ा को कितने ख़ूबसूरत नातिया अश्आ़र में बयान फ़रमाया है :

وَفِينَا رَسُولُ اللهِ يَتْلُو كِتَابَهٗ　　اِذَا انْشَقَّ مَعْرُوفٌ مِنَ الْفَجْرِ سَاطِعُ
اَرَانَا الْهُدٰى بَعْدَ الْعَمٰى فَقُلُوبُنَا　　بِهٖ مُوقِنَاتٌ أَنَّ مَا قَالَ وَاقِعُ
يَبِيتُ يُجَافِي جَنْبَهٗ عَنْ فِرَاشِهٖ　　اِذَا اسْتَثْقَلَتْ بِالْمُشْرِكِينَ الْمَضَاجِعُ

तर्जमा : (1) और हम में अल्लाह के रसूल हैं जो उस की किताब की तिलावत फ़रमाते हैं जब रौशनी फटती और सूरज त़ुलूअ़ होता है। (2) आप ने हमें भटकने के बाद (राहे) हिदायत दिखाई लिहाज़ा हमारे दिल उन पर ईमान रखते हैं कि आप ने जो कहा वोह हो कर रहा। (3) आप इस त़रह रात गुज़ारते हैं कि (नमाज़ में मसरूफ़ होने की वज्ह से) आप के पहलू बिस्तर से जुदा रहते हैं जब कि मुश्रिकीन पर येही बिस्तर बोझ बन जाते हैं (यानी शदीद नींद की वज्ह से वोह क़ियाम की त़ाक़त नहीं पाते।)(10)

(1)بخاری، 1/386، حدیث:1136 (2)عمدۃ القاری،2/693 (3)بخاری، 4/196، حدیث:6324 (4)فتاویٰ عالمگیری،5/376 (5)بخاری،1/391، حدیث: 1154 (6)ترمذی،5/338، حدیث: 3596 (7)بخاری، 1/385، حدیث:1132 (8)عمدۃ القاری،5/463-465،التوضیح لابن ملقن،9/60 (9)سیرت مصطفیٰ،ص595 (10)بخاری،1/391،حدیث:1155، ہدی الساری مقدمہ فتح الباری،1/92،عمدۃ القاری،5/510۔

मदनी मुज़ाकरे के सुवाल जवाब

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुहम्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मदनी मुज़ाकरों में अ़क़ाइद, इ़बादात और मुआ़मलात के मुतअ़ल्लिक़ किये जाने वाले सुवालात के जवाबात अ़त़ा फ़रमाते हैं, उन में से 8 सुवालात व जवाबात काफ़ी तरमीम के साथ यहां दर्ज किये जा रहे हैं।

1 प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जागती ह़ालत में अल्लाह पाक को देखा

सुवाल : क्या हमारे प्यारे नबी ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने शबे मेराज में अल्लाह पाक को देखा था ?

जवाब : बेशक प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जागती ह़ालत में मेराज की रात अल्लाह पाक को देखा है, येह प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ख़ास्सा (यानी ख़ुसूसिय्यत) है। (देखिये : बहारे शरीअ़त, 1 / 67, 68) आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इ़लावा किसी ने नहीं देखा और क़ियामत तक कोई भी नहीं देख सकेगा। हां ! जन्नत में जन्नतियों को अल्लाह पाक का दीदार होगा, (देखिये : बहारे शरीअ़त, 1 / 162) हम भी जन्नत में प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पीछे पीछे अल्लाह पाक का दीदार करेंगे। اِنْ شَآءَ اللّٰہ الْکَرِیْم !

(मदनी मुज़ाकरा, 27 रजब शरीफ़ 1444 हि.)

تَبَارَكَ الله शान तेरी तुझी को ज़ेबा है बे नियाज़ी
कहीं तो वोह जोशे لَنْ تَرَانِیْ कहीं तक़ाज़े विसाल के थे

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 234)

2 दज्जाल से ह़िफ़ाज़त का नुस्ख़ा

सुवाल : सुना है कि "जिस वक़्त दज्जाल आएगा उस वक़्त जिसे सूरए कहफ़ की आख़िरी आयत याद होगी वोही बच सकेगा।" इस में कहां तक ह़क़ीक़त है ?

जवाब : सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ में है : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दर्दा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो सूरए कहफ़ की पहली 10 आयतें याद करेगा, दज्जाल से मह़फ़ूज़ रहेगा। (مسلم، ص315، حدیث:1883) एक रिवायत में है : जो सूरए कहफ़ की आख़िरी 10 आयतें याद करेगा दज्जाल से मह़फ़ूज़ रहेगा। (مسلم، ص315، حدیث:1884, मदनी मुज़ाकरा, 24 मुहर्रमुल ह़राम 1442 हि.)

3 नमाज़ में आगे या पीछे से कपड़ा उठाना कैसा ?

सुवाल : बाज़ लोगों को देखा गया है कि वोह नमाज़ के दौरान रुकूअ़ या सज्दे से उठते हुए क़मीस को पीछे से हटाते और दुरुस्त करते हैं। इस बारे में शरई ह़ुक्म किया है ?

जवाब : बहारे शरीअ़त में नमाज़ के दौरान कपड़ा आगे या पीछे से उठाना मकरूहे तह़रीमी लिखा है। (देखिये : बहारे शरीअ़त, 1 / 624) अलबत्ता अगर कोई वज्ह हो जैसे बाज़ कपड़े ऐसे होते हैं जो चिपक जाते हैं तो ज़रूरतन कपड़ा छुड़ाने में ह़रज नहीं है। (मुख़्तसर फ़तावा अहले सुन्नत क़िस्त़ 1, स. 43) बाज़ लोग अत्तहिय्यात या दो सज्दों के दरमियान बैठते वक़्त भी क़मीस का एक कोना हाथ से ठीक करते हैं, ह़ालांकि इस की ज़रूरत नहीं होती। नमाज़ में ऐसी ग़ैर ज़रूरी ह़रकतें न की जाएं। अगर ऐसी ह़रकतों की आ़दत है तो येह एक बार सुनने से नहीं जाएगी, बल्कि इसे Serious (यानी सन्जीदगी से) लेना पड़ेगा और किसी इस्लामी भाई की ड्यूटी लगानी पड़ेगी कि "कभी नमाज़

में मेरी कोई ऐसी ह़रकत देखो तो मुझे बताना" । ऐसा करने से اِنْ شَآءَاللّٰہُ الْکَرِیْم आदत ख़त्म हो जाएगी।

(मदनी मुज़ाकरा, 24 मुहर्रमुल ह़राम 1442 हि.)

4 दौराने तिलावत इस्मे मुहम्मद पर दुरूद शरीफ़ पढ़ना और अंगूठे चूमना कैसा ?

सुवाल : तिलावत सुनने के दौरान अगर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नामे मुबारक आ जाए तो क्या दुरूदे पाक पढ़ना होगा ?

जवाब : क़ुरआनी आयत में जब इस्मे मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आए तो उस वक़्त अंगूठे भी न चूमे और दुरूदे पाक भी न पढ़े,[1] क्यूंकि जो क़ुरआने करीम सुनने के लिये ह़ाज़िर हुवा हो उस के लिये क़ुरआने करीम सुनना फ़र्ज़ है। (देखिये : फ़तावा रज़विय्या, 22 / 316,मदनी मुज़ाकरा, 2 सफ़रुलमुज़फ़्फ़र, 1442 हि.)

5 अमीर व ग़रीब को अलग अलग रेट बताना कैसा ?

सुवाल : क्या दुकानदार का अमीरो ग़रीब Customer (यानी गाहक) को चीज़ का अलग अलग रेट बताना सह़ीह़ है ?

जवाब : अलग अलग रेट बताने में ह़रज नहीं है। अलबत्ता धोका न दिया जाए (और झूट न बोला जाए)।

(मदनी मुज़ाकरा, 2 सफ़रुलमुज़फ़्फ़र, 1442 हि.)

6 औलाद मर्द के नसीब से और रिज़्क़ औरत के नसीब से ! !

सुवाल : क्या येह बात सच है कि "औलाद मर्द के नसीब से होती है और रिज़्क़ औ़रत के नसीब से मिलता है ?"

जवाब : अल्लाह पाक बेहतर जानता है। हर शख़्स का अपना अपना नसीब होता है। अल्लाह पाक ने जिसे पैदा फ़रमाया है उसे रिज़्क़ देना अपने ज़िम्मए करम पर लिया है। अगर हम नसीबों की तक़्सीम करेंगे तो बेऔलाद शख़्स का क्या होगा ! यूं ही जो कुंवारा है या जिस की बीवी मर गई है उस बेचारे के रिज़्क़ का क्या बनेगा ! इस त़रह़ तो मुआ़मला लटक जाएगा, इस लिये याद रखिये कि हर शख़्स को अपने नसीब का मिलता है। अल्लाह पाक ही च्यूंटि को **"कन"** (यानी ज़र्रा) और हाथी को **"मन"** अ़त़ा फ़रमाता है।

(मदनी मुज़ाकरा, 2 सफ़रुलमुज़फ़्फ़र, 1442 हि.)

7 शादी कार्ड पर अल्लाह रसूल का नाम

सुवाल : अक्सर लोग शादी कार्ड पर अल्लाह पाक और मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नाम लिखते हैं, लेकिन जिन के घरों में कार्ड जाता है वोह उस का अदब नहीं करते, इस बारे में राहनुमाई फ़रमा दीजिये।

जवाब : मुख़्तलिफ़ किताबों, अख़्बारों और ख़ुत़ूत़ Letters वग़ैरा में उ़मूमन अल्लाह पाक और रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नाम लिखा होता है। हर मुसलमान जानता है कि उन मुबारक नामों का अदब किस त़रह़ करना चाहिये । अगर कोई शादी कार्ड पर अल्लाह पाक और रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नामे मुबारक लिखता है और जिन के घर वोह कार्ड जाता है वोह उस का अदब नहीं करते तो उस में लिखने वाला गुनहगार नहीं है।

(देखिये: मदनी मुज़ाकरा, 30 सफ़रुलमुज़फ़्फ़र, 1442 हि.)

8 शैत़ान के मरने की दुआ़ करना कैसा ?

सुवाल : क्या शैत़ान के मरने की दुआ़ कर सकते हैं ?

जवाब : शैत़ान को मौत तो आएगी लेकिन हमारी दुआ़ और बद्दुआ़ से उस का मरना मुम्किन नहीं है। क़ुरआने पाक में है : ﴿قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْنِیْۤ اِلٰى یَوْمِ یُبْعَثُوْنَ(۳۶)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बोला ऐ मेरे रब तू मुझे मोहलत दे उस दिन तक कि वोह उठाए जाएं। (پ14، الحجر:36) उसे क़ियामत तक के लिये मोहलत है। जिस वक़्त सूर फूंका जाएगा येह लईन उस वक़्त मरेगा। आ़म जिन्नात को भी शैत़ान कहा जाता है और वोह मरते रहते हैं।

(मदनी मुज़ाकरा, यकुम ज़िलहिज्जतुलहराम, 1441 हि.)

---

(1) मज़ीद तफ़्सील के लिये दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत (दावते इस्लामी) का फ़तवा **"क़ुरआने मजीद की तिलावत के वक़्त नामे मुहम्मद पर अंगूठे चूमना और दुरूद शरीफ पढ़ना"** पढ़िये।

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत (दावते इस्लामी) मुसलमानों की शरई राहनुमाई में मसरूफ़े अ़मल है, तह़रीरी, ज़बानी, फ़ोन और दीगर ज़राएअ़ से हज़ारहा मुसलमान शरई मसाइल दरयाफ़्त करते हैं, जिन में से पांच मुन्तख़ब फ़तावा ज़ैल में दर्ज किये जा रहे हैं।

1 बह़ालते रोज़ा नाक में दवा डालने का हुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि मैं ने ग़लती से रोज़े की ह़ालत में नाक में दवाई डाल ली यानी मुझे येह मालूम था कि मैं रोज़े से हूं लेकिन येह मालूम नहीं था कि उस से रोज़ा टूट जाता है, इस सूरत में मेरे लिये क्या हुक्म होगा ?

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡجَوَابُ بِعَوۡنِ الۡمَلِکِ الۡوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَایَۃَ الۡحَقِّ وَالصَّوَابِ

पूछी गई सूरत में जब रोज़ा होना याद था, इस के बावुजूद नाक में दवा डाली अगर्चे ग़लती से डाली हो, तो उस सूरत में रोज़ा टूट गया, उस रोज़े की क़ज़ा लाज़िम होगी अलबत्ता पूछी गई सूरत में कफ़्फ़ारा लाज़िम नहीं आएगा। लिहाज़ा रमज़ान का महीना गुज़रने के बाद उस रोज़े की क़ज़ा करना आप के ज़िम्मे पर लाज़िम होगा।

(بدائع الصنائع، 2/204ملتقطاً- تنویر الابصار و در مختار، 3/432تا439- فتح باب العنایہ، 1/570
बहारे शरीअ़त १/९८७)

وَاللّٰہُ اَعۡلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوۡلُہٗ اَعۡلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 रोज़ा और ग़ुस्ले जनाबत में ताख़ीर का हुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि अगर किसी ने ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने की ह़ालत में रोज़ा रखा और अ़स्र के बाद ग़ुस्ल किया, तो क्या उस का वोह रोज़ा अदा हो गया ?

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡجَوَابُ بِعَوۡنِ الۡمَلِکِ الۡوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَایَۃَ الۡحَقِّ وَالصَّوَابِ

हुक्मे शरअ़ ज़ेहन नशीन रहे कि जिस शख़्स पर ग़ुस्ल लाज़िम हो उसे चाहिये कि नहाने में ताख़ीर न करे और अगर ग़ुस्ल करने में इतनी देर कर दी कि नमाज़ का आख़िरी वक़्त आ गया, तो अब फ़ौरन नहाना फ़र्ज़ है कि अब ताख़ीर की सूरत में गुनहगार होगा, लिहाज़ा पूछी गई सूरत में अगर उस शख़्स ने बिला वज्ह शरई ग़ुस्ल में इतनी ताख़ीर की, कि مَعَاذَاللہ नमाज़ें क़ज़ा हुईं तो इस सूरत में वोह शख़्स सख़्त गुनहगार हुवा, इस गुनाह से तौबा करना और नमाज़ों की क़ज़ा करना उस के ज़िम्मे पर लाज़िम है। अलबत्ता उस शख़्स के रोज़े का आग़ाज़ अगर्चे ह़ालते नापाकी में हुवा, लेकिन इस से रोज़े पर फ़र्क़ नहीं पड़ता। (البحر الرائق شرح کنز الدقائق، 2/293- الجوہرۃ النیرۃ، 1/139-
बहारे शरीअ़त 1/325,326)

وَاللّٰہُ اَعۡلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوۡلُہٗ اَعۡلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 मुस्तह़िक़े ज़कात को बतौरे क़र्ज़ ज़कात देने का हुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि ज़ैद ने मुस्तह़िक़े ज़कात शख़्स बक्र को क़र्ज़ कह कर ज़कात की रक़म दी जब कि देते वक़्त उस के दिल में निय्यत ज़कात की अदाएगी की थी तो क्या ज़ैद की ज़कात अदा हो गई ? नीज़ अगर कुछ अ़र्सा बाद बक्र क़र्ज़ की वापसी के इरादे से ज़ैद की दी हुई रक़म ज़ैद को लौटाना चाहे और ज़ैद को उस वक़्त पैसों की ह़ाजत भी हो तो क्या ज़ैद का उस रक़म को लेना जाइज़ है ? क्यूंकि बक्र ने तो रक़म क़र्ज़ समझ कर ही ली थी।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡجَوَابُ بِعَوۡنِ الۡمَلِکِ الۡوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَایَۃَ الۡحَقِّ وَالصَّوَابِ

पूछी गई सूरत में ज़ैद की ज़कात अदा हो गई, लेकिन ज़ैद का वोही रक़म बाद में बक्र से वापस वुसूल कर लेना शरअ़न जाइज़ नहीं।

इस मस्‌अले की तफ़्सील कुछ येह है कि ज़कात देते वक़्त या ज़कात के लिये रक़म अ़लाहृदा करते वक़्त अगर दिल में ज़कात की निय्यत मौजूद हो तो मुस्तहि़क़्क़े ज़कात शख़्स को येह बताना ज़रूरी नहीं कि येह ज़कात की रक़म है बल्कि इस सूरत में क़र्ज़ कह कर भी ज़कात दी जाए तो ज़कात अदा हो जाएगी कि शरअ़न देने वाले की निय्यत का एतिबार होता है, अब लेने वाला किस निय्यत से ले रहा है शरअ़न इस का एतिबार नहीं। हां इतना ज़रूर है कि शरई फ़क़ीर क़र्ज़ समझ कर बाद में वोह रक़म लौटाने आए तो अब ज़कात मे दी गई रक़म का वापस लेना जाइज़ नहीं होगा कि ज़कात से मुराद महज़ अल्लाह पाक की रिज़ा के लिये शरीअ़त की जानिब से मुक़र्रर कर्दा माल को अपना हर क़िस्म का नफ़ा ख़त्म कर के मुस्तहि़क़्क़े ज़कात को उस माल का मालिक बना देना है, वाज़ेह हुवा कि सूरते मस्‌ऊला में ज़ैद का बक्र से वोही रक़म वापस वुसूल कर लेना शरअ़न जाइज़ नहीं। (مجمع الانہر، 1/290-الفتاوی الھندیہ، 1/171, फ़तावा रज़विय्या, 10/67)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

4 मिक़्दारे निसाब से कम सोने पर ज़कात का हुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्‌अले के बारे में कि फ़ी ज़माना सोने की क़ीमत बहुत ज़ियादा बढ़ चुकी है। एक तोला सोने की क़ीमत भी साढ़े बावन तोला चांदी की क़ीमत से तजावुज़ कर चुकी है। सुवाल येह है कि अगर ज़ैद के पास साढ़े सात तोले से कम सिर्फ़ सोना ही हो, किसी क़िस्म का दूसरा माले ज़कात यानी चांदी, नक़्द रक़म, प्राइज़ बॉन्ड्ज़ और माले तिजारत न हो, और उस सोने की क़ीमत इतनी बढ़ जाए कि उस से साढ़े बावन तोला चांदी या उस से ज़ियादा बआसानी ख़रीदी जा सकती हो, तो क्या अब ज़ैद पर ज़कात लाज़िम होगी ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِکِ الْوَھَّابِ اَللّٰھُمَّ ھِدَایَۃَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

पूछी गई सूरत में ज़ैद पर ज़कात लाज़िम नहीं होगी। इस की वज्ह येह है कि अगर किसी के पास सोना हो, लेकिन उस के साथ कोई और माले ज़कात यानी चांदी, नक़्द रक़म, प्राइज़ बॉन्ड्ज़ और माले तिजारत न हो, तो अब सोने का निसाब उस के वज़्न (साढ़े सात तोले) के हि़साब से ही शुमार किया जाता है, क़ीमत के एतिबार से इस का निसाब नहीं लिया जाता। अगर सोना साढ़े सात तोले होगा, तो ही ज़कात लाज़िम होगी। साढ़े सात तोले से कम पर ज़कात लाज़िम नहीं होगी। (بدائع الصنائع، 2/107-الدر المختار مع رد المحتار، 3/278)

(बहारे शरीअ़त, 1/902, वक़ारुल फ़तावा, 2/384)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

5 क्या वाजिबुल अदा मेहर निसाबे ज़कात में शुमार होगा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्‌अले के बारे में कि मेरे पास इतनी रक़म है कि मैं साहि़बे निसाब हो जाता हूं लेकिन मैं ने अपनी ज़ौजा का पचास हज़ार रुपिये ह़क़्क़ मेहर ग़ैर मुअ़ज्जल देना है और अगर उस रक़म को निसाब से तफ़रीक़ किया जाए तो मैं साहि़बे निसाब नहीं रहता। इस सूरत में मुझ पर ज़कात लाज़िम होगी या नहीं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِکِ الْوَھَّابِ اَللّٰھُمَّ ھِدَایَۃَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

पूछी गई सूरत में निसाब से ह़क़्क़े मेहर को मिन्हा नहीं किया जाएगा। लिहाज़ा आप इस पचास हज़ार को भी निसाब में शामिल करेंगे। शामिल करने की सूरत में चूंकि आप साहि़बे निसाब बन जाते हैं, इस लिये आप पर ज़कात लाज़िम है। (البحر الرائق، 2/357-فتاوی ہندیہ، 1/173-)

(फ़तावा रज़विय्या, 10 / 143 – बहारे शरीअ़त, 1 / 879)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(क़िस्त : 01)

इस्लामी मुआ़शरा ही मिसाली मुआ़शरा है

अल्लाह करीम ने इन्सानों को पैदा फ़रमाया, इस दुनिया में बसाया, अम्बिया व मुर्सलीन को भेज कर उन के ज़रीए़ इन्सानों को ईमान बख़्शा, ज़िन्दगी गुज़ारने को क़ुरआने पाक की सूरत में लाज़वाल व बेमिसाल दस्तूरे ह़यात से नवाज़ा। इ़बादतो रियाज़त का मुकम्मल निज़ाम अ़ता फ़रमाया। इस्लामी तालीमात को अल्लाह करीम ने वोह हुस्न बख़्शा है कि जो फ़र्द या मुआ़शरा उन्हें अपना लेता है वोह फ़र्द कामिल और वोह मुआ़शरा ज़र्बुल मिस्ल बन जाता है। ख़ूब याद रहे कि इस्लामी तालीमात मह़ज़ रुकूओ़ सुजूद पर ही मुन्ह़सिर नहीं हैं बल्कि सितारों से आगे जहां और भी हैं के मिस्दाक़ अगर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक तालीमात और अल्लाह पाक के अह़कामात को देखा जाए तो ऐसा लगता है कि अल्लाह व रसूल की चाहत येह है कि इन्सान दुनिया में रहते हुए अपने आप को रुकूओ़ सुजूद, सौमो सलात, ह़ज और ज़कात का पाबन्द भी बनाए और साथ साथ उन नेकियों को भी अपनी ज़िन्दगी का अटूट अंग (जुदा न हो सकने वाला ह़िस्सा, जुज़्व लाज़िम) बनाए कि जो मुआ़शरे में अम्न, सलामती, अख़ुव्वत, भाई चारा, रह़म दिली, ख़ैर ख़्वाही, ख़िदमते ख़ल्क़, एह़सास, रवादारी, बरदाश्त, इ़ल्म, ह़िल्म, तह़म्मुल, सफ़ाई सुथराई, ह़ुक़ूक़ की पासदारी, मिस्कीन व यतीम की मदद, बीमार की देख भाल और मोह़ताज की इम्दाद जैसे आला औसाफ़ को न सिर्फ़ क़ाइम करे बल्कि उन में तरक़्क़ी व फ़रोग़ का ज़रीआ़ व सबब भी बने।

इस्लामी तालीमात की बरकतें याद रखिये ! इस्लाम मुआ़शरे को मुश्किल और घुटन वाला नहीं बनाता बल्कि उस की आला तालीमात को अगर किसी एक घर में नाफ़िज़ कर दिया जाए तो वोह घर काइनात का क़ाबिले रश्क घर बन जाए अगर किसी एक मह़ल्ले, गली या टाउन, शहर अल ग़रज़ किसी पूरे के पूरे मुल्क में इस्लाम को अ़मली त़ौर पर राइज किया जाए तो वोह गली मह़ल्ला टाउन और मुल्क व शहर तमाम दुनिया के लोगों के लिये क़ाबिले रश्क और क़ाबिले तक़्लीद बन जाएगा। येह मह़ज़ दावा ही नहीं है बल्कि आइये आप को इस बेमिसाल मुआ़शरे की एक हल्की सी झलक दिखा देते हैं अल्लाह करीम इरशाद फ़रमाता है : ﴿لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَ الْمَغْرِبِ وَ لٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ الْیَوْمِ الْاٰخِرِ وَ الْمَلٰٓىٕكَةِ وَ الْكِتٰبِ وَ النَّبِیّٖنَ ۚ وَ اٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِی الْقُرْبٰى وَ الْیَتٰمٰى وَ الْمَسٰكِیْنَ وَ ابْنَ السَّبِیْلِ ۙ وَ السَّآىٕلِیْنَ وَ فِی الرِّقَابِ ۚ وَ اَقَامَ الصَّلٰوةَ وَ اٰتَى الزَّكٰوةَ ۚ وَ الْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا ۚ وَ الصّٰبِرِیْنَ فِی الْبَاْسَآءِ وَ الضَّرَّآءِ وَ حِیْنَ الْبَاْسِ ؕ اُولٰٓىٕكَ الَّذِیْنَ صَدَقُوْا ؕ

وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ(۱۷۷) तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : अस्ल नेकी येह नहीं कि तुम अपने मुंह मशरिक़ या मग़रिब की त़रफ़ कर लो बल्कि अस्ली नेक वोह है जो अल्लाह और क़ियामत और फ़रिश्तों और किताब और पैग़म्बरों पर ईमान लाए और अल्लाह की मह़ब्बत में अ़ज़ीज़ माल रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों और मुसाफ़िरों और साइलों को और (ग़ुलाम लौंडियों की) गर्दनें आज़ाद कराने में ख़र्च करे और नमाज़ क़ाइम रखे और ज़कात दे और वोह लोग जो अ़हद कर के अपना अ़हद पूरा करने वाले हैं और मुसीबत और सख़्ती में और जिहाद के वक़्त सब्र करने वाले हैं येही लोग सच्चे हैं और येही परहेज़गार हैं।[1] इस एक आयत में ईमान के बाद छे जगह माल ख़र्च करने की तरग़ीब दिलाई गई है : 1 रिश्तेदारों पर ख़र्च करना 2 यतीमों पर ख़र्च करना। 3 मिस्कीनों पर ख़र्च करना। 4 मुसाफ़िरों पर ख़र्च करना। 5 साइलों को देना। 6 गर्दनें छुड़ाने में ख़र्च करना। मुसलमानों के जिस ख़ित़्ते में अ़मली त़ौर पर उस आयत का निफ़ाज़ हो जाए ग़ौर कीजिये वोह मुआ़शरा अम्नो सलामती और भाई चारे का कैसा शानदार अ़मली नुमूना बन जाएगा।

इस्लाम तेरे क़ुरबान इस जैसी कई आयाते करीमा और बेशुमार अह़ादीस पर ग़ौर किया जाए तो एक बात बहुत वाज़ेह़ हो कर सामने आती है कि बाज़ आमाल ऐसे हैं कि जिन में बज़ाहिर न तो रुकूअ़ व सुजूद है और न ही तस्बीह़ व तहलील और न ही कोई ऐसा अ़मल है कि जिसे इबादते इलाही क़रार दिया जा सके लेकिन उस काम में अल्लाह पाक की रिज़ा भी है और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुशनूदी भी। आख़िर क्यूं?

येह नेकी इस लिये है कि दर अस्ल कई आमाल ऐसे हैं कि जो मुआ़शरे को सुधारने, इस में अम्नो सलामती लाने और ख़ैर ख़्वाही व हमदर्दी पैदा करने में मुआ़विन व मददगार हैं। जिन के करने से अल्लाह पाक की मख़्लूक़ का भला होता है, मख़्लूक़े ख़ुदा को राह़त पहुंचती है, उन्हें आराम मिलता है, उन की दादरसी होती है यूं मुआ़शरे में सुकून क़ाइम होता है और लोगों को क़ल्बी क़रार नसीब होता है और जिन कामों में इस त़रह़ के औसाफ़ पाए जाएं वोह अल्लाह करीम को प्यारे लगते हैं इस लिये कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اَلْخَلْقُ عِيَالُ اللهِ، فَاَحَبُّ النَّاسِ اِلَى اللهِ مَنْ اَحْسَنَ اِلٰى عِيَالِه यानी मख़्लूक़ अल्लाह करीम की अ़याल है, तो लोगों में अल्लाह करीम को सब से प्यारा वोह आदमी है जो उस के अ़याल के साथ अच्छा बरताव करे।[2] चूंकि अल्लाह करीम सब का राज़िक़ है, मख़्लूक़ उस की मरज़ूक़ है, लिहाज़ा उस की अ़याल है यानी परवरदा। तुम उस आदमी से बहुत ख़ुश होते हो जो तुम्हारे ग़ुलामों, लौंडियों, बाल बच्चों से अच्छा सुलूक करे क्यूंकि वोह तुम्हारे परवरदा हैं ऐसे ही जो कोई अल्लाह पाक की मख़्लूक़ से भलाई करे अल्लाह करीम उस से ख़ुश होता है।[3]

वोह सब से बेहतरीन है हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : خَيْرُ النَّاسِ اَنْفَعُهُمْ لِلنَّاسِ यानी लोगों में सब से बेहतर वोह है जो दूसरों को सब से ज़ियादा फ़ाइदा पहुंचाए।[4] येह ह़दीसे पाक आ़म है चाहे मुसलमान किसी को दीनी फ़ाइदा पहुंचाए जैसे किसी को कलिमा पढ़ा कर दामने इस्लाम से वाबस्ता करना, किसी को शरई मसाइल सिखा देना, किसी को क़ुरआने करीम पढ़ना सिखा देना, किसी पर इन्फ़िरादी कोशिश कर के उसे गुनाहों से तौबा करवा देना वग़ैरा या दुन्यवी फ़ाइदा पहुंचाए इस में भी ऐसी वुस्अ़त है कि किसी एक फ़र्द को फ़ाइदा पहुंचाए जैसे रास्ता भूलने वाले को रास्ता बता दिया, सड़क पर पड़े किसी ज़ख़्मी को अस्पताल पहुंचा दिया, मज़्लूम की मदद कर दी, किसी बूढ़े आदमी को सहारा दे कर उस की मन्ज़िल तक पहुंचा दिया, नाबीना को सड़क पार करवा दी, ज़रूरतमन्द की ह़ाजत पूरी कर दी, अपना हुनर दूसरे को सिखा कर फ़ाइदा पहुंचाया, जाइज़ काम में किसी की सिफ़ारिश कर दी, परेशान मुसलमान की परेशानी दूर कर दी या इज्तिमाई़ त़ौर पर मुआ़शरे को फ़ाइदा पहुंचाए जैसे गांव गोठ या शहर में पानी का इन्तिज़ाम कर देना, पानी की सबील लगाना, रात के वक़्त गली में बल्ब रौशन रखना ताकि राह चलने वालों को सहूलत रहे, ग़रीबों के लिये खाने

का इन्तिज़ाम करना, रास्ते से तक्लीफ़ देने वाली चीज़ें कील, पत्थर, हड्डी वग़ैरा को हटा देना वोह काम हैं जिन से कई मुसलमानों को फ़ाइदा पहुंचता है। मुआशरे को मिसाली मुआशरा बनाने वाले चन्द आमाल और उन का अज्रो सवाब मुलाहज़ा फ़रमाइये और उन्हें अपनाने का अज़्मे मुसम्मम फ़रमा कर दूसरों को तरग़ीब दीजिये :

1 रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ दूर करना हदीस शरीफ़ में है एक आदमी जिस ने कभी कोई नेक अ़मल नहीं किया था, रास्ते से कांटेदार शाख़ को हटा दिया अल्लाह पाक को उस का येह अ़मल पसन्द आया और उस की मग़्फ़िरत फ़रमा दी।[5] अल्लाहु अकबर ! ज़रा से अ़मल पर इतना बड़ा फ़ज़्ल ! किस लिये ? इस लिये कि उस काम से मुआशरा सुधरता है, मख़्लूक़े ख़ुदा को आराम व चैन मिलता है, इस लिये इस अ़मल के करने वाले को बख़्श दिया गया।

2 क़र्ज़ देना रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हर क़र्ज़ सदक़ा है।[6] बल्कि एक रिवायत में तो क़र्ज़ देने का सवाब सदक़े करने से भी ज़ियादा बताया गया है जैसा कि ह़दीसे पाक में है : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं ने शबे मेराज जन्नत के दरवाज़े पर लिखा हुवा देखा कि सदक़े का सवाब दस गुना और क़र्ज़ देने का सवाब अठ्ठारह गुना है। मैं ने जिब्राईल से इस बारे में पूछा कि सदक़े से क़र्ज़ के अफ़्ज़ल होने की क्या वज्ह है ? तो उन्हों ने बताया कि (सदक़ा तो) वोह भी मांग लेता है जो मोह़ताज न हो मगर क़र्ज़ मांगने वाला ह़ाजत व ज़रूरत के बग़ैर क़र्ज़ नहीं मांगता।[7]

3 इक़ाला करने का सवाब एक आदमी ने किसी से कुछ ख़रीदा अब उसे एह़सास हुवा कि मुझे इस की ज़रूरत नहीं या किसी और वज्ह से वोह चाहता है कि मैं माल वापस कर दूं और मेरी रक़म मुझे मिल जाए, जिस से माल ख़रीदा है वोह उस की बात मान कर बैअ़ ख़त्म कर देता है, रक़म लौटा देता है उस पर प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कैसी प्यारी बिशारत अ़ता फ़रमाई ह़दीसे पाक मे है : जिस ने अपने भाई के साथ इक़ाला किया (यानी उस ने जो चीज़ ख़रीदी थी वापस करने पर उस से ले ली) तो अल्लाह पाक क़ियामत के दिन उस की परेशानी दूर फ़रमाएगा।[8] एक और रिवायत में है : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने किसी मुसलमान से इक़ाला किया क़ियामत के दिन अल्लाह करीम उस की लग़्ज़िश मुआफ़ फ़रमा देगा।[9]

मुआशरे की फ़लाह़ व बहबूद और कामयाबी व कामरानी से मुतअ़ल्लिक़ तालीमाते इस्लाम के बे किनार समुन्दर से येह चन्द मोती हैं जिन से बख़ूबी ज़ाहिर होता है कि इस्लाम का पैग़ाम सरापा रह़मत, ख़ैर और इन्सानिय्यत नवाज़ी का पैग़ाम है। येह दीन अल्लाह करीम की बन्दगी के साथ साथ बन्दों की ख़िदमत को भी इ़बादत का दर्जा अ़ता करता है। मुसलमान का हर क़ौल व फ़ेल उस वक़्त ह़क़ीक़ी माना में क़ाबिले क़बूल बनता है जब उस के दिल में ख़ालिक़ की मह़ब्बत और मख़्लूक़ की ख़ैरख़्वाही जमा हो जाती है। आज उम्मते मुस्लिमा को जिन फ़िक्री और अ़मली बोह़रानों का सामना है, उन का ह़क़ीक़ी इ़लाज येही है कि हम फिर से दीन की त़रफ़ लौट आएं और क़ुरआनो सुन्नत के निज़ामे ह़यात को अपना लें। इ़बादत के साथ ख़िदमत, ज़िक्र के साथ फ़िक्र, और ईमान के साथ अ़मले सालेह़ को लाज़िम पकड़ें। जब ईमानदार बन्दे अपने किरदार से अम्न, मह़ब्बत, अ़द्ल और अख़ुव्वत के अ़लमबरदार बनेंगे तो यक़ीनन ज़मीन पर वोही सुकून व रह़मत की फ़ज़ा क़ाइम होगी जो मदीनए त़य्यिबा के अव्वलीन मुआशरे में देखी गई। आइये ! हम अ़ह्द करें कि अपनी ज़िन्दगियों को अल्लाह व रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तालीमात का आईना बनाएं, अपने क़ौलो अ़मल से मख़्लूक़े ख़ुदा के लिये आसानी पैदा करें और इस्लाम की ख़ूबसूरत तालीमात को अपने किरदार से दुनिया के सामने ज़िन्दा मिसाल बना दें। अल्लाह करीम हमें सच्चाई, नर्मी, ख़ैरख़्वाही और ख़िदमते ख़ल्क़ की दौलत से मालामाल फ़रमाए।

---

(1)پ2، البقرۃ:177(2)معجم اوسط،4/153، حدیث:5541(3)مرآۃ المناجیح، 6/582(4)مسند الشہاب، 2/223، حدیث:1234(5)دیکھیے: ابوداؤد، 4/462، حدیث:5245(6)معجم اوسط، 2/345، حدیث:3498(7)ابن ماجہ، 3/154، حدیث:2431(8)مجمع الزوائد، 4/199، حدیث:6538(9)ابن ماجہ، 3/36، حدیث:2199۔

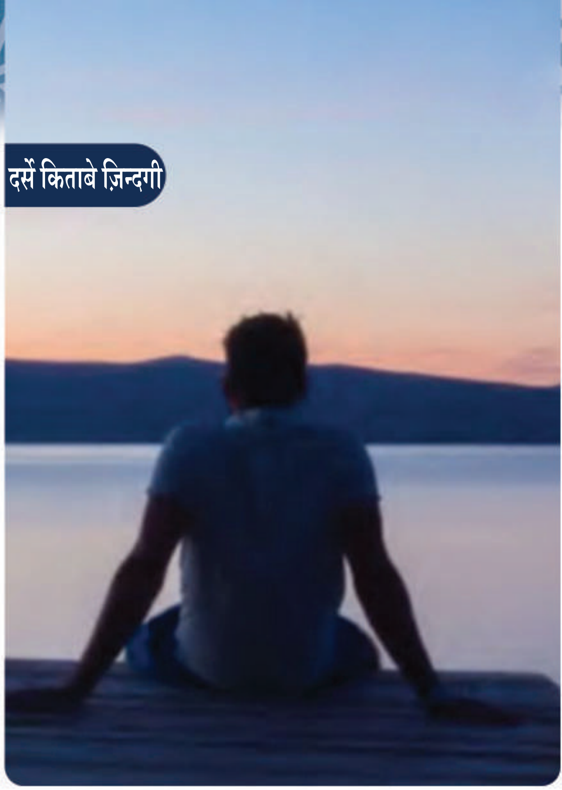

हालात और ख़यालात
(Situations and thoughts)

एक मज़बूत जसामत का दराज़ क़द शख़्स कहीं जा रहा था। ऐसे में किसी ने पीछे से उस के टख़्नों पर लाठी मारी। उस की हालत बुरी हो गई वोह येह ख़याल कर के आग बगूला हो गया कि येह जुरअत किस अहमक़ ने की है, वोह घूंसा ताने पीछे की तरफ़ मुड़ा लेकिन येह देख कर उस का गुस्सा झाग की तरह बैठ गया कि उस के पीछे एक अन्धा शख़्स था जो अपनी लाठी की मदद से रास्ता टटोल कर चल रहा था इसी दौरान उस की लाठी पहलवान नुमा शख़्स के टख़्नों से जा लगी थी।

आप ने देखा कि किस तरह लाठी लगने ने लम्बे चौड़े शख़्स की हालत तब्दील कर दी जिस से उस के ख़यालात मुश्तइल हुए लेकिन जब उस ने लाठी मारने वाले को अन्धा पाया तो उस के ख़यालात तब्दील हो गए जिस से उस की जिस्मानी व ज़ेहनी हालत भी तब्दील हो गई। यक़ीनन हालात और ख़यालात दोनों एक दूसरे पर असर अन्दाज़ होते हैं। हालात बदलने के साथ ख़यालात बदल जाते हैं और ख़यालात बदल लिये जाएं तो हालात बदल जाते हैं क्यूंकि ख़याल ही अमल को जन्म देता है हम जो सोचते हैं, वोही करते हैं। जैसे किसी की मुलाज़मत या कारोबार ख़त्म हो जाए और आमदनी का मुतबादिल ज़रीआ न बन सके तो वोह परेशान ख़याली का शिकार हो जाता है कि घर का किराया, गैस बिजली के बिल, बच्चों की फ़ीस कैसे अदा होगी ? घर का राशन कहां से आएगा ? येह ख़यालात उस की ज़ेहनी व जिस्मानी हालत को कमज़ोर कर देते हैं, वोह ख़ुद को नाकाम शख़्स समझने लगता है। अगर येही शख़्स अपने ख़यालात तब्दील कर ले कि एक दर बन्द होता है तो 100 दर खुल जाते हैं, मेहनत, कोशिश और लगन से अपने हालात बदल सकता हूं और दुआ को अपना हथियार बनाए, निय्यत पुर ख़ुलूस रखे, अल्लाह पर तवक्कुल रखे, उसी से कामयाबी की उम्मीद रखे, मर्ज़ी का काम या मुआवज़ा नहीं मिलता तो फ़िलहाल जो काम और मुआवज़ा मिले इसी को क़बूल कर ले और मज़ीद की कोशिश जारी रखे तो اِنْ شَآءَ الله उस के हालात बदलना शुरूअ हो जाएंगे।

क़ारेईन ! जो लोग अपने हालात तब्दील करने में कामयाब हुए पहले उन्हों ने अपने ख़यालात बदले फिर अमली क़दम उठाए। बहुत से लोग पहले ग़ुर्बत की चक्की में पिस रहे थे लेकिन आज ख़ुशहाल हैं। अगर आप भी अपने हालात बदलना चाहते हैं तो अपने ख़यालात बदल कर देखिये। हालात मुख़्तलिफ़ क़िस्म के होते हैं, चुनान्चे सब से पहले येह देख लीजिये कि आप अपने किस नौइय्यत के हालात को बदलना चाहते हैं, दुन्यवी या उख़रवी ? येह दुनिया आरज़ी ख़त्म हो जाने वाली और आख़िरत पाएदार और कभी ख़त्म न होने वाली है, इस लिये हमें उख़रवी ज़िन्दगी की बेहतरी को तरजीह देनी चाहिये। बहुत से नौजवान अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी वाले कामों में मसरूफ़ थे आज लोग उन के नेक होने की गवाही देते हैं उन से दुआ करवाते हैं। ऐसी सोच रखने वालों को रहमते इलाही अपनी आग़ोश में ले लेती है। चुनान्चे बनी इसराईल का एक शख़्स जिस ने 99 क़त्ल किये थे एक राहिब के पास पहुंचा और पूछा : क्या मेरे जैसे मुजरिम के लिये कोई तौबा की गुन्जाइश है ? राहिब ने उसे मायूस कर दिया तो उस ने राहिब को भी क़त्ल कर डाला। मगर फिर नादिम हो कर तौबा का तरीक़ा लोगों से पूछता फिरा। आख़िर किसी ने कहा कि फ़ुलां क़स्बे में चले जाओ (वहां

अल्लाह का एक वली है वोह तुम्हारी रहनुमाई करेगा।) चुनान्चे वोह उस की त़रफ चल दिया मगर रास्ते में बीमार हो गया। जब क़रीबुल मर्ग हुवा तो उस ने अपना सीना उस क़स्बे की त़रफ कर दिया और फ़ौत हो गया। अब उस को ले जाने के बारे में रह़मत व अ़ज़ाब के फ़िरिश्तों में इख़्तिलाफ़ हुवा। अल्लाह पाक ने मय्यित और क़स्बे के दरमियान वाले ह़िस्सए ज़मीन को सिमट कर मय्यित के क़रीब हो जाने का हुक्म फ़रमाया और जिधर से वोह चला था और जहां पहुंच कर फ़ौत हुवा था उस दरमियानी फ़ासिले को मज़ीद त़वील हो जाने का हुक्म फ़रमाया। फिर पैमाइश का हुक्म फ़रमाया तो वोह जिस क़स्बे की त़रफ़ जा रहा था उस से एक बालिश्त क़रीब पाया गया और अल्लाह करीम ने उस की मग़्फ़िरत फ़रमा दी।

(بخاری،2/466،حدیث:3470)

ख़यालात बदलने के त़रीक़े

1 अच्छी सोह़बत इख़्तियार कीजिये, रह़मते आ़लमियान صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अच्छे और बुरे मसाहिब की मिसाल, मुश्क उठाने वाले और भट्टी झोंकने वाले की त़रह है, कस्तूरी उठाने वाला तुम्हें तोह़फ़ा देगा या तुम उस से ख़रीदोगे या तुम्हें उस से उ़म्दा ख़ुश्बू आएगी, जब कि भट्टी झोंकने वाला या तुम्हारे कपड़े जलाएगा या तुम्हें उस से नागवार बू आएगी।

(مسلم،ص1084،حدیث:6692)

2 अच्छी किताबों का मुत़ालआ़ कीजिये क्यूंकि येह बेहतरीन रफ़ीक़ हैं जो जहालत के अन्धेरे मिटा कर इ़ल्म की रौशनी फैलाती हैं।

3 मुस्बत नताइज के लिये ग़ौरो फ़िक्र कीजिये। ग़ैर ज़रूरी सोचों से पीछा छुड़ाइये क्यूंकि हमारा ज़ेहन ज़मीन की त़रह होता है। अगर हम ने उस में अनाज या फल न उगाए तो उस में बेकार झाड़ियां और घास फूंस उगने लगेगा।

4 अपने ख़यालात को मुस्बत रखिये। मुस्बत ख़यालात पुरसुकून और कामयाब ज़िन्दगी का बाइ़स बनते हैं। जब कि मन्फ़ी ख़यालात मायूसी और सुस्ती पैदा करते हैं, वस्वसों का शिकार करते हैं बाज़ औक़ात ख़ुदकुशी तक ले जाते हैं। मन्फ़ी ख़यालात भी ह़ालात बदल तो देते हैं लेकिन अन्जाम बहुत बुरा होता है मसलन ग़ुर्बत से निकलने के लिये डकैती करना, ज़मीनों पर क़ब्ज़े करना, रिश्वत लेना वग़ैरा।

5 तसव्वुराती मश्क़ के ज़रीए ख़यालात को तब्दील कीजिये, मसलन

❁ मुसल्सल नाकाम होने वाले स्टूडन्ट के पहले ख़यालात येह होते हैं कि मैं एक कमज़ोर स्टूडन्ट हूं, मैं आसान सा सबक़ भी नहीं समझ सकता, इस लिये मैं इम्तिह़ान में कभी कामयाब नहीं हो सकता। येही स्टूडन्ट अगर अपने ख़यालात तब्दील कर ले कि दूसरे त़लबा की त़रह अल्लाह पाक ने मुझे भी सलाह़िय्यतें दी हैं अगर मैं भी मेह़नत कोशिश और लगन से पढ़ूं, अपने पढ़ने का अन्दाज़ थोड़ा तब्दील कर लूं तो कामयाबी की मन्ज़िल तक पहुंच सकता हूं, اِنْ شَآءَ اللّٰه। इन ख़यालात के तह़त उस ने पढ़ने का शिडयूल बनाया, क्लास में यक्सूई और तवज्जोह के साथ सबक़ समझना शुरूअ़ किया, जो समझ न आता वोह टीचर से पूछ लेता, पढ़ाई में अच्छे त़लबा को अपना दोस्त बनाया। यूं उस का एतिमाद बह़ाल हो गया और रफ़्ता रफ़्ता उस के ह़ालात तब्दील हुए और वोह एक कामयाब स्टूडन्ड बन गया।

❁ त़वील अ़र्से तक बेरोज़गार रहने वाले के पुराने ख़यालात कुछ यूं होते हैं कि सब को नौकरियां मिल जाती हैं लेकिन मुझे रिजेक्ट कर दिया जाता है। अब मैं कहीं इन्टरव्यू देने नहीं जाऊंगा। फिर उस के ख़यालात तब्दील हुए कि मुझे अपनी सलाह़िय्यतों को जदीद ज़माने के मुत़ाबिक़ बेहतर करना चाहिये, नौकरी देने वाले जो तक़ाज़ा करते हैं मुझे वैसा बनना चाहिये। अपने बदले हुए ख़यालात के मुत़ाबिक़ उस ने नए कोर्स किये, नेटवर्क बनाया और अपने शोबे में महारत ह़ासिल की, CV को बेहतर बनाया और एक अच्छी जॉब ह़ासिल करने में कामयाब हो गया।

इसी त़रह त़वील बीमारी काटने वाला, कारोबार में नाकाम रहने वाला और घरेलू झगड़ों का शिकार रहने वाला शख़्स भी अपने ख़यालात तब्दील कर के ह़ालात तब्दील कर सकता है।

(क़िस्त : 01)

इस्लाम का निज़ामे मुवाख़ात

दीने इस्लाम ने अच्छी ज़िन्दगी गुज़ारने के ऐसे बेश बहा उसूल और त़रीक़एकार बताए हैं जिन पर अ़मल करने से एक मुसलमान न सिर्फ़ इस्लामी अह़कामात का पाबन्द हो कर उख़रवी ज़िन्दगी में सुर्ख़रू होता है बल्कि वोह दुन्यवी ज़िन्दगी में उन तालीमात पर अ़मल पैरा हो कर मुआ़शरे के एक इ़ज़्ज़तदार और बा अख़्लाक़ फ़र्द की ह़ैसिय्यत से नुमायां भी होता है। दीने इस्लाम ने मुसलमानों के आपसी तअ़ल्लुक़ात को हुस्नो ख़ूबी से क़ाइम रखने के लिये अख़ुव्वत, भाईचारा और मह़ब्बत को आ़म करने की तालीम दी है। इस मज़्मून में हम जानेंगे कि अख़ुव्वत क्या है, येह क्यूं ज़रूरी है और मुआ़शरे पर इस के क्या क्या नताइज असर अन्दाज़ होते हैं।

अख़ुव्वत क्या है ? अ़रबी में उख़ुव्वह का माना है भाई होना, बिरादराना तअ़ल्लुक़, भाईचारा वग़ैरा। लफ़्ज़े उख़ुव्वत दो या ज़ियादा अफ़राद के माबैन मह़ब्बत, एतिमाद, ख़ैरख़्वाही और क़ुर्बत पर मब्नी होता है, उख़ुव्वत दो त़रह़ की होती है एक नसबी और दूसरी दीनी व इस्लामी। नसबी उख़ुव्वत येह है कि क़राबत और रिश्तेदारी की वज्ह से कुछ अफ़राद आपस में भाई भाई बनते हैं जब कि दीनी उख़ुव्वत से मुराद येह है कि इस्लाम की बुन्याद पर एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान के साथ रिश्ता क़ाइम हो। येह ऐसा ख़ूबसूरत रिश्ता है जिस में इन्सान रंगो नस्ल, क़ौमिय्यत और लिसानिय्यत के बजाए सिर्फ़ ईमान और इस्लाम की बुन्याद पर एक दूसरे के भाई क़रार पाते हैं।

ह़ज़रते इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه उख़ुव्वत व मह़ब्बत के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं : भाईचारा दो आदमियों के दरमियान एक राबित़ा होता है जैसे निकाह़ मियां बीवी के दरमियान एक राबित़े के नाम है और जिस त़रह़ अ़क़्दे निकाह़ कुछ ह़ुक़ूक़ का तक़ाज़ा करता है जिन को पूरा करना ह़क़्क़े निकाह़ क़ाइम रखने के लिये ज़रूरी है, अ़क़्दे उख़ुव्वत का भी येही ह़ाल है। तुम्हारे इस्लामी भाई का तुम्हारे माल और तुम्हारी ज़ात में ह़क़ है इस त़रह़ ज़बान और दिल में भी कि तुम उस को मुआ़फ़ करो, उस के लिये दुआ़ करो, इख़्लास व वफ़ा से पेश आओ, इस पर आसानी बरतो और तक्लीफ़ व तकल्लुफ़ को छोड़ दो।[1]

क़ुरआने पाक में मुवाख़ात का तसव्वुर दीने इस्लाम में उख़ुव्वत व भाईचारे को ख़ास अहमिय्यत ह़ासिल है, क़ुरआनो ह़दीस में मुतअ़द्दद मक़ामात पर इस्लामी उख़ुव्वत व भाईचारा क़ाइम करने और इख़्तिलाफ़ात मिटा कर आपस में इत्तिफ़ाक़ व इत्तिह़ाद के साथ रहने का हुक्म दिया गया है, चुनान्चे इरशाद होता है :

﴿وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِیْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह की रस्सी मज़बूत थाम लो सब मिल कर और आपस में फट न जाना (फ़िर्क़ों में बट न जाना)[2] और फ़रमाया : ﴿اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मुसलमान मुसलमान भाई हैं।[3] इरशाद फ़रमाया : मुसलमान तो आपस में भाई भाई ही हैं क्यूंकि येह आपस में दीनी तअ़ल्लुक़ और इस्लामी मह़ब्बत के साथ मरबूत़ हैं और येह रिश्ता तमाम दुन्यवी रिश्तों से मज़बूत तर है।[4]

ह़दीसे पाक और मुवाख़ात नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्लामी भाईचारे की अहमिय्यत और इफ़ादिय्यत बयान करते हुए

इरशाद फ़रमाया कि एक मुसलमान दूसरे मुसलमान के लिये इ़मारत की त़रह़ है जिस का एक ह़िस्सा दूसरे ह़िस्से को मज़बूत करता है।[5] मज़ीद एक रिवायत में रिश्तए उख़ुव्वत के ह़ुक़ूक़ को बयान करते हुए फ़रमाया कि मुसलमान, मुसलमान का भाई है वोह इस पर ज़ुल्म करता न उस को रुस्वा करता है, जो शख़्स अपने भाई की ज़रूरत पूरी करने में मशग़ूल रहता है अल्लाह पाक उस की ज़रूरत पूरी करता है और जो शख़्स किसी मुसलमान से मुसीबत को दूर करता है तो अल्लाह पाक क़ियामत के दिन उस के मसाइब में से कोई मुसीबत दूर फ़रमा देगा और जो शख़्स किसी मुसलमान का पर्दा रखता है क़ियामत के दिन अल्लाह पाक उस का पर्दा रखेगा।[6]

सह़ाबए किराम के दरमियान दो बार मुवाख़ात का क़ियाम अहले सीरत और मग़ाज़ी ज़िक्र करते हैं कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के दरमियान दो मरतबा मुवाख़ात (यानी भाईचारा) क़ाइम हुवा। पहला ख़ास त़ौर पर मुहाजिरीन के दरमियान हिजरत से क़ब्ल हुवा येह एक दूसरे की मदद और दीन के ह़ुक़ूक़ क़ाइम करने पर था। और दूसरी मरतबा जब आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हिजरत फ़रमा कर मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो आप ने मुहाजिरीन और अन्सार के दरमियान भाईचारा क़ाइम फ़रमाया।[7]

मुहाजिरीन व अन्सार के दरमियान मुवाख़ात मुहाजिरीन अपने वत़न और अहलो अ़याल को छोड़ कर बे सरो सामानी की ह़ालत में निकले थे इस लिये नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुहाजिरीन व अन्सार के दरमियान रिश्तए उख़ुव्वत क़ाइम किया ताकि मुहाजिरीन ग़ुर्बत और अहलो अ़याल की मुफ़ारक़त को मह़सूस न करें और एक दूसरे से मदद ह़ासिल कर सकें। मुहाजिरीन की तादाद पैंतालीस या पचास थी रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रीक़ैन में से दो दो अफ़राद को बुला कर फ़रमाया कि येह और तुम भाई भाई हो। आप का येह फ़रमाना था कि वोह भाई भाई बन गए। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ क़रशी ज़ोहरी और ह़ज़रत सअ़्द बिन रबीअ़ अन्सारी ख़ज़रजी में रिश्तए उख़ुव्वत क़ाइम किया तो ह़ज़रते सअ़्द ने ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान से कहा कि अन्सार में मेरे पास सब से ज़ियादा माल है। मैं अपना माल आप को बांट देता हूं। मेरी दो बीवियां हैं, उन में से एक को जो आप पसन्द करें मैं त़लाक़ दे देता हूं, इ़द्दत गुज़ारने के बाद आप उस से निकाह़ कर लीजिये। ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ ने कहा कि आप के अहलो माल आप को मुबारक हों, मुझे बाज़ार का रास्ता दिखा दीजिये, आप रोज़ाना बाज़ार में तिजारत करते रहे ह़त्ता कि कुछ ही अ़र्से में मालदार हो गए।[8]

यक़ीनन ! मुवाख़ात (भाईचारा) इस्लामी तारीख़ का एक अ़ज़ीम वाक़िआ़ है जो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मदीनए मुनव्वरा में मुहाजिरीन और अन्सार के दरमियान क़ाइम किया इस का मक़्सद सिर्फ़ वक़्ती ज़रूरत को पूरा करना नहीं था बल्कि एक पाएदार इस्लामी मुआ़शरे की बुन्याद रखना था। आइये ! हर नुक़्ते की तफ़्सील से वज़ाह़त मुलाह़ज़ा कीजिये :

मुवाख़ात के मक़ासिद इस्लाम एक ऐसा दीन है जो इन्सानिय्यत, मुसावात, भाईचारा और बाहमी हमदर्दी का दर्स देता है। इस्लाम के इब्तिदाई दौर में जब हिजरत कर के नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीना शरीफ़ तशरीफ़ लाए तो मुसलमानों की एक बड़ी तादाद बेघर, बेमाल और बे सरो सामान हो गई थी। उस की बह़ाली के लिये नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक बेहतरीन निज़ामे मुवाख़ात की बुन्याद रखी जिस से इस्लामी, समाजी, अख़्लाक़ी और मआ़शी फ़वाइद व समरात ह़ासिल हुए। मुवाख़ात के निज़ाम से न सिर्फ़ मुहाजिरीन की वक़्ती मदद हुई बल्कि एक मुआ़शरती इन्क़िलाब भी पैदा हुवा।

1 मुआ़शरती हम आहंगी पैदा करना : मुवाख़ात का सब से पहला मक़्सद मुआ़शरती हम आहंगी क़ाइम करना था। चूंकि मुहाजिरीन मक्के से आए थे और अन्सार मदीने में रहते थे तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के दरमियान ख़लीज को ख़त्म कर के उन्हें एक दूसरे का भाई बना दिया गया। येह मुवाख़ात एक रस्मी भाईचारा नहीं था बल्कि येह सब अ़मली ज़िन्दगी में भी एक दूसरे की ख़ुशी ग़मी, दुख सुख में शरीक होने लगे थे और उस निज़ाम से मुआ़शरे में नस्ली, लिसानी और क़बाइली इम्तियाज़ात का ख़ातिमा हुवा और इस्लामी मुआ़शरे में इत्तिफ़ाक़ व इत्तिह़ाद और हम आहंगी की फ़ज़ा क़ाइम हुई।

2 मोह़ताजों की मदद और मसावात क़ाइम करना : मुवाख़ात का दूसरा अहम मक़्सद मुआशी मसावात क़ाइम करना था। मुहाजिरीन अपने तमाम असासे मक्का में छोड़ कर आए थे। वोह बे सहारा और बेमाल थे। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अन्सार को उन का भाई मुक़र्रर कर के उन्हें हुक्म दिया कि वोह अपने मालो दौलत में मुहाजिरीन को शरीक करें। अन्सार ने उस हुक्म पर दिलो जान से अ़मल किया। बाज़ ने अपने आधे बाग़ात, घर तक पेश कर दिये ताकि मुहाजिरीन की ज़रूरिय्यात पूरी हों। इस अ़मल से न सिर्फ़ ग़ुर्बत का ख़ातिमा हुवा बल्कि एक मिसाली मसावात पर मब्नी मुआशरा क़ाइम हुवा।

3 महब्बत और भाईचारे का फ़रोग़ : जब कोई शख़्स किसी को अपना भाई समझता है तो उस से ह़सद, नफ़रत, बुग़्ज़ो अ़दावत और ख़ुद ग़रज़ी जैसी बुराइयां नहीं करता। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के निज़ामे मुवाख़ात क़ाइम करने के बाद अन्सार ने किसी क़िस्म का एह़सान जताए बग़ैर, ख़ुलूसे दिल से मुहाजिरीन की मदद की, जिस से उन के दिलों में एक दूसरे के लिये क़ुर्बत और महब्बत पैदा हुई। येह महब्बत, उख़ुव्वत और भाईचारा वक़्ती न था बल्कि नस्लों तक क़ाइम रहने वाली बुन्याद बन गई।

मुवाख़ात एक ऐसा अ़ज़ीम अ़मल था जिस ने इस्लामी मुआशरे की बुन्याद अ़द्ल, मसावात, महब्बत और भाईचारे पर रखी। इस के ज़रीए हमें येह सबक़ मिलता है कि जब तक हम एक दूसरे के दुख दर्द में शरीक नहीं होंगे, उस वक़्त तक एक मज़बूत और मुत्तह़िद उम्मत नहीं बन सकते। आज भी अगर हम मुवाख़ात के इस अ़ज़ीम जज़्बे को अपनाएं तो हमारे मुआशरे से ग़ुर्बत, नफ़रत और तफ़रीक़ का ख़ातिमा हो सकता है।

---

(1) احیاء العلوم، 2/216 (2) پ 4، اٰلِ عمرٰن: 103 (3) پ 26، الحجرات 10
(4) सिरात़ुल जिनान, 9 / 422
(5) مسلم، ص 1070، حدیث: 6585 (6) بخاری، 2/126، حدیث: 2442
(7) عمدۃ القاری، 8/182، تحت الحدیث: 1968 ملتقطا
(8) सीरते रसूले अ़रबी, स. 119 मुलख़्ख़सन।

बच्चों और बच्चियों के 6 नाम

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आदमी सब से पहला तोह़फ़ा अपने बच्चे को नाम का देता है लिहाज़ा उसे चाहिये कि उस का नाम अच्छा रखे। (جمع الجوامع، 3/285، حدیث: 8875) यहां बच्चों और बच्चियों के लिये 6 नाम, उन के माना और निस्बतें पेश की जा रही हैं।

बच्चों के 3 नाम

नाम	पुकारने के लिये	माना	निस्बत
मुहम्मद	ज़िया	चमक	रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सिफ़ाती नाम
मुहम्मद	अस्लम	ज़ियादा सलामती वाला	सहाबी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه का मुबारक नाम
मुहम्मद	नोमान	नेमतें पाने वाला	इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का मुबारक नाम

बच्चियों के 3 नाम

उम्मे कुल्सूम	पुरगोश्त चेहरे वाली की मां	शहज़ादिये रसूल का बा बरकत नाम
बुसरा	कोंपल	सहाबिय्या رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا का बा बरकत नाम
यास्मीन	चंबेली का फूल	एक बुज़ुर्ग ख़ातून رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهَا का बा बरकत नाम

(जिन के हां बेटे या बेटी की विलादत हो वोह चाहें तो इन निस्बत वाले 6 नामों में से कोई एक नाम रख लें।)

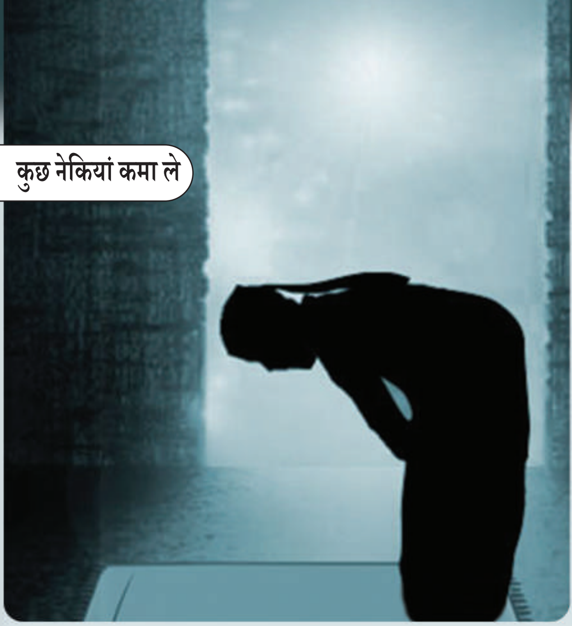

नमाज़े तहज्जुद : क़ुर्बे इलाही का सुनहरी ज़ीना

रात की सियाही जब दुनिया को अपनी आग़ोश में ले लेती है और हर त़रफ़ सुकून छा जाता है, ऐसे पुरसुकून लम्हात में रब्बे करीम अपने बन्दों को अपनी रह़मतों की बारिश में बुलाता है। येही वोह वक़्त है जब दिल की दुनिया जागती है, रूह़ को नई ताज़गी मिलती है और बन्दा अपने रब के सब से क़रीब होता है। नमाज़े तहज्जुद इसी क़ुर्ब के ह़ुसूल का एक सुन्हरी ज़ीना है। एक ऐसा अ़मल जो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़बूब इ़बादत भी है और औलिया व सालिह़ीन का ख़ास मामूल भी।

तहज्जुद अल्लाह से मह़ब्बत, आ़जिज़ी और इख़्लास का एक अ़मली इज़्हार है। येह वोह लम्ह़े हैं जब दुनिया की आवाज़ें ख़ामोश और दिल की आवाज़ बुलन्द हो जाती है। उन ख़ल्वत के लम्हात में दुआ़एं क़बूल होती हैं, गुनाहों की मुआ़फ़ी के दरवाज़े खुलते हैं और दिल पर ईमान की मिठास उतरती है। आज के मज़्मून में हम आप के साथ नमाज़े तहज्जुद के बारे में कुछ अहम मालूमात शेयर करेंगे। पढ़िये और अ़मल की निय्यत भी कीजिये !

तहज्जुद का माना और ह़ुक्म

माना : तहज्जुद अ़रबी लफ़्ज़ **“هَجَدَ”** से है जिस के माना है : रात में नमाज़ पढ़ना। इस्तिलाह़ में “रात को सोने के बाद उठ कर नवाफ़िल की अदाएगी को तहज्जुद कहा जाता है।”(1)

ह़ुक्म : शुरूए इस्लाम में तहज्जुद की नमाज़ तमाम मुसलमानों पर फ़र्ज़ थी, फिर उम्मत से फ़र्ज़िय्यत मन्सूख़ हो गई लेकिन ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये तहज्जुद की नमाज़ फ़र्ज़ ही रही, आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रोज़ाना 6 फ़र्ज़ नमाज़ें अदा फ़रमाते थे जिन में तहज्जुद की नमाज़ भी शामिल थी। उम्मत के लिये येह नमाज़ सुन्नते मुस्तह़ब्बा है, इस को तर्क करने वाला अगर्चे फ़ज़्ले कबीर व ख़ैरे कसीर से मह़रूम है मगर गुनहगार नहीं।(2)

तहज्जुद के फ़ज़ाइल

❁ नवाफ़िल में सब से अफ़्ज़ल नमाज़ “सलातुल्लैल (नमाज़े तहज्जुद)” है।(3) रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रात को इतना ज़ियादा क़ियाम फ़रमाते कि आप के क़दम मुबारक सूज जाते। जब आप से पूछा गया कि आप इतनी मेह़नत क्यूं करते हैं जब कि अल्लाह ने आप के अगले पिछले सब गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा दिये हैं, तो आप ने फ़रमाया : “क्या मैं अल्लाह पाक का शुक्र गुज़ार बन्दा न बनूं ?”(4) अल्लाह पाक ने ख़ुद अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तहज्जुद का ह़ुक्म देते हुए फ़रमाया : ﴿وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖ عَسٰۤى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا(۷۹)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और रात के कुछ ह़िस्से में तहज्जुद करो येह ख़ास तुम्हारे लिये ज़ियादा है क़रीब है कि तुम्हें तुम्हारा रब ऐसी जगह खड़ा करे जहां सब तुम्हारी ह़म्द करें।(5)

चन्द फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ❁ रात में क़ियाम को अपने ऊपर लाज़िम कर लो कि येह पिछले नेक लोगों का त़रीक़ा है और तुम्हारे रब की त़रफ़ क़ुर्बत का ज़रीआ़ और गुनाहों को मिटाने वाला और गुनाह से रोकने वाला है।(6) ❁ क़ियामत के दिन लोग एक मैदान में जमा किये जाएंगे, उस वक़्त मुनादी पुकारेगा, कहां हैं वोह जिन की करवटें ख़्वाबगाहों से जुदा होती थीं ? वोह लोग

खड़े होंगे और थोड़े होंगे येह जन्नत में बग़ैर हिसाब दाख़िल होंगे फिर और लोगों के लिये हिसाब का हुक्म होगा ।[7] ❁ जन्नत में एक बालाख़ाना है कि बाहर का अन्दर से दिखाई देता है और अन्दर का बाहर से । ह़ज़रते अबू मालिक अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अ़र्ज़ की । या रसूलल्लाह ! वोह किस के लिये है ? इरशाद फ़रमाया उस के लिये जो अच्छी बात करे और खाना खिलाए और रात में क़ियाम करे जब लोग सोते हों ।[8] ❁ जो शख़्स रात में बेदार हो और अपने अहले ख़ाना को जगाए फिर दोनों दो दो रक्अ़त पढ़ें तो कसरत से याद करने वालों में लिखे जाएंगे ।[9]

तहज्जुद से मुतअ़ल्लिक़ चन्द मसाइल

1 सलातुल्लैल की एक क़िस्म तहज्जुद है कि इ़शा की नमाज़ के बाद रात में सो कर उठें और नवाफ़िल पढ़ें, सोने से क़ब्ल जो कुछ पढ़ें वोह तहज्जुद नहीं । 2 तहज्जुद नफ़्ल का नाम है अगर कोई इ़शा के बाद सो गया फिर उठ कर क़ज़ा नमाज़ पढ़ी तो उस को तहज्जुद न कहेंगे । 3 कम से कम तहज्जुद की दो रक्अ़तें हैं और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से आठ तक साबित हैं । 4 जो शख़्स तहज्जुद का आ़दी हो बिला उ़ज़्र उसे तहज्जुद छोड़ना मकरूह है कि सह़ीह़ बुख़ारी की ह़दीस में है, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से इरशाद फ़रमाया : "ऐ अ़ब्दुल्लाह ! तू फ़ुलां की त़रह़ न होना कि रात में उठा करता था फिर छोड़ दिया ।"[10]

नमाज़े तहज्जुद और अमीरे अहले सुन्नत

बानिये दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ आ़शिक़ाने रसूल को नमाज़े तहज्जुद की अदाएगी और नफ़्ली रोज़े रखने पर ख़ुसूसी ज़ोर देते हैं । ख़ास त़ौर पर आप माहे रजब, शाबान और रमज़ान में आ़शिक़ाने रसूल को तहज्जुद और नफ़्ली रोज़ों की अदाएगी की तरग़ीब देने के लिये मुख़्तलिफ़ तह़रीकें और मुहिम्मात चलाते हैं ताकि हर मुसलमान रात के पुरसुकून लम्ह़ात में अल्लाह की याद, दुआ़ओं और इस्तिग़फ़ार के ज़रीए अपनी ज़िन्दगी को मुनव्वर कर सके ।

आप ने अपनी औलाद को भी शुरूअ़ से तहज्जुद की तरग़ीब दिलाई । चुनान्चे दावते इस्लामी के शुरूअ़ की बात है कि एक मरतबा अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ दीनी कामों में मसरूफ़िय्यत की बिना पर रात देर गए कुछ इस्लामी भाइयों के हमराह अपनी लाइब्रेरी में पहुंचे तो वहां आप के बड़े शहज़ादे ह़ाजी उ़बैद रज़ा अ़त्तारी सोए हुए थे जो उस वक़्त बहुत कमसिन थे । आप ने फ़रमया : "इसे तहज्जुद पढ़वानी चाहिये" और उन्हें बेदार करना चाहा लेकिन उन पर नींद का बेह़द ग़लबा था लिहाज़ा पूरी त़रह़ बेदार न हो पाए । अमीरे अहले सुन्नत इन्फ़िरादी कोशिश फ़रमाते हुए उन्हें गोद में उठा कर खुले आस्मान तले ले गए और उन्हें चांद दिखा कर पूछा, "येह क्या है ?" उन्हों ने जवाब दिया : "**चांद**" फिर आप ने पूछा, "येह क्या कर रहा है ?" उन्हों ने जवाब दिया : "गुम्बदे ख़ज़रा को चूम रहा है ।" इस गुफ़्तगू के दौरान वोह पूरी त़रह़ बेदार हो चुके थे चुनान्चे आप ने उन्हें वुज़ू कर के तहज्जुद पढ़ने की तरग़ीब इरशाद फ़रमाई ।[11]

तहज्जुद और नफ़्ली रोज़ों की कारकर्दगी : ऑफ़िस शोबा इस्लाहे आमाल की जानिब से मिलने वाली कारकर्दगी के मुताबिक़ अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की तरग़ीब पर रजब शरीफ़ 1446 हि. / जनवरी 2025 ई. में दावते इस्लामी के तह़त 23 हज़ार 118 तहज्जुद इज्तिमाआ़त मुन्अ़क़िद हुए जिन में 2 लाख 68 हज़ार 529 इस्लामी भाइयों ने शिर्कत की ।

---

(1)حلیۃ الجلی،2/566(2)مراٰۃ المناجیح،2/233(3)مسلم، ص591، حدیث: 1163(4)مسلم ،ص 1169،حدیث: 7124(5)پ15، بنی اسرآءیل: 79 (6)ترمذی،5/323، حدیث:3560(7)شعب الایمان،3/169، حدیث:3244 (8)مستدرک، 1 / 631، حدیث: 1240(9)مستدرک، 1 / 624، حدیث: 1230(10)بخاری،1/390، حدیث:1152(11)تربیتِ اولاد، ص143۔

इस्लाम की रौशन तालीमात

मौत के बाद की फ़िक्र

एक मुसलमान के लिये जिन चीज़ों पर ईमान रखना ज़रूरी है उन में से एक "मरने के बाद हिसाबो किताब और जज़ा व सज़ा के लिये दोबारा उठाया जाना" भी है। येही वज्ह है कि दीने इस्लाम की रौशन तालीमात ने जहां दीगर ज़रूरिय्याते दीन के बारे में राहनुमाई फ़रमाई है वहां फ़िक्रे आख़िरत को भी निहायत वाज़ेह तौर पर बयान किया है। क़ुरआने पाक की बहुत सी आयाते मुबारका में फ़िक्रे आख़िरत की तरग़ीब दिलाई गई है।

फ़िक्रे आख़िरत पर आयाते मुबारका अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है : ﴿اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ(۱۱۵)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो क्या तुम येह समझते हो कि हम ने तुम्हें बेकार बनाया और तुम हमारी तरफ़ लौटाए नहीं जाओगे ?[1]

इस आयते करीमा के तहत सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "और (क्या तुम्हें) आख़िरत में जज़ा के लिये उठना नहीं ? बल्कि तुम्हें इबादत के लिये पैदा किया कि तुम पर इबादत लाज़िम करें और आख़िरत में तुम हमारी तरफ़ लौट कर आओ तो तुम्हें तुम्हारे आमाल की जज़ा दें।"[2]

इसी तरह एक और मक़ाम पर अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है : ﴿اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ يُّتْرَكَ سُدًى(۳۶)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : क्या आदमी इस घमन्ड में है कि उसे आज़ाद छोड़ दिया जाएगा।[3]

इस आयते मुबारका के तहत तफ़्सीरे सिरातुल जिनान में है : क्या आदमी इस घमन्ड में है कि उसे यूं आज़ाद छोड़ दिया जाएगा कि न उसे किसी चीज़ का हुक्म दिया जाए और न उसे किसी चीज़ से मना किया जाए, न वोह मरने के बाद उठाया जाए, न उस से आमाल का हिसाब लिया जाए और न उसे आख़िरत में जज़ा दी जाए। ऐसा नहीं होगा बल्कि उसे दुनिया में **अम्र व नही** का पाबन्द किया जाएगा, मरने के बाद उठाया जाएगा, उस से आमाल का हिसाब लिया जाएगा और आख़िरत में उसे उस की आमाल की जज़ा भी दी जाएगी।

हमें आज़ाद नहीं छोड़ा गया इस से मालूम हुवा कि हमें बिल्कुल आज़ाद नहीं छोड़ा गया कि जैसे चाहें ज़िन्दगी गुज़ारें, जैसे चाहें आमाल करें और अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ जिस तरह और जहां चाहें रहें बल्कि हमें दुनिया की ज़िन्दगी में अल्लाह तआला और उस के हबीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तरफ़ से कुछ चीज़ों का पाबन्द किया गया है और कुछ चीज़ों से मना किया गया है और ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये हमें एक दाइरए कार अ़ता किया गया है जिस में रह कर हमें अपनी ज़िन्दगी के अय्याम पूरे करने हैं और हमारे सामने येह भी वाज़ेह कर दिया गया है कि हमें मरने के बाद अल्लाह तआला की बारगाह में हाज़िर होना और अपने आमाल का हिसाब देना है और फिर दुनिया में जैसे आमाल किये होंगे वैसी जज़ा भी मिलेगी, लिहाज़ा अ़क़्लमन्दी का तक़ाज़ा येही है कि ख़ुद को शरीअ़त की पाबन्दियों से आज़ाद समझ कर ज़िन्दगी न गुज़ारी जाए बल्कि ज़िन्दगी जीने का जो तरीक़ा अल्लाह तआला और उस के हबीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दिया है उसी के मुताबिक़ ज़िन्दगी बसर की जाए कि इसी में दुनिया और आख़िरत की कामयाबी है और जो शख़्स शरीअ़त के अह़कामात से आज़ाद हो कर जीना चाहता है वोह बड़ा बेवुक़ूफ़ और बहुत नादान है कि वोह थोड़े से मज़े की

ख़ातिर हमेशा के लिये ख़ुद को ज़िल्लतो रुस्वाई और इन्तिहाई दर्दनाक अ़ज़ाब में धकेलने की कोशिश कर रहा है।[4]

फ़िक्रे आख़िरत पर अहादीसे मुबारका जिस त़रह क़ुरआने पाक में फ़िक्रे आख़िरत की तरग़ीब दिलाई गई है इसी त़रह बहुत सी अह़ादीसे मुबारका में भी फ़िक्रे आख़िरत की तरग़ीब दिलाई गई है चुनान्चे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : मैं नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और मैं वहां मौजूद अफ़राद में से दसवां था। इसी दौरान एक अन्सारी शख़्स आए और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! लोगों में सब से ज़ियादा अ़क़्लमन्द और मोह़तात़ कौन है ? नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : वोह लोग जो मौत आने से पहले उसे ज़ियादा याद करते और उस के लिये ज़ियादा तय्यारी करते हैं वोही अ़क़्लमन्द हैं, वोह दुनिया की शराफ़त और आख़िरत की बुज़ुर्गी ले गए।[5]

ह़ज़रते शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अ़क़्लमन्द वोह है जो अपने नफ़्स को अपना ताबेदार बना ले और मौत के बाद के लिये अ़मल करे और आ़जिज़ वोह शख़्स है जो अपनी ख़्वाहिशात पर चलता हो और अल्लाह पाक की रह़मत की उम्मीद भी करता हो।[6]

आख़िरत की फ़िक्र मुआ़शरे की बुनियाद आख़िरत की फ़िक्र दीने इस्लाम की ऐसी रौशन तालीम है कि जो मह़ज़ एक मज़हबी अ़क़ीदा नहीं बल्कि एक मुकम्मल निज़ामे ह़यात है जो मुआ़शरे की तामीर, अख़्लाक़ की पाकीज़गी, अ़द्लो इन्साफ़ के क़ियाम, अम्नो सलामती, ख़ानदानी निज़ाम की मज़बूती और मुआ़शरती फ़लाह़ो बहबूद की बुन्याद है। येह फ़िक्र इन्सान में मुआ़शरती ज़िम्मेदारी का एह़सास पैदा करती है कि मुझे अपनी इस्लाह़ की कोशिश के साथ साथ मुआ़शरे की इस्लाह़ की कोशिश भी करनी है। इस सोच का ह़ामिल शख़्स जानता है कि अगर उस ने अपनी मुआ़शरती ज़िम्मेदारी को पूरा न किया तो बरोज़े क़ियामत उसे उस का जवाब देना पड़ेगा।

आख़िरत की फ़िक्र और माली ईमानदारी जब मुआ़शरे के अफ़राद को आख़िरत की जवाबदेही का एह़सास हो तो वोह माली मुआ़मलात में भी ईमानदार हो जाते हैं। ख़रीदो फ़रोख़्त में धोकादेही से काम नहीं लेते, सूद और रिश्वत का लेन देन नहीं करते, किसी का क़र्ज़ नहीं दबाते, अमानत में ख़ियानत नहीं करते, ह़राम कमाई से बचते और रिज़्क़े ह़लाल की जुस्तजू करते हैं।

आख़िरत की फ़िक्र और ज़ेहनी पाकीज़गी यूं ही आख़िरत की फ़िक्र ज़ेहनी पाकीज़गी का भी ज़रीआ़ है कि ऐसी सोच रखने वाला अपने आप को बदगुमानियों, बुरी सोचों और गुनाहों भरे ख़यालात से बचाने के साथ साथ दूसरों के बारे में हुस्ने ज़न से काम लेता है।

आख़िरत की फ़िक्र और हुक़ूक़ुल्लाह की अदाएगी आख़िरत की फ़िक्र दीने इस्लाम की ऐसी रौशन तालीम है कि जिस से हुक़ूक़ुल्लाह की अदाएगी का ज़ेहन मिलता है। फ़िक्रे आख़िरत रखने वाला "**हुक़ूक़ुल्लाह**" की अदाएगी का पूरा पूरा ख़याल रखता है। पाबन्दी से नमाज़ें पढ़ता है, रमज़ानुल मुबारक के रोज़े रखता है, अपने माल की ज़कात निकालता है, फ़र्ज़ होने की सूरत में ह़ज का फ़रीज़ा अदा करता है, अल ग़रज़ वोह फ़राइज़ो वाजिबात की पाबन्दी करता है और ह़राम कामों से बचता है।

आख़िरत की फ़िक्र और हुक़ूक़ुल इ़बाद की अदाएगी इसी त़रह आख़िरत की फ़िक्र से "**हुक़ूक़ुल्लाह**" के साथ बन्दों के हुक़ूक़ अदा करने का भी ज़ेहन बनता है। फ़िक्रे आख़िरत रखने वाला रिश्तेदारों के साथ सिलए रेह़मी से पेश आता है, मां बाप की इताअ़तो फ़रमां बरदारी करता है, बीवी बच्चों के हुक़ूक़ का ख़याल रखता है, अपने पड़ोसियों को तक्लीफ़ पहुंचाने से बचता है अल ग़रज़ फ़िक्रे आख़िरत दीने इस्लाम की ऐसी रौशन तालीम है कि जो मुआ़शरे के भी सुधार का बेहतरीन ज़रीआ़ है और अपने किरदार को निखारने और किरदार व गुफ़्तार की सुथराई का भी बाइ़स है।

अल्लाह पाक हमें अपनी आख़िरत को बेहतर से बेहतरीन करने का जज़्बा नसीब फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہ وسلَّم

---

(1)پ18، المؤمنون:115 (2)خزائن العرفان، پ18، المؤمنون، تحت الآیۃ:115
(3)پ29، القیامۃ: 36 (4)تفسیر صراط الجنان، پ29، القیامۃ، تحت الآیۃ:36، 10/464 (5)معجم کبیر، 12/318، حدیث: 13536 (6)ترمذی، 4/207، حدیث:2467-

बा जमाअ़त नमाज़ की ह़िक्मतें

बिलाशुबा बा जमाअ़त नमाज़ इस्लामी शिआ़र है जिस में ईमान की ह़रारत, बन्दगी की रूह़ और उम्मत के इत्तिह़ाद की ह़क़ीक़त जल्वागर है। येही वज्ह है कि इस्लाम ने इन्सान को इन्फ़िरादी इ़बादत के साथ साथ इज्तिमाई़ निज़ामे इ़बादत का भी पाबन्द बनाया है ताकि बन्दगी मह़ज़ ज़ाती कैफ़िय्यत न रहे बल्कि उम्मत की इज्तिमाई़ शान बन जाए। क़ुरआने करीम ने जमाअ़त की तल्क़ीन करते हुए फ़रमाया : ﴿وَارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِيْنَ (۴۳)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और रुकूअ़ करने वालों के साथ रुकूअ़ करो।[1]

इज्तिमाई़ इ़बादत की अहमिय्यत की तरग़ीब दिलाते हुए हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

صَلَاةُ الْجَمَاعَةِ اَفْضَلُ مِنْ صَلَاةِ الْفَذِّ بِسَبْعٍ وَعِشْرِيْنَ دَرَجَةً

यानी जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ना अकेले पढ़ने से 27 दर्जे ज़ियादा अफ़्ज़ल है।[2] इस रिवायत में गोया इस बात की तरग़ीब दिलाई गई है कि बन्दा अपनी नमाज़ को मह़ज़ फ़र्ज़ की अदाएगी न समझे बल्कि नज़्मे उम्मत की अ़मली मश्क़ के त़ौर पर अदा करे। यहां चूंकि बा जमाअ़त नमाज़ की फ़ज़ीलत बयान करने के बजाए बा जमाअ़त नमाज़ की ह़िक्मतें बयान करना मक़्सूद है। लिहाज़ा आइये ! इस बात का जाइज़ा लेते हैं कि बा जमाअ़त नमाज़ की अदाएगी का जो हमें हुक्म दिया गया है, उस में क्या क्या ह़िक्मतें कार फ़रमा हो सकती हैं :

बा जमाअ़त नमाज़ की अदाएगी की ह़िक्मतों का ज़िक्र करते हुए मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जमाअ़त में दीनी या दुन्यवी बहुत सी ह़िक्मतें हैं : दुनियावी ह़िक्मतें तो येह हैं कि ❁ जमाअ़त की बरकत से क़ौम में तन्ज़ीम रहती है कि मुसलमान अपने हर काम के लिये इमाम की त़रह़ सद्र और अमीर चुन लिया करें, ❁ फिर अमीर की ऐसी इत़ाअ़त करें जैसे मुक़्तदी। ❁ इमाम की जमाअ़त से आपस में इत्तिफ़ाक़ बढ़ता है, रोज़ाना पांच बार की मुलाक़ात की आ़दत पड़ती है कि सब लोग जमाअ़त के वक़्त पर दौड़ते आते हैं। ❁ जमाअ़त से मुतकब्बिरीन का ग़ुरूर टूटता है कि यहां बादशाह को फ़क़ीर के साथ खड़ा होना पड़ता है।

दीनी फ़ाइदे येह हैं कि अगर जमाअ़त में एक की नमाज़ क़बूल हो गई तो सब की क़बूल है। जमाअ़त में गोया मुसलमानों का वफ़्द बारगाहे इलाही में ह़ाज़िर होता है और ज़ाहिर है कि ह़ाकिम के यहां तन्हा के मुक़ाबिल वफ़्द का ज़ियादा एह़तिराम होता है। ❁ जमाअ़त

में इन्सान रब की कचहरी में वकील यानी इमाम के ज़रीए अ़र्ज़ो मारूज़ कराता है, बात का वज़्न बढ़ जाता है। जमाअ़त से आदमी को दीनी पेशवा उ़लमा, सूफ़िया का अदब सिखाया जाता है।

मज़ीद जुमुआ़ की जमाअ़त के फ़र्ज़ होने की ह़िक्मतें बयान करते हुए फ़रमाते हैं : पंजगाना जमाअ़त मह़ल्ले भर की कॉन्फ्रेंस है और जुमुआ़ की जमाअ़त सारे शहर या अक्सर ह़िस्से की। पंजगाना जमाअ़त फ़र्ज़ करने में मुसलमानों पर दुश्वारी हो जाती है कि जंगल खेत वग़ैरा से भाग कर शहर आना पड़ता। चूंकि जुमुआ़ हफ़्ते में एक बार आता है तो उस के लिये आना इतना गिरां न होगा।[3]

आला ह़ज़रत के वालिदे मोह़तरम, ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती नक़ी अ़ली ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने बा जमाअ़त नमाज़ की जो ह़िक्मतें बयान की हैं, उन का ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है : मशरूइय्यते जमाअ़त की एक ह़िक्मत येह भी है कि किसी की नमाज़ में मसलन ख़ुशूअ़ और किसी की ख़ुज़ूअ़ और किसी का ज़ौक़ो शौक़ और किसी की रिआ़यत बन्दगी और किसी की हैबतो वक़ार ज़ियादा है। उन सब की कैफ़िय्यात के मिलने से नमाज़े जमाअ़त एक ऐसी इज्तिमाई़ कैफ़िय्यत पैदा करती है जो इन्फ़िरादी त़ौर पर मुम्किन नहीं होती। (गोया मुख़्तलिफ़ दिलों की रूह़ानिय्यत, ख़शिय्यत, मह़ब्बत और बन्दगी मिल कर एक कामिल इ़बादत की सूरत इख़्तियार कर लेती है।)

उ़लमा फ़रमाते हैं नमाज़े जमाअ़त मे चार फ़ाइदे हैं :

(1) नमाज़ियों में बाहम दोस्ती व मह़ब्बत पैदा होती है और हर एक दूसरे के ह़ाल से वाक़िफ़ होता रहता है। (और यूं भाईचारे की फ़ज़ा मज़बूत होती है।)

(2) जब इन्सान दूसरों को इ़बादत में मसरूफ़ देखता है तो उसे भी इ़बादत में लुत़्फ़ और जोश पैदा होता है, और शैत़ान के वस्वसे कमज़ोर पड़ जाते हैं।

(3) जमाअ़त में अहले ईमान के दिलों की तासीर एक दूसरे पर पड़ती है और नेक लोगों की सोह़बत गुनाहगारों के लिये भी मग़्फ़िरत का ज़रीआ़ बन जाती है।

क्यूंकि नेक लोगों के पास बैठने वाला भी बदबख़्त नहीं रहता।

(4) इज्तिमाए़ मुस्लिमीन बरकात और दीनी फ़वाइद के ह़ुसूल का बाइ़स है : मसलन जाहिल : उ़लमा से मसाइल सीखते हैं। और बेशौक़ों को अहले मह़ब्बत का शौक़ देख कर ख़ुदा की बन्दगी का शौक़ और ख़ाइफ़ीन के ख़ुज़ूओ़ ख़ुशूअ़ देखने से औरों के दिल में भी ख़ौफ़ पैदा होता है। बेबाक अहले एह़तियात़ की एह़तियात़ देख कर बे एह़तियात़ी व बेबाकी से बाज़ आते हैं।[4]

अल ग़रज़ कहा जा सकता है कि बा जमाअ़त नमाज़ दर ह़क़ीक़त शरीअ़ते इस्लामिय्या की उस जामेअ़ ह़िक्मत का मज़हर है जो दुनिया व आख़िरत दोनों की भलाइयों को जमा करती है। क्यूंकि इस में इन्सान अपनी अनानिय्यत को मिटा कर सफ़े जमाअ़त में सब के बराबर खड़ा होता है, जो मसावात, इत्तिह़ाद और अ़द्ले इज्तिमाई़ का अ़मली सबक़ है। येही वोह मक़ाम है जहां अमीर व फ़क़ीर, आ़लिम व आ़मी, सरदार व मज़दूर सब एक सफ़ में अल्लाह के सामने झुक कर अपने तअ़ल्लुक़े बन्दगी को ताज़ा करते हैं। इस इज्तिमाइ़य्यत से फ़र्द को रूह़ानी त़मानिय्यत, बात़िनी सुकून और दीनी इस्तिक़ामत ह़ासिल होती है, जब कि मुआ़शरा इत्तिह़ाद, नज़्मो ज़ब्त़ और बाहमी हमदर्दी का गहवारा बन जाता है।

पस नमाज़े बा जमाअ़त न सिर्फ़ ईमान व इख़्लास का मज़हर है बल्कि इस्लामी तहज़ीब के तसल्सुल की ज़ामिन भी है : जो इन्सान को अल्लाह के हुक्म और उस के रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत और शरीअ़त की ह़िक्मतों पर अ़मल पैरा हो कर दुनिया व आख़िरत की कामयाबियों का मुस्तह़िक़ बनाती है।

---

(1)پ1، البقرۃ:43(2)مسلم، ص256، حدیث:1477(3)رسائل نعیمیہ، اسرار الاحکام، ص288تا289(4)جواہر البیان فی اسرار الارکان، ص69۔

अह़कामे तिजारत

1 सामान गिरवी रख कर क़र्ज़ लेना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्‌अले के बारे में कि एख ख़ातून से जब कोई क़र्ज़ का मुतालबा करता है तो वोह उस क़र्ज़ के बदले में मक़रूज़ की कोई क़ीमती चीज़ मसलन सोना वग़ैरा बत़ौरे ज़मानत रखती है उस के बाद ही क़र्ज़ देती हैं। अलबत्ता क़र्ज़ पर न तो वोह कोई इज़ाफ़ी रक़म वुसूल करती हैं और न ही मक़रूज़ की रखी हुई चीज़ को अपने इस्तिमाल में लाती हैं। आप से मालूम येह करना है कि क्या इस त़रह़ क़ीमती चीज़ रखवा कर क़र्ज़ लेना शरअ़न जाइज़ है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَایَۃَ الْحَقِّ وَ الصَّوَابِ

जवाब : क़र्ज़ ख़्वाह का क़र्ज़ के बदले मक़रूज़ की कोई चीज़ बत़ौरे ज़मानत अपने पास रखना शरई इस्तिलाह़ में "**रेहन**" कहलाता है। रेहन रखवाना क़ुरआनो ह़दीस से साबित है। मज़ीद येह कि रेहन रखवाने में फ़रीक़ैन को फ़वाइद भी ह़ासिल होते हैं वोह इस त़रह़ कि क़र्ज़ ख़्वाह को अपने क़र्ज़ की वुसूली का इतमीनान हो जाता है और मक़रूज़ को अपना मत़लूबा क़र्ज़ ब आसानी ह़ासिल हो जाता है। वाज़ेह हुवा कि पूछी गई सूरत में अपनी क़ीमती चीज़ रखवा कर क़र्ज़ वुसूल करना शरअ़न जाइज़ है।

अलबत्ता येह मस्‌अला ज़रूर ज़ेहन नशीन रहे कि क़र्ज़ ख़्वाह का रेहन रखी हुई चीज़ से किसी भी क़िस्म का मशरूत़ नफ़अ़ ह़ासिल करना ख़ालिसतन सूदी मुआ़मला है इस से बचना लाज़िम व ज़रूरी है।

क़र्ज़ ले कर अपना माल रहन रेखवाना क़ुरआनो ह़दीस से साबित है। चुनान्चे अल्लाह तबारक व तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

﴿ وَاِنْ كُنْتُمْ عَلٰى سَفَرٍ وَّ لَمْ تَجِدُوْا كَاتِبًا فَرِهٰنٌ مَّقْبُوْضَةٌ ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर तुम सफ़र में हो और लिखने वाला न पाओ तो गिरौहो क़ब्ज़े में दिया हुवा। (پ3، البقرۃ:283)

इस आयते मुबारका के तह़त सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ लिखते हैं : "यानी कोई चीज़ दाइन के क़ब्ज़े में गिरवी के त़ौर पर दे दो। मस्‌अला : येह मुस्तह़ब है और ह़ालते सफ़र में रेहन आयत से साबित हुवा और ग़ैर सफ़र की हालत में ह़दीस से साबित है चुनान्चे रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मदीनए त़य्यिबा में अपनी ज़िरह मुबारक यहूदी के पास गिरवी रख कर बीस

साअ़ जौ लिये। मसअला : इस आयत से रेहन का जवाज़ और क़ब्ज़े का शर्त होना साबित होता है।” (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 100)

रेहन से मशरूत़ नफ़ा उठाना ख़ालिसतन सूदी मुआ़मला है। जैसा कि इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ इरशाद फ़रमाते हैं : “रेहन में किसी त़रह़ के नफ़ा की शर्त बिलाशुब्हा ह़राम और ख़ालिस सूद है बल्कि उन दयार में मुर्तहिन का मर्हून से इन्तिफ़ाअ़ बिला शर्त भी ह़क़ीक़तन बहुक्मे उ़र्फ़ इन्तिफ़ाअ़ बिशर्त़ रिबाए मह़ज़ है।”

(फ़तावा रज़विय्या, 25 / 57)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 गिरवी रखी हुई चीज़ पर ज़कात नहीं

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मसअले के बारे में कि एक ख़ातून के पास सोने का सेट था जो उन्हों ने ज़रूरत पड़ने पर किसी के पास गिरवी रखवा कर क़र्ज़ा लिया, अभी तक क़र्ज़ा अदा नहीं हो सका। क्या उस ज़ेवर की ज़कात ख़ातून को निकालना होगी ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : पूछी गई सूरत में जब तक सोने का सेट गिरवी (रेहन) रहेगा, उस अ़र्से की सोने के सेट पर ज़कात लाज़िम नहीं होगी।

फ़तावा रज़विय्या में है : “दूसरी सूरत (राहिन का ज़ेवर रेहन रखवाने वाली सूरत) में वोह ज़ेवर उसी का है मगर उस की ज़कात उस पर वाजिब नहीं जब तक वोह क़ब्ज़ा मुर्तहिन में रहे।” (फ़तावा रज़विय्या, 10 / 134)

बहारे शरीअ़त में है : “शै मर्हून की ज़कात न मुर्तहिन पर है, न राहिन पर, मुर्तहिन तो मालिक ही नहीं और राहिन की मिल्क ताम नहीं कि उस के क़ब्ज़े में नहीं और बादे रेहन छुड़ाने के भी उन बर्सों की ज़कात वाजिब नहीं।” (बहारे शरीअ़त, 1 / 877)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 99 रुपये वाली चीज़ के 100 रुपये वुसूल करना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मसअले के बारे में कि हम बहुत सी चीज़ों की क़ीमत 99 या 999 या इसी अन्दाज़ से रखते हैं और ख़रीदार हमें 99 की बजाए 100 और 999 की बजाए 1000 दे देता है। क्या इज़ाफ़ी पैसे हम वापस करेंगे या राउंड फ़ीगर में रक़म काटने की हमें इजाज़त है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : आ़म तौर से 99 का फ़ीगर इस मक़्सद के लिये लिखा जाता है कि एक रुपया कम कर के या थोड़ी रक़म कम कर के अगले बड़े फ़ीगर की त़रफ़ गाहक का ज़ेहन जाने से रोका जा सके मसलन 999 लिखा है तो गाहक का ज़ेहन येह होगा कि येह चीज़ हज़ार से कम की है येह धोका तो नहीं है एक क़िस्म की मार्केटिंग प्रैक्टिस है जिस को अपनाने में ह़रज नहीं। अलबत्ता जिस ने 99 या 999 लिखे हैं वोह खुले पैसे रखने का एहतिमाम भी करे येह उस के लिये ज़रूरी है क्यूंकि जब उस ने ख़ुद क़ीमत 99 या 999 रुपये बयान की है तो सौदा हो जाने की सूरत में बेचने वाला बयान कर्दा क़ीमत ही ख़रीदार से वुसूल करने का ह़क़दार है। ख़रीदार अगर त़ै शुदा क़ीमत से ज़ियादा पैसे दे तो ज़ियादा दिये जाने वाले पैसे बेचने वाले के लिये उस वक़्त ह़लाल होंगे जब ख़रीदार की वाक़ेई रिज़ामन्दी पाई जाए।

अगर ख़रीदार त़ै शुदा क़ीमत से ज़ियादा रक़म देने पर राज़ी न हो या ज़ियादा दी जाने वाली रक़म का मुत़ालबा करता है तो अब ख़रीदार की इजाज़त या रिज़ामन्दी के बग़ैर त़ै शुदा क़ीमत से ज़ियादा पैसे काटना बेचने वाले के लिये ह़लाल नहीं है उस पर येही लाज़िम है कि येह रक़म ख़रीदार को वापस करे।

सदरुश्शरीआ़ मुफ़्ती अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ लिखते हैं : “जितने में चीज़ ख़रीदी, बाएअ़ को उस से कुछ ज़ियादा दिया तो जब तक येह न कह दे कि येह ज़ियादती तुम्हारे लिये ह़लाल है या येह कि मैं ने तुम्हें मालिक कर दिया, उस ज़ियादती को लेना जाइज़ नहीं।” (बहारे शरीअ़त, 3 / 480)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام पर आज़माइशें

(क़िस्त : 4)

यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام कुंएं में सब ने इत्तिफ़ाक़ कर लिया कि हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को तारीक कुंएं में डाल दें चुनान्चे उन्हों ने ऐसा किया। येह कुंवां कनआन से तीन फ़रसंग (यानी 9 मील) के फ़ासिले पर उर्दुन की सरज़मीन के अतराफ़ मे वाक़ेअ था, ऊपर से इस का मुंह तंग था और अन्दर से कुशादा, हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के हाथ पांव बांध कर क़मीस उतार कर कुंएं में छोड़ा, जब वोह उस की निस्फ़ गहराई तक पहुंचे तो रस्सी छोड़ दी ताकि हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام पानी में गिर कर हलाक हो जाएं। अल्लाह तआला के हुक्म से हज़रते जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام पहुंचे और उन्हों ने आप को कुंएं में मौजूद एक पत्थर पर बिठा दिया और आप के हाथ खोल दिये।[1]

झूटा उ़ज़्र मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं कि जब भाइयों ने हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को कुंएं में डाल दिया तो रात के वक़्त अपने वालिद हज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام की तरफ़ लौटे ताकि रात के अन्धेरे में उन्हें झूटा उ़ज़्र पेश करने में कोई परेशानी न हो, जब वोह हज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام के मकान के क़रीब पहुंचे तो उन्हों ने रोना और चीख़ना चिल्लाना शुरूअ़ कर दिया, हज़रते याक़ूब ने चीख़ने की आवाज़ सुनी तो घबरा कर बाहर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : ऐ मेरे बेटो ! मैं तुम्हें अल्लाह तआला की क़सम दे कर पूछता हूं क्या तुम्हें बकरियों में कुछ नुक़्सान हुवा ? उन्हों ने कहा : नहीं। फिर फ़रमाया तो क्या मुसीबत पहुंची और यूसुफ़ कहां हैं ? उन्हों ने जवाब दिया : ऐ हमारे वालिद ! हम आपस में एक दूसरे के साथ दौड़ लगा रहे थे कि हम में से कौन आगे निकलता है, इस दौड़ के चक्कर में हम दूर निकल गए और यूसुफ़ को अपने सामान के पास छोड़ दिया था, इसी दौरान जब हम यूसुफ़ से ग़ाफ़िल हुए तो उसे भेड़िया खा गया और हमें इ़ल्म है कि आप यूसुफ़ से शदीद महब्बत की वज्ह से किसी त़रह हमारा यक़ीन न करेंगे अगर्चे हम सच्चे हों और हमारे साथ कोई गवाह है न कोई ऐसी दलील व अ़लामत है जिस से हमारी सच्चाई साबित हो।[2]

याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام बेहोश हो गए जब हज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने येह ख़बर सुनी तो बेहोश हो गए, बेटों ने आवाज़ें दीं, हिलाया जुलाया मगर जिस्म में कोई ह़रकत न हुई, चेहरे पर पानी छिड़का लेकिन उस का भी कोई फ़ाइदा न हुवा हज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام को सेहर के वक़्त होश आया तो रोते हुए फ़रमाया : मेरी आंखों की ठन्डक यूसुफ़ कहां है ?[3] बेटों ने बकरी के एक बच्चे को ज़ब्ह कर के उस का ख़ून हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की क़मीस पर लगा दिया था लेकिन क़मीस को फाड़ना भूल गए,[4] वोह क़मीस ले आए और कहने लगे : येह यूसुफ़ की क़मीस है[5] हज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام वोह क़मीस अपने चेहरए मुबारक पर रख कर बहुत रोए और फ़रमाया : अ़जीब क़िस्म का होशियार भेड़िया था जो मेरे बेटे को तो खा गया और क़मीस को फाड़ा तक नहीं। मज़ीद फ़रमाया : ह़क़ीक़त येह नहीं है बल्कि तुम्हारे दिलों ने तुम्हारे लिये एक बात घड़ ली है तो मेरा त़रीक़ा उ़म्दा सब्र है और तुम्हारी बातों पर अल्लाह तआला ही से मदद चाहता हूं।[6] फिर फ़रमाया : अगर यूसुफ़ ज़िन्दा

है तो उसे मेरे पास ले आओ मैं तुम से राज़ी हो जाऊंगा अगर वोह इस दुनिया से जा चुका है तो मैं उसे कफ़न देना चाहता हूं, जिस भेड़िये ने उसे खाया है उसे मेरे पास ले आओ।[7]

भेड़िये से कलाम किया आख़िरेकार बेटों ने एक भेड़िये को पकड़ा और हज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام की ख़िदमत में ले आए और कहने लगे : येह वोह भेड़िया है जिस ने यूसुफ़ को खाया है, आप ने फ़रमाया : उसे छोड़ दो और उस से पूछो : उस ने यूसुफ़ को क्यूं खाया है ? बेटों ने उस से सुवाल किया तो उस भेड़िये ने कोई जवाब न दिया, आप عَلَيْهِ السَّلَام ने भेड़िये से फ़रमाया : तू उन्हें कोई जवाब क्यूं नहीं दे रहा ? तो भेड़िये ने अ़र्ज़ की : मैं उन्हें जवाब नहीं दूंगा क्यूंकि येह मुजरिम हैं अलबत्ता ! आप सुवाल करेंगे तो ज़रूर जवाब अ़र्ज़ करूंगा, आप عَلَيْهِ السَّلَام ने सुवाल पूछा तो भेड़िया अ़र्ज़ करने लगा : ऐ अल्लाह के नबी ! मैं ने आप के बेटे को नहीं खाया अल्लाह ने अम्बिया किराम का गोश्त दरिन्दों पर ह़राम कर दिया है (यानी दरिन्दों को अल्लाह ने येह त़ाक़त और हिम्मत नहीं दी कि वोह अम्बियाए किराम का शिकार करें और उन का गोश्त खाएं), पूछा : फिर इस क़मीस पर येह कैसा ख़ून है ? भेड़िये ने अ़र्ज़ की : आप मुझ से इस बारे में मत पूछें, आप عَلَيْهِ السَّلَام ने फिर फ़रमाया : तुम कहां जाओगे ? भेड़िया बोला : मैं तो चाहता हूं कि मग़रिब में अपने भाई को देख लूं, येह सुन कर आप عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने बेटों से फ़रमाया : येह एक दरिन्दा है और भाई को देखना चाहता है और मुझे नहीं मालूम कि तुम ने अपने भाई यूसुफ़ के साथ क्या सुलूक किया।[8]

ग़म और बढ़ गया हज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के ग़म में रोते रहे यहां तक कि आप عَلَيْهِ السَّلَام की आंख की सियाही का रंग जाता रहा और बीनाई कमज़ोर हो गई।[9]

बाज़ारे मिस्र और ख़रीदाराने यूसुफ़ दूसरी त़रफ़ हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को एक क़ाफ़िले वालों ने कुंएं से निकाल लिया, इतने में दीगर भाई भी आ गए और येह कह कर क़ाफ़िले वालों को बेच दिया कि येह हमारा ग़ुलाम है, क़ाफ़िले वालों ने हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को ख़रीद लिया और मिस्र ले आए बाज़ारे मिस्र में हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के आ़लम अफ़रोज़ हुस्नो जमाल का तज़किरा हुवा[10] तो हर शख़्स के दिल में आप की त़लब पैदा हुई और ख़रीदारों ने क़ीमत बढ़ाना शुरूअ़ की यहां तक कि हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के वज़्न के बराबर सोना, उतनी ही चांदी, उतना ही मुश्क और उतना ही रेशम क़ीमत मुक़र्रर हुई और उ़म्र शरीफ़ उस वक़्त तेरह या सतरह साल की थी। (बादशाह के ख़ज़ान्ची) अ़ज़ीज़े मिस्र ने इस क़ीमत पर आप को ख़रीद लिया और अपने घर ले आया।[11]

जेल से आज़ादी कुछ अ़र्से बाद आप पर झूटा इल्ज़ाम लगा कर आप को जेल में डाल दिया गया,[12] फिर एक वक़्त वोह आया जब मिस्र के बादशाह ने एक ख़्वाब देखा जिस की ताबीर किसी के पास न थी, ख़ादिम के ज़रीए मालूम हुवा कि हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام जेल मे हैं वोह उस ख़्वाब की ताबीर बता सकते हैं बादशाह के हुक्म पर ख़ादिम ने क़ैदख़ाने जा कर हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام से ताबीर पूछी तो आप ने ताबीर बयान कर दी, बादशाह ने ख़ुद आप को बुला कर आप की ज़बान से ताबीर सुनना चाही तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने येह कह कर मिलने से मना कर दिया कि जब तक झूटे मुआ़मले की तह़क़ीक़ न हो जाए और येह बात साबित न हो जाए कि हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को ख़्वाह मख़्वाह जेल में बन्द कर दिया था तब तक वोह जेल से बाहर नहीं आएंगे आख़िरेकार बादशाह ने तह़क़ीक़ की तो हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की बराअत ज़ाहिर हो गई और बादशाह ने जान लिया कि हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام इल्मो अ़क़्ल अमानत व किफ़ायत और दियानत में बेमिस्ल हैं इस त़रह़ हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام निहायत शानो शौकत और बाइ़ज़्ज़त त़रीक़े के साथ जेल से बाहर तशरीफ़ लाए और झूटे इल्ज़ाम लगाने वाले ख़ाइबो ख़ासिर हुए, फिर आप عَلَيْهِ السَّلَام ने बादशाह को उस का ख़्वाब भी सुनाया और उस की ताबीर भी इरशाद फ़रमाई कि सात साल तक ख़ुशहाली रहेगी फिर सात साल तक मुल्क में ज़बरदस्त क़ह़त़ पड़ेगा।[13] और साथ में उस का ह़ल भी पेश कर दिया कि अब लाज़िम येह है कि ग़ल्ले जमा किये जाएं और उन फ़राख़ी के सालों में कसरत से काश्त कराई जाए और ग़ल्ले बालियों के साथ मह़फ़ूज़ रखे जाएं और रिआ़या की पैदावार में से ख़ुम्स लिया जाए, उस से जो जमा होगा वोह मिस्र और उस के अत़राफ़ के बाशिन्दों के लिये काफ़ी होगा और फिर ख़ल्क़े ख़ुदा हर त़रफ़ से तेरे पास ग़ल्ला ख़रीदने आएगी और तेरे यहां इतने ख़ज़ाने और माल जमा हो जाएंगे जो तुझ से पहलों के लिये जमा न हुए।[14]

---

(1)صراط الجنان، 4/535(2)صراط الجنان، 4/536، 537(3)تاریخ الانبیاء للخطیب البغدادی، ص110(4)صراط الجنان، 4/538(5)تاریخ الانبیاء للخطیب البغدادی، ص110(6)صراط الجنان، 4/538(7)تاریخ الانبیاء للخطیب البغدادی، ص111(8)تاریخ الانبیاء للخطیب البغدادی، ص111(9)صراط الجنان، 5/49(10)تاریخ الانبیاء للخطیب البغدادی، ص112 تا 114 ملخصاً(11)صراط الجنان، 4/540(12)تاریخ الانبیاء للخطیب البغدادی، ص118(13)تاریخ الانبیاء للخطیب البغدادی، ص122 تا124 ملخصاً(14)صراط الجنان، 5/15۔

(दूसरी और आख़िरी क़िस्त)

सिद्दीक़े अकबर رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه

की फ़िरासत और मुआ़मला फ़हमी : एक तह़क़ीक़ी व तज्ज़ियाती मुत़ालआ़

7 फ़त्ह़े मक्का की तय्यारी का राज़ और मुआ़मला फ़हमी

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़त्ह़े मक्का की तय्यारी को इन्तिहाई ख़ुफ़िया रखा ताकि क़ुरैश को ग़फ़्लत में ही रखा जाए और ख़ूंरेज़ी से बचा जा सके। इस दौरान नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी अहलिया ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا को सफ़र के खाने वग़ैरा का सामान तय्यार करने का हुक्म दिया।

एक दिन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के घर तशरीफ़ लाए तो देखा कि आप की बेटी उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا गेहूं छान कर खाने का सामान तय्यार कर रही हैं। आप ने पूछा : "ऐ मेरी बेटी ! तुम येह खाने का सामान क्यूं तय्यार कर रही हो ?" ह़ज़रते आ़इशा رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا ने नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के राज़ को राज़ रखा और कोई जवाब न दिया। ह़ज़रते अबू बक्र ने फिर दरयाफ़्त किया : "क्या रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी ग़ज़्वे का इरादा रखते हैं ?" इस सुवाल पर भी ह़ज़रते आ़इशा رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا ख़ामोश रहीं। ह़ज़रते अबू बक्र رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه ने कई सुवालात पूछे, लेकिन ह़ज़रते आ़इशा رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا ख़ामोश रहीं। ह़ज़रते अबू बक्र رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه ने अपनी बेटी की मुसल्सल ख़ामोशी देखी तो समझ गए कि वोह नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के राज़ को ज़ाहिर नहीं करेंगी। येह आप की आला फ़िरासत और तरबियत का नतीजा था कि आप ने अपनी बेटी पर मज़ीद ज़ोर देने के बजाए उन की ख़ामोशी में छुपे राज़ को समझ लिया। इतने में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुद तशरीफ़ ले आए तो आप ने रसूले करीम से ख़ुद मालूमात ह़ासिल कर लीं।[1] येह वाक़िआ़ भी आप की बसीरत और मुआ़मला फ़हमी का एक बेहतरीन नमूना है कि आप ह़ज़रते आ़इशा رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا की ग़ैर मामूली मसरूफ़ियात और सुवालात परसुकूत से सूरते ह़ाल समझ गए और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के राज़ को अफ़्शां करने पर भी मुसिर न हुए।

8 फ़ितनए इरतिदाद और मुआ़मला फ़हमी की मिसाल

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाल के बाद, दीने इस्लाम को एक ऐसे नाज़ुक तरीन मोड़ का सामना करना पड़ा जिस की ह़स्सासिय्यत का अन्दाज़ा लगाना नामुम्किन था। बाज़ क़बाइल ने ज़कात की फ़र्ज़िय्यत से इन्कार कर दिया, और झूटे मुद्दइयाने नुबुव्वत ने सर उठा लिये, उन ह़ालात में इर्तिदाद का फ़ितना फैलने का शदीद अन्देशा था। इस सूरतेह़ाल में जहां एक त़रफ़ बड़े बड़े सह़ाबा इस सूरते ह़ाल की संगीनी को देखते हुए वक़्ती त़ौर पर नर्मी बरतने की राय दे रहे थे, वहीं ह़ज़रते अबू बक्र رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه का ईमान और उन की मुआ़मला फ़हमी अपने उ़रूज पर थी।

ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه ने उस वक़्त ह़ज़रते अबू बक्र رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه से अ़र्ज़ किया : अभी लोगों की एक बड़ी तादाद इस्लाम से मुर्तद हो गई है, (जब कि आप ने लश्करे उसामा को भी रवाना कर दिया है) ऐसे में आप ज़कात ना देने वालों से जंग का इरादा रखते हैं ? क्या आप उन के कलिमे पढ़ने के बावुजूद भी उन से जंग करेंगे ? येह एक ऐसा सुवाल था जो उस वक़्त की हंगामी सूरतेह़ाल और उम्मत के इन्तिशार के अन्देशे को ज़ाहिर करता था। लेकिन ह़ज़रते अबू

बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ ने जो जवाब दिया, वोह उन की ईमानी फ़िरासत और कमाले मुआमला फ़हमी का एक ऐसा शाहकार है जो रहती दुनिया तक याद रखा जाएगा। आप ने फ़रमाया : अल्लाह की क़सम ! जो लोग नमाज़ और ज़कात के दरमियान फ़र्क़ करेंगे, मैं उन से ज़रूर जिहाद करूंगा। ज़कात माल का ह़क़ है। अगर येह लोग रस्सी का एक भी टुकड़ा जो रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ والہ وسلم के ज़माने में दिया करते थे, अदा करने से इन्कार करेंगे तो मैं उस के बदले में भी उन से जिहाद करूंगा।

ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رضی اللہ عنہ बाद में इस वाक़िए को याद कर के फ़रमाया करते थे कि "ख़ुदा की क़सम ! जब मैं ने देखा कि अल्लाह तआला ने अबू बक्र का सीना जिहाद के लिये खोल दिया है तो मैं समझ गया कि अबू बक्र का फ़ैसला दुरुस्त और ह़क़ पर था।"[2] ह़ज़रते उ़मर का येह एतिराफ़ इस बात की गवाही है कि ह़ज़रते अबू बक्र رضی اللہ عنہ की बसीरत आ़म लोगों की सोच से कहीं बुलन्द थी। उन के इस जुरअत मन्दाना इक़्दाम ने इस्लाम को इन्तिशार और ज़वाल के गढ़े में गिरने से बचा लिया और उस की बुन्यादों को मज़बूत किया।

9 हिजरत की रात की बेमिसाल अ़क़ीदत और फ़िरासत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सई़द ख़ुदरी رضی اللہ عنہ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ والہ وسلم (हिज्जतुल वदाअ़ से वापस तशरीफ़ लाए) मिम्बर पर जल्वा अफ़रोज़ हुए और फ़रमाया : "एक बन्दा है जिसे अल्लाह ने इख़्तियार दिया कि चाहे तो हमेशा दुनिया में रहे और उस की बहारें लूटता रहे और चाहे तो उस के हां तय्यार कर्दा नेमतों को इख़्तियार कर ले। तो उस बन्दे ने जो उस के रब के पास नेमतें हैं उन्हें इख़्तियार कर लिया।" सरकार صلی اللہ علیہ والہ وسلم की इस बात को कोई न समझ सका कि क्या मुआमला है ? लेकिन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ अल्लाह पाक की अ़ता कर्दा फ़हमो फ़िरासत से फ़ौरन समझ गए और जान गए थे कि अल्लाह तआला ने जिस बन्दे को इख़्तियार दिया है वोह कोई और नहीं बल्कि ख़ुद आप के मह़बूब नबी, सरकारे दो आ़लम صلی اللہ علیہ والہ وسلم हैं और इस ह़दीस के ज़रीए आप अपनी वफ़ात का इशारा फ़रमा रहे थे। ह़ज़रते अबू सई़द ख़ुदरी رضی اللہ عنہ ने इस वाक़िए को बयान करते हुए फ़रमाया : पस वोह (बन्दा) जिस को इख़्तियार दिया गया था ख़ुद ताजदारे काइनात صلی اللہ علیہ والہ وسلم थे और अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ हम सब से ज़ियादा इ़ल्म रखने वाले थे।[3] येह आप की ईमानी फ़िरासत और नबिय्ये अकरम صلی اللہ علیہ والہ وسلم के मिज़ाज शनास होने का बय्यन सुबूत था।

10 ख़िलाफ़त के लिये ह़ज़रते उ़मर का इन्तिख़ाब

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رضی اللہ عنہ फ़रमाते थे कि मेरी मालूमात में तीन हस्तियां ऐसी गुज़री हैं जो फ़िरासत के बुलन्द तरीन मक़ाम पर थीं, जिन में से एक ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ हैं। उन की फ़िरासत की एक वाज़ेह़ मिसाल ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رضی اللہ عنہ को अपने बाद ख़िलाफ़त के लिये मुन्तख़ब करना है।

जब ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ का विसाल क़रीब आया तो उन्हों ने उम्मत के मुस्तक़बिल की फ़िक्र करते हुए ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رضی اللہ عنہ को अपना जानशीन बनाने का फ़ैसला किया। बाज़ सहाबए किराम ने ह़ज़रते उ़मर की जलाली त़बीअ़त का ज़िक्र किया, लेकिन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ की फ़िरासत पर क़ुरबान, आप जानते थे कि उम्मत को इस नाज़ुक दौर में एक ऐसे मज़बूत और जरी क़ाइद की ज़रूरत है जो अपने फ़ैसलों में साबित क़दम हो और उम्मत के दाख़िली व ख़ारिजी फ़ितनों का मुक़ाबला कर सके। आप ने फ़रमाया कि मैं उ़मर को ख़लीफ़ा बना रहा हूं।[4] बाद में पूरी दुनिया के मुअर्रिख़ीन और दानिशवरों ने इस फ़ैसले को बेहतरीन क़रार दिया। येह आप की मुआमला फ़हमी और दूर अन्देशी की इन्तिहा थी।

इन तमाम वाक़िआ़त से येह बात रोज़े रौशन की त़रह वाज़ेह़ होती है कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ ईमान और तक़्वे के साथ साथ मुआमला फ़ेहमी, ह़िक्मत और फ़िरासत में भी बुलन्द तरीन मक़ाम पर थे। आप की ज़िन्दगी का हर पहलू आने वाले क़ाइदीन और आ़म मुसलमानों के लिये एक बेहतरीन नमूना है कि किस त़रह ह़ालात की गहराई में उतर कर दुरुस्त फ़ैसले किये जाते हैं, और किस त़रह मुश्किल तरीन ह़ालात में भी अल्लाह और उस के रसूल के अह़कामात पर कामिल यक़ीन के साथ अ़मल करना है।

---

(1) البدایۃ والنھایۃ، 3/475 (2) السنن الکبریٰ للبیھقی، 4/191 ملتقطاً (3) بخاری، 2/591، حدیث: 3905 (4) ازالۃ الخفاء، 3/121 مفھوماً۔

हज़रते शुरहबील बिन हसना رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا

अज़ीम जरनैल और मशहूर सहाबिये रसूल हज़रते शुरहबील बिन हसना رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا का पूरा नाम शुरहबील बिन अब्दुल्लाह है जब कि सहाबिय्या बीबी "हसना" आप की वालिदा का नाम था,[1] आप तारीख़े इस्लाम की उन अज़ीम शख़्सिय्यात में से एक हैं जिन्हों ने अपने किरदार, बहादुरी और तक़्वा से इस्लाम की इब्तिदाई तारीख़ पर गहरे नुक़ूश छोड़े।

फ़ज़ाइल हज़रते शुरहबील رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ का शुमार रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुअज़्ज़ज़ सहाबा और कातिबीने वही में होता है।[2] आप ने अपनी वालिदा, भाई और दो भतीजों के साथ हबशा की जानिब हिजरत की फिर सिन 7 हिजरी में हज़रते जाफ़र और दीगर मुहाजिरीन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم हबशा से मदीने पहुंचे तो आप भी उन में शामिल थे।[3] आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ उन अज़ीम सिपह सालारों में से एक हैं जिन को ख़लीफ़ए अव्वल हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने शाम की फ़त्ह के लिये रवाना किया[4] मुल्के उर्दुन के तमाम शहर और क़ल्ओ को फ़त्ह करने का एज़ाज़ हज़रते शुरहबील رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ के हिस्से में आता है।[5]

ज़ोहदो तक़्वा और सादगी आप की ज़िन्दगी ज़ोहदो तक़्वा का बेहतरीन नमूना थी सादगी का आलम येह था कि एक मरतबा हज़रते शिफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا आप के घर तशरीफ़ लाई तो नमाज़ का वक़्त हो चुका था और आप घर पर ही मौजूद थे। उन्हों ने आप को मलामत की, कि नमाज़ का वक़्त है और आप यहीं बैठे हैं। आप ने नर्मी से जवाब दिया : ऐ फूफी ! मुझे मलामत न कीजिये, हमारे पास दो कपड़े थे जिन में से एक कपड़ा नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उधार ले लिया। हज़रते शुरहबील رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं कि दूसरा कपड़ा एक (पुरानी) क़मीस थी जिस पर पैवन्द लगा रखे थे।[6]

फ़त्हे दिमश्क और जंगे यरमूक में शिर्कत हज़रते शुरहबील बिन हसना رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا एक बेमिसाल और निडर सिपह सालार भी थे। फ़त्हे दिमश्क में रूमी लश्कर मुसलमानों पर हम्ला आवर हुवा तो आप ने बुलन्द आवाज़ में पुकारा : ऐ मुसलमानों ! अपनी ज़िन्दगियों की फ़िक्र न करो और अपने रब की जन्नत के तलबगार बनो, अपने अमल से अपने ख़ालिक़ को राज़ी करो क्यूंकि अल्लाह तुम से फ़रार को पसन्द नहीं करता, उन पर हम्ला करो, अल्लाह तुम पर बरकत नाज़िल फ़रमाए। येह सुन कर मुसलमानों ने एक शदीद हम्ला किया और घम्सान की जंग शुरूअ हो गई।[7] 15 हिजरी जंगे यरमूक में आप का सामना रूमी कमान्डर से हुवा दोनों के दरमियान शदीद लड़ाई शुरूअ हो गई। दौराने मुक़ाबला आप ने एक जंगी चाल चली और पीछे हटे कमान्डर ने आप का पीछा किया तो आप ने अचानक पलट कर नेज़े से हम्ला किया, लेकिन कमान्डर बच निकला दोनों के दरमियान फिर शदीद लड़ाई हुई यहां तक कि दोनों की तल्वारें टूट गईं। दोनों ने एक दूसरे को गले से पकड़ लिया। कमान्डर जिस्मानी तौर पर बहुत भारी भरकम और ताक़तवर था जब कि आप दुबले पतले जिस्म के मालिक थे। कमान्डर ने आप को इतनी ज़ोर से दबाया कि आप को शदीद तक्लीफ़ हुई वोह आप को क़त्ल करने ही वाला था कि हज़रते ज़िरार बिन अज़वर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने ख़ुद से कहा : ऐ ज़िरार ! तुझ पर अफ़्सोस है, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कातिबे वही शहीद हो जाएं और तू देखता रहे ? चुनान्चे तेज़ी से भाग कर आए और पीछे से उस रूमी कमान्डर को ख़ंजर मार कर हलाक कर दिया।[8]

एक मोजिज़ाती मदद जंगे क़ैसारिया में रूमियों की तादाद 80 हज़ार थी जबकि मुसलमान सिर्फ़ 5 हज़ार थे उस मौक़अ पर शदीद सर्दी थी और आस्मान पर बादल छाए हुए थे । हज़रते शुरहबील رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ और रूमी कमान्डर क़ैदमून के दरमियान लड़ाई जारी थी कि अचानक मश्कों के दहानों की तरह तेज़ बारिश शुरूअ हो गई। इस पर दोनों अपने घोड़ों से उतर आए और कीचड़ में गुत्थम गुत्था हो गए। इसी दौरान क़ैदमून ने आप पर ह़म्ला किया और आप को उठा कर पुश्त के बल ज़मीन पर पटख़ दिया फिर सीने पर चढ़ कर आप को ज़ब्ह़ करना चाहा। इस लम्हे आप ने पुकारा : يَا غِيَاثَ الْمُسْتَغِيْثِيْن यानी ऐ मदद मांगने वालों के मददगार ! इसी वक़्त रूमी लश्कर से सुनहरी ज़िरह पहने आला नस्ल के घोड़े पर सुवार एक जंगजू निकला और सीधा उसी जानिब आया। क़ैदमून ने समझा कि वोह उसे अपना घोड़ा देने और उस की मदद करने आया है । लेकिन शहसवार क़रीब आते ही घोड़े से उतरा और क़ैदमून को लात मार कर गिरा दिया और आप से कहा : ऐ अल्लाह के बन्दे ! मदद मांगने वालों के मददगार की तरफ़ से तेरे लिये मदद आ पहुंची है। आप फ़ौरन खड़े हुए और हैरत करते हुए उस शहसवार को देखने लगे, शहसवार के चेहरे पर निक़ाब था। फिर उस ने अपनी तल्वार निकाली और एक ही वार में क़ैदमून को मौत के घाट उतार दिया। हज़रते शुरहबील ने उस से फ़रमाया : अल्लाह की क़सम ! मैं ने तुम से ज़ियादा अ़जीब मुआ़मला नहीं देखा, तुम तो रूमियों के लश्कर की जानिब से आए थे । शहसवार कहने लगा : मैं वोह बदबख़्त और धुत्कारा हुवा शख़्स तुलैहा बिन ख़ुवैलिद हूं जिस ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बाद नुबुव्वत का झूटा दावा किया था और अल्लाह पर झूट बांधा था । हज़रते शुरहबील ने फ़रमाया : ऐ मेरे भाई ! अल्लाह की रहमत हर चीज़ को घेरे हुए है और जो शख़्स तौबा कर लेता है और अल्लाह की तरफ़ लौट आता है तो अल्लाह उस की तौबा को क़बूल कर लेता है और उस के पिछले गुनाहों को मुआ़फ़ कर देता है प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है : तौबा पिछले गुनाहों को मिटा देती है, तुलैहा ने कहा : मेरे पास कोई वज्ह नहीं है कि मैं इस्लाम की तरफ़ लौट आऊं, फिर वापस जाने का इरादा किया तो आप ने उसे रोक लिया और फ़रमाया: मैं तुम्हें यूं जाने नहीं दूंगा बल्कि तुम मेरे साथ इस्लामी लश्कर में चलो, तुलैहा ने कहा : मुझे डर है कि हज़रते ख़ालिद बिन वलीद मुझे क़त्ल कर देंगे, आप ने फ़रमाया : हज़रते ख़ालिद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ लश्कर में नहीं हैं सिपह सालार हज़रते अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ हैं, फिर आप तुलैहा को अपने साथ इस्लामी लश्कर में ले आए अमीरे लश्कर हज़रते अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ तुलैहा को देख कर ख़ुशी से खिल उठे और ख़ुश आमदीद कहा (इस तरह हज़रते तुलैहा दाइरए इस्लाम में दाख़िल हो गए और बहुत अच्छे मुसलमान साबित हुए)।[9]

ताऊ़ने अ़मवास पर ईमानी तअस्सुरात सिन 18 हिजरी में जब शाम में ताऊ़न की वबा फैली तो उस वक़्त के अमीरे शाम ने लोगों से कहा कि येह एक अ़ज़ाब है, लिहाज़ा इस से बचने के लिये पहाड़ों और वादियों में फैल जाओ। जब येह बात हज़रते शुरहबील बिन ह़सना رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا तक पहुंची तो वोह सख़्त नाराज़ हुए और फ़रमाया : ख़ुदा की क़सम ! मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बत पाई है येह (ताऊ़न) तुम्हारे रब की रह़मत और तुम से पहले सालिह़ीन की वफ़ात का ज़रीआ़ है।[10]

ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी और माज़ूली जब हज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ख़लीफ़ा बने तो हज़रते शुरहबील को माज़ूल कर दिया। आप ने पूछा : ऐ अमीरुल मोमिनीन ! क्या मैं ने कोई ख़ियानत की है या मैं इस काम के लिये ना अहल हो गया हूं ? फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : न आप ने ख़ियानत की और न आप ना अहल हैं। अ़र्ज़ की : फिर मुझे क्यूं माज़ूल किया ? फ़रमाया : जब मुझे ज़ियादा बा सलाहिय्यत शख़्स मिल गया है तो आप को क़ाइद बनाने में मुझे हिचकिचाहट हो रही है, अ़र्ज़ की : येह बात लोगों के सामने भी बयान कर दें कि मैं ने न कोई ख़ियानत की है और न मैं ना अहल हूं, फिर हज़रते उ़मर फ़ारूक़ ने इस बात को लोगों के सामने बयान कर दिया।[11]

वफ़ात हज़रत शुरहबील बिन ह़सना رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا सिन 18 हिजरी में ताऊ़ने अ़मवास की वबा में मुब्तला हो कर 67 साल की उ़म्र में वफ़ात पा गए।[12] आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने पूरी ज़िन्दगी इस्लाम की ख़िदमत, जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह और ज़ोहदो इ़बादत मे गुज़ारी और आने वाली नस्लों के लिये एक रौशन मिसाल क़ाइम की।

---

(1)مستدرک، 4/314، حدیث: 5251(2)فتوح الشام، 1/206(3)تاریخ ابن عساکر، 22/467، 471(4)مستدرک، 4/315، حدیث:5256(5)فتوح البلدان، ص169(6)مستدرک، 5/77، حدیث: 6976 ملخصاً(7)فتوح الشام، 1/66 ملخصاً (8)فتوح الشام، 1/206ملخصاً(9)فتوح الشام، 2/22، 23۔ المصباح المضی لابن الحدیدہ، ص106 تا 107(10)مصنف عبد الرزاق، 10/169، حدیث: 20333 ملخصاً(11)مصنف عبد الرزاق، 5/314، حدیث: 9833(12)مستدرک، 4/315، حدیث:5254۔

ह़ज़रते अ़म्र बिन हुरैस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا

कम उ़म्री में जिन ख़ुश नसीब बच्चों को अल्लाह पाक के आख़िरी नबी ह़ज़रते मुहम्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सहाबी होने का शरफ़ मिला उन में ह़ज़रते अ़म्र बिन हुरैस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا भी शामिल हैं, आइये ! उन के बचपन की मुख़्तसर सीरत पढ़ कर अपने दिलों को मह़ब्बते सहाबए किराम से रौशन करते हैं :

मुख़्तसर तआ़रुफ़ आप का शुमार कमसिन सहाबा में होता है, आप सहाबिये रसूल ह़ज़रते हुरैस बिन अ़म्र और अ़मरा बिन्ते हिशाम के बेटे और सहाबिये रसूल ह़ज़रते सई़द बिन हुरैस के भाई हैं, आप 2 हिजरी में पैदा हुए, आप पहले क़ुरशी हैं कि जिन्हों ने कूफ़ा में घर बनाया था।[(1)]

वालिदा के साथ ह़ुज़ूर की बारगाह में ह़ाज़िरी आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मेरी वालिदा मुझे रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ले कर गईं तो आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे सर पर हाथ फेरा और मुझे रिज़्क़ में बरकत की दुआ़ से नवाज़ा।[(2)]

तादादे रिवायात आप से 6 अह़ादीसे मुबारका मरवी हैं।[(3)]

सियाह इ़मामा बांधे देखा एक रिवायत में आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं कि बेशक वोह मन्ज़र अब भी मेरी आंखों में है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मिम्बर पर सियाह इ़मामा बांधे तशरीफ़ फ़रमा हैं, और इ़मामे के दोनों किनारे (शिम्ले) आप के कन्धों के दरमियान लटके हुए थे।[(4)]

इस ह़दीसे पाक से मालूम हुवा कि 1 सियाह इ़मामा भी ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से साबित है 2 बग़ैर शिम्ले का इ़मामा सुन्नत के ख़िलाफ़ है, शिम्ला ज़रूर (होना) चाहिये 3 इ़मामे के दो शिम्ले होना अफ़्ज़ल है और दोनों पुश्त पर हों । ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इ़मामा सात हाथ का था और शिम्ला एक बालिश्त से कुछ ज़ियादा।[(5)]

विसाल ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ 8 साल के थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने 85 हि. में मक्कए मुकर्रमा में वफ़ात पाई।[(6)]

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बेहिसाब मग़्फ़िरत हो ।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) اسد الغابۃ، 4/226-الطبقات الکبیر لابن سعد، 6/534- اکمال تہذیب الکمال، 10/149-فتح الباری، 6/212(2)ادب المفرد، ص 177، حدیث: 647(3)اکمال تہذیب الکمال،10/148(4)مسلم،ص544،حدیث:3312-مشکاۃ المصابیح،1/272،حدیث:1410(5)دیکھیے:مراٰۃ المناجیح،2/344ملخصاً (6)اکمال تہذیب الکمال،10/148،149۔

رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه

इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा की इ़ल्मी जलालतो अ़ज़मत

करोड़ों ह़नफ़ियों के अ़ज़ीम पेशवा, फ़क़ीहे अफ़ख़म, मुज्तहिदे मुत़लक़ ह़ज़रते इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा नोमान बिन साबित رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की ज़ाते गिरामी दुनियाए इ़ल्मो फ़ज़्ल में ग़ैर मामूली मक़ाम रखती है। आप 80 हि. में इ़राक़ के मश्हूर शहर कूफ़ा में पैदा हुए और 70 साल की उ़म्र मुबारक में 2 शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 150 हि. को विसाल फ़रमाया।[1] आप की विलादत ऐसे मुबारक दौर में हुई जब कूफ़ा इ़ल्मो इ़रफ़ान का अ़ज़ीम मर्कज़ था और सत्तर अस्ह़ाबे बद्र और बैअ़ते रिज़्वान में शरीक तीन सौ सह़ाबए किराम ने इस शहर को शरफ़े क़ियाम बख़्शा था।[2] इसी अहमिय्यत के पेशे नज़र उसे कन्ज़ुल ईमान (ईमान का ख़ज़ाना) और क़ुब्बतुल इस्लाम (इस्लाम की निशानी) जैसे अ़ज़ीमुश्शान अल्क़ाबात से नवाज़ा गया।[3]

आप की शख़्सिय्यत मुह़द्दिस व फ़क़ीह, इ़ल्मो अ़मल के जामेअ़, ज़ोहदो तक़्वा के पैकर, अमानत व दियानत में बेमिसाल, हुस्ने अख़लाक़ व हुस्ने सुलूक में बेनज़ीर, ज़बरदस्त हमदर्द व ख़ैरख़्वाह और इन्तिहा दर्जे की ज़हानत व अ़क़्लमन्दी जैसे कई औसाफ़ की ह़ामिल थी।

इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की ज़ाते गिरामी इ़ल्मो अ़मल, तक़्वा व त़हारत, ह़िल्मो बुर्दबारी, सख़ावत व फ़य्याज़ी, ज़हानतो फ़िरासत, और तमाम अख़्लाक़ी कमालात का बह़रे बेकरां थी। आप की ज़िन्दगी का हर पहलू उम्मते मुस्लिमा के लिये मश्अ़ले राह है। आप ने इ़ल्मे दीन को मुनज़्ज़म किया, फ़िक़्ह को मुदव्वन फ़रमाया, इज्तिहाद के उसूल वज़्अ़ किये और क़ियामत तक आने वाले मुसलमानों के लिये राहनुमाई का एक अ़ज़ीम सर्माया छोड़ा। इमाम इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه (वफ़ात : 852 हि.) फ़रमाते हैं कि इमाम अबू ह़नीफ़ा के फ़ज़ाइल बहुत ज़ियादा हैं, अल्लाह तआ़ला उन से राज़ी हो और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह अ़त़ा फ़रमाए।[4]

अल्लाह पाक ने आप को बेपनाह फ़िरासतो ज़कावत से नवाज़ा था, बिलाशुबा आप इ़ल्मे नुबुव्वत के वारिस थे।

इ़ल्मी जलालत और कसरते असातिज़ा व तलामिज़ा

आप ने इब्तिदा में क़ुरआने पाक ह़िफ़्ज़ किया फिर उ़लमा व मुह़द्दिसीने किराम से इ़ल्म ह़ासिल करते करते ऐसे जलीलुल क़द्र फ़क़ीह व मुह़द्दिस बन गए कि हर त़रफ़ आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के चर्चे हो गए। आप का इ़ल्मी मक़ाम इस क़दर बुलन्द है कि आप ने बिला वासित़ा सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से भी इ़ल्म पाया और सह़ाबए किराम से इ़ल्म के ख़ज़ाने पाने वाले कसीर किबार ताबेई़न से भी इक्तिसाबे फ़ैज़ किया।

अ़ज़ीम मुह़द्दिस व फ़क़ीह ह़ज़रते ख़लफ़ बिन अय्यूब رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की बारगाह से "**इ़ल्म**" रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तक पहुंचा, ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सह़ाबा को मिला, सह़ाबए किराम से ताबेई़न को और ताबेई़न से इ़ल्म इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه को

मिला, पस जो चाहे (अल्लाह की इस तक़्सीम पर) राज़ी रहे और जो चाहे बिगड़ता फिरे।[5] इमामे आज़म अबू हनीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के असातिज़ा व तलामिज़ा की तादाद दीगर अइम्मा से कई गुना ज़ियादा है। आप ने 4000 से ज़ाइद उलमा व मुहद्दिसीने किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم से इल्मे दीन हासिल किया जब कि आप के तलामिज़ा आठ सौ के आस पास हैं।[6] सारे मुहद्दिसीन व फ़ुक़हा बिल वासिता या बिला वासिता इमामे आज़म के शागिर्द हैं।[7]

हज़रते यज़ीद बिन हारून رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ख़ुदा की क़सम खा कर कहते हैं : मैं ने एक हज़ार असातिज़ा से पढ़ा और इल्म हासिल किया मगर इमामे आज़म अबू हनीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को इन सब से ज़ियादा मुत्तक़ी, इन सब से ज़ियादा मज़बूत हाफ़िज़े वाला और इन सब से ज़ियादा अक़्लमन्द व ज़हीन पाया।[8]

हज़रते अली बिन आसिम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (वफ़ात : 700 हि.) कहते हैं कि अगर इमाम अबू हनीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के इल्म का उन के अहले ज़माना के इल्म से मुवाज़ना किया जाए, आप का इल्म उन के इल्म पर ग़ालिब होगा।[9]

फ़िक़्ह की तदवीन और इन्क़िलाबी कारनामे

इमामे आज़म अबू हनीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ज़मानए सहाबा के बाद इस्लाम के सब से पहले मुज्तहिदे आज़म हैं, सब से पहले इल्मे फ़िक़्ह को आप ने मुरत्तब किया, आप से पहले फ़िक़्ह की अबवाब बन्दी का एहतिमाम किसी ने नहीं किया था, इस लिये आप फ़िक़्ह के मुदव्विने अव्वल (यानी सब से पहले इल्मे फ़िक़्ह को मुरत्तब करने वाले) क़रार पाए। अल ख़ैरातुल हिस्सान में है : इमाम अबू हनीफ़ा ने सब से पहले इल्मे फ़िक़्ह मुदव्वन किया और उसे अबवाब और कुतुब की तरतीब पर मुरत्तब किया। इमाम मालिक ने अपनी किताब मोअत्ता में इमामे आज़म की इसी तरतीब का लिहाज़ रखा है।[10]

मोअत्ता में इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने आप के तर्ज़ की पैरवी की और फ़िक़्ह के अबवाब पर अपनी मोअत्ता को मुरत्तब किया। आप ने मुसलमानों को पेश आमदा और मुम्किना मसाइल के हल के लिये एक मजलिस क़ाइम फ़रमाई जिस के अरकान की तादाद एक रिवायत के मुताबिक़ एक हज़ार उलमा पर मुश्तमिल थी जिन में 40 अफ़राद मरतबए इज्तिहाद पर फ़ाइज़ थे।[11] आप अपनी राय से कोई भी मस्अला नहीं लिखवाते थे, न ही किसी को अपनी इन्फ़िरादी राय का पाबन्द करते बल्कि ख़ूब ग़ौरो फ़िक्र और बहसो मुबाहसे के बाद जब आख़िरी राय क़ाइम हो जाती तो उसे दर्ज करवाते।[12] येह एक इन्क़िलाबी इक़्दाम था जिस ने फ़िक़्ही इस्तिम्बात को एक मुनज़्ज़म और इज्तिमाई शक्ल दी। आप ने सब से पहले दलाइले अरबआ का तअय्युन किया और ज़मानए ताबेईन में इज्तिहाद व फ़तवा देना शुरूअ कर दिया।[13] आप ने किताबुल फ़राइज़ और किताबुश्शरवत को वज़्अ फ़रमाया।[14] आप ने इल्मे अहकाम मुस्तंबत फ़रमाया और इज्तिहाद के उसूल व ज़वाबित की बुन्याद रखी।[15]

फ़क़ाहत में इम्तियाज़ी मक़ाम

हज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (वफ़ात : 161 हि.) कहते हैं कि इमाम अबू हनीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपने ज़माने में रूए ज़मीन के सब से बड़े फ़क़ीह (यानी इल्मे फ़िक़्ह जानने वाले) थे।[16] हज़रते हफ़्स बिन ग़ियास رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (वफ़ात : 191 हि.) कहते हैं कि फ़िक़्ह के मुआमले में इमामे अअ़ज़म अबू हनीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का कलाम, शेर से ज़ियादा बारीकी लिये हुए है। उन की ऐब जोई कोई निरा जाहिल ही कर सकता है।[17] इमाम अबू नुऐम अस्फ़हानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (वफ़ात : 430 हि.) कहते हैं कि इमाम अबू हनीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मसाइल की ख़ूब तह तक पहुंचने वाले थे।[18] सभी फ़ुक़हा इस्तिदलाल व इस्तिम्बात की दुश्वार राह में आप ही के मोहताज और नक़्शे क़दम पर चलने वाले हैं। इस हवाले से इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का फ़रमान मशहूर है : مَنْ اَرَادَ اَنْ يَّتَبَحَّرَ فِى الْفِقْهِ فَهُوَ عِيَالٌ عَلٰى اَبِىْ حَنِيْفَة यानी जो इल्मे फ़िक़्ह में कमाल चाहता है वोह अबू हनीफ़ा का मोहताज है।[19]

हदीस में महारत और इल्मी ख़िदमात

इमामे आज़म अबू हनीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की हदीस में महारत और ख़िदमात भी बेमिसाल हैं। इमाम यहया बिन मुईन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (वफ़ात : 233 हि.) फ़रमाते हैं : अबू हनीफ़ा सिक़ह थे, वोही हदीस बयान फ़रमाते जो उन्हें हिफ़्ज़ होती, जो याद न होती उसे बयान न

करते थे।[20] अपने वक़्त के अ़ज़ीम मुह़द्दिस इमाम आमश सुलैमान बिन महरान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه (वफ़ात : 148 हि.) का शुमार इमामे आज़म رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के असातिज़ा में होता है। एक बार जब ह़ज़रते इमाम आमश رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने आप से कुछ सुवालात किये तो इमामे आमश رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने ऐसे जवाबात इरशाद फ़रमाए कि उस्तादे मोह़तरम ह़ैरान रह गए ह़ज़रते इमाम आमश رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने अपने इस लाइक़ शागिर्द से पूछा : आप ने येह जवाबात कहां से सीखे और समझे? इमामे आज़म رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : आप ने जो हमें फ़ुलां फ़ुलां रिवायात बयान की थीं उन ही की बुन्याद पर मैं ने येह जवाबात दिये हैं। ह़ज़रते इमाम आमश رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه पुकार उठे: आप तो त़बीब हैं और हम आप की तज्वीज़ कर्दा दवाओं को फ़रोख़्त करने वाले (यानी आप ह़दीस से शरई मसाइल निकालने वाले हैं और हम लोगों को बयान करने वाले)।[21] इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने इमाम अबू ह़नीफ़ा से बढ़ कर ह़दीस की शर्ह़ जानने वाला नहीं पाया।[22]

अकाबिरीने उम्मत की तौसीक़ व तारीफ़

इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की इ़ल्मी जलालत व शान के पेशे नज़र वक़्त के जलीलुल क़द्र फ़ुक़हा व मुह़द्दिसीन और अस्ह़ाबे जरह़ो तादील ने आप की सिक़ाहत, फ़क़ाहत, इ़ल्मी जलालत को बयान किया और आप को मुन्फ़रिद व यक्ता और बेमिसाल क़रार दिया है। ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के भाई के इन्तिक़ाल पर जब इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه उन के घर ताज़ियत के लिये तशरीफ़ लाए तो सुफ़्यान सौरी आप की ताज़ीम में खड़े हो गए, आप को गले लगाया फिर अपनी जगह बिठाया और ख़ुद उन के सामने बैठ गए। एक शख़्स ने आप के इस फ़ेल पर एतिराज़ किया तो ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : उस शख़्स का एक अ़ज़ीम इ़ल्मी मक़ाम है, पस अगर मैं उन के इ़ल्म की वज्ह से न खड़ा होता तो उन की उ़म्र की वज्ह से खड़ा होता, और अगर उन की उ़म्र की वज्ह से खड़ा न होता तो उन की फ़क़ाहत की ताज़ीम में खड़ा होता और अगर उन की फ़क़ाहत के लिये न खड़ा होता तो उन के तक़्वा व परहेज़गारी के बाइ़स खड़ा होता।[23]

किसी ने इमाम मालिक رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه से पूछा कि क्या आप ने इमाम अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه को देखा है? फ़रमाया: बिल्कुल। मैं ने ऐसे शख़्स को देखा है कि अगर वोह तुझ से येह कह देते कि उस सुतून को सोने का बनाया गया है तो ज़रूर उस पर अपनी दलील क़ाइम करते।[24]

इमाम बुख़ारी के उस्ताज़ शैख़ मक्की बिन इब्राहीम رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه (वफ़ात : 211 हि.) का क़ौल है कि इमाम अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه रूए ज़मीन पर सब से बड़े आ़लिम थे।[25] इमाम यह़्या बिन सईदुल क़त्तान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه (वफ़ात : 198 हि.) फ़रमाते हैं : हम ख़ुदा से झूट नहीं बोलते, हम ने इमाम अबू ह़नीफ़ा की राय से अच्छी कोई राए नहीं सुनी और हम ने उन के अक्सर क़ौल को ले लिया है।[26]

इ़ल्मो फ़िरासत का येह आफ़्ताब 70 साल की उ़म्र में 2 शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 150 हिजरी में ग़ुरूब हो गया।[27] आप का मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार आज भी बग़दाद शरीफ़ में मर्जए ख़लाइक़ है।[28]

अल्लाह पाक हमें भी इमामे आज़म رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के फ़ैज़े गौहर बार से ह़िस्सा अ़त़ा फ़रमाए और उन के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) تاریخ بغداد، 13/ 331-نزہۃ القاری، 1/ 169، 219-اخبار ابی حنیفۃ، ص17 (2) طبقات ابن سعد، 6/ 89 (3) طبقات ابن سعد، 6/ 86 (4) تہذیب التہذیب، 8/ 518 (5) فتاوٰی شامی، 1/ 59 (6) تہذیب الاسماء، 2/ 501-المناقب للکردری، 1/ 37 تا 53- عقود الجمان، ص187-الخیرات الحسان، ص68 (7) مراٰۃ المناجیح، مقدمہ، 1/ 15 (8) الخیرات الحسان، ص58 (9) سیر اعلام النبلاء، 6/ 537 (10) الخیرات الحسان، ص43- تبییض الصحیفۃ، ص138-مراٰۃ المناجیح، مقدمہ، 1/ 15 (11) جامع المسانید للخوارزمی، 1/ 33 (12) تاریخ بغداد، 12/ 308 (13) جامع المسانید للخوارزمی، 1/ 27 (14) ایضاً، ص34 (15) ایضاً، ص35 (16) البدایۃ والنہایۃ، 7/ 87 (17) سیر اعلام النبلاء، 6/ 537 (18) تہذیب التہذیب، 8/ 517 (19) ردالمحتار، مقدمہ، 1/ 151 (20) سیر اعلام النبلاء، 6/ 532، تہذیب الکمال، 7/ 339 (21) الثقات لابن حبان، 5/ 334 (22) الانتقاء فی فضائل الثلاثۃ الائمۃ، ص139 (23) تاریخ بغداد، 15/ 459 (24) سیر اعلام النبلاء، 6/ 534 (25) البدایۃ والنہایۃ، 7/ 87 (26) سیر اعلام النبلاء، 6/ 537 (27) نزہۃ القاری، 1/ 219، 169 (28) سیر اعلام النبلاء، 6/ 537-اخبار ابی حنیفۃ واصحابہ، ص94-الخیرات الحسان، ص94۔

अपने बुज़ुर्गों को याद रखिये

रजबुल मुरज्जब इस्लामी साल का सातवां महीना है। इस में जिन औलियाए उ़ज़्ज़ाम और उ़लमाए इस्लाम का यौमे विसाल या उ़र्स है, उन में से 6 का तआ़रुफ़ मुलाहज़ा फ़रमाइये :

मज़ार शैख़ सय्यिद मुहम्मद बिन यख़लफ़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام

1 शैख़ सय्यिद मुहम्मद बिन यख़लफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की पैदाइश जुमादल उख़रा 756 हि. को अर्राशिदिया, रीजन मकनास ताफ़ी लालत, मग़रिब (मराकश) में हुई और 24 रजब 857 हि. को वलहासा, सूबा ऐ़न तमूशनत, अल जज़ाइर, अफ़्रीक़ा में विसाल फ़रमाया। आप अ़ल्लामा व फ़ाज़िल, ज़ाहिद व मुत्तक़ी, माहिरे उ़लूमो फ़ुनून, मुदर्रिस व मुफ़्ती, अ़ल्लामतुल मुहक़्क़िक़ीन, मुस्नदुल अ़स्र, सदरुल अफ़ाज़िल और बा करामत वलियुल्लाह थे।[1]

मज़ार मौलाना मुहम्मद हुसैन फ़ारूक़ी मुहिबुल्लाही इलाहाबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

2 मौलाना मुहम्मद हुसैन फ़ारूक़ी मुहि़ब्बुल्लाही इलाहाबादी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की पैदाइश मह़ल्ला बहादुर गंज, इलाहाबाद, यूपी हिन्द के इ़ल्मी व रूहानी फ़ारूक़ी घराने में ग़ालिबन 1269 हि. को हुई और विसाल 8 रजब 1322 हि. को दरबारे ग़रीब नवाज़ अजमेर शरीफ़ में फ़रमाया, यहीं तदफ़ीन हुई। आप क़ुदवतुल मुहक़्क़िक़ीन, उ़म्दतुल मुदक़्क़िक़ीन, फ़ाज़िले कबीर, आ़लिम व अदीब, ह़कीमे ह़ाज़िक़, आ़रिफ़ बिल्लाह, इमामुल उ़लमा, रईसुल अस्फ़िया, मुसन्निफ़े कुतुब जामेअ़ कमालाते इ़ल्मिय्या व अ़मलिय्या, साहि़बे ह़ाल सूफ़ी, शहीदे महब्बत, उर्दू, फ़ार्सी और अ़रबी के क़ादिरुल कलाम शाइ़र थे।[2]

मज़ार शैख़ सय्यिद फ़ज़्ल पाशा बिन अ़लवी मलीबारी मक्की رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

उ़लमाए इस्लाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام

3 शैख़ुल इस्लाम अ़ल्लामा इस्माई़ल बिन इब्राहीम हाशिमी जब्रती ज़ुबैदी शाफ़ेई़ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की पैदाइश 722 हि. और विसाल 15 रजब 806 हि. में हुवा। येह ज़ुबैद यमन के आ़लिमे दीन, मुहद्दिस, वाइ़ज़, इ़बादत गुज़ार, वलियुल्लाह, साहि़बे करामात, आ़शिक़े अ़ल्लामा इब्ने अ़रबी व फ़ुसूसुल ह़कम, मक़्बूले अ़वाम व सलात़ीन, कसीरुल फ़ैज़, सूफ़िये बा सफ़ा और कसरत से सूरए यासीन की तिलावत करने वाले थे।[3]

4 इमाम मुहम्मद मह़फ़ूज़ तरमसी जावी शाफ़ेई़ मुहाजिर मक्की رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की पैदाइश क़र्या तिरमस, तह़सील अरजोसरी, ज़िल्अ़ क़ाचीतान, मशरिक़ी जावा, इन्डोनेशिया 1285 हि. में हुई और विसाल यकुम रजब 1338 हि. को मक्कए मुकर्रमा में फ़रमाया, माला क़ब्रिस्तान में तदफ़ीन की गई। आप ह़ाफ़िज़ो क़ारी, फ़क़ीह व मुहद्दिस, मुस्नदुल अ़स्र, मुसन्निफ़े कुतुब, उस्ताज़ मस्जिदुल ह़राम, मुत्तक़ी व वरअ़, मुन्कसिरुल मिज़ाज, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर और कसीरुत्तलामिज़ा थे। दो दर्जन के क़रीब कुतुब में حاشية الترميسى، غنية الطلبه، بغية الاذكياء اور نيل المأمول अहम हैं।[4]

5 शैख़ सय्यिद फ़ज़्ल पाशा बिन अ़लवी मलीबारी मक्की رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की पैदाइश कालीकट, मलीबार, केराला, जुनूबी हिन्द के इ़ल्मी सादात बाअ़लवी ख़ानदान में 1240 हि. में हुई और 2 रजब 1318 हि. को इस्तन्बूल में वफ़ात पाई। तदफ़ीन मज़ार कॉम्पलेस, इस्तन्बूल, तुर्किया में हुई। आप उ़लमाए हिन्द, यमन और मक्का से

मुस्तफ़ीज़, दीनी व दुन्यावी उ़लूम से मालामाल, मुजाहिदे आज़ादी हिन्द, मुसन्निफ़े कुतुब, गवरनरे ज़फ़ार, जुनूबी उ़मान, वज़ीरे सल्तनते उ़स्मानिया और ख़ासो आ़म में मक़्बूल थे। आप की 20 कुतुब में अ़क़्दुल फ़राइद और ऐज़ाहुल असरारुल अ़लविय्या अहम हैं।[5]

6 बद्रुल मिल्लते वद्दीन शैख़ सय्यिद मुह़म्मद बिन इब्राहीम ग़लायीनी जीलानी رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ की पैदाइश मह़ल्ला समाना निज़्द अ़क़ीबा दिमश्क़ में 1330 हि. को हुई और 23 रजब 1411 हि. को जिद्दा में विसाल फ़रमाया, माला क़ब्रिस्तान में तदफ़ीन हुई। आप फ़िक़्हे शाफ़ेई व ह़नफ़ी के माहिर, मुस्नदुल अ़स्र और मुदर्रिस व मुफ़्ती थे। मौलाना ज़ियाउद्दीन मदनी से भी इजाज़तो ख़िलाफ़त ह़ासिल थी। उर्दन व दिमश्क़ में तदरीस व इमामत की और ज़ोहदो फ़य्याज़ी में मश्हूर हुए।[6]

शाबानुल मुअ़ज़्ज़म इस्लामी साल का आठवां महीना है। इस में जिन सह़ाबए किराम, औलियाए उ़ज़्ज़ाम और उ़लमाए इस्लाम का विसाल या उ़र्स है, उन में से 6 का तआरुफ़ मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان

1 ह़ज़रते बशीर बिन अ़म्बस बिन ज़ैद अन्सारी ज़फ़री رَضِیَ اللہُ عَنۡہ बहादुर सह़ाबी थे, उन का लक़ब फ़ारिसुल ह़व्वा (यानी ह़व्वा घोड़े के शहसवार) था। येह ग़ज़्वए उहुद से क़ब्ल इस्लाम लाए, ग़ज़्वए उहुद, ग़ज़्वए ख़न्दक़ और बाद के तमाम ग़ज़्वात में शामिल हुए, उन्हों ने मारिकए जिस्र (शाबान 13 हि.) में जामे शहादत नोश किया। मश्हूर सह़ाबी ह़ज़रते क़तादा बिन नोमान رَضِیَ اللہُ عَنۡہ आप के चचाज़ाद भाई थे।[7]

2 ह़ज़रते साबित बिन अ़तीक अन्सारी رَضِیَ اللہُ عَنۡہ बनी अ़म्र बिन मबज़ूल से थे, उन की शहादत मारिकए जिस्र (शाबान 13 हि. या 15 हि.) में हुई।[8]

औलियाए किराम व उ़लमाए इस्लाम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام

3 तल्मीज़े बह़रुल उ़लूम अ़ल्लामा अह़मद अन्वारुल ह़क़ फ़िरंगी मह़ल्ली رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ सिल्सिलए क़ादिरिय्या रज़्ज़ाक़िया के शैख़े त़रीक़त, सूफ़िये बाकमाल और ज़िक्रो अज़्कार में मश्ग़ूल रहने वाले बुज़ुर्ग थे। उन का विसाल 6 या 26 शाबान 1236 हि. मुताबिक़ 1821 ई. को हुआ, लखनऊ में अपने बाग़ में दफ़्न किये गए। आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान के परदादा ह़ाफ़िज़ शाह काज़िम अ़ली ख़ान आप के मुरीद व ख़लीफ़ा थे।[9]

4 पीरे त़रीक़त ह़ज़रते ख़्वाजा सय्यिद गुलाब शाह औरंगाबादी رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ की पैदाइश 1264 हि. में हुई और विसाल 13 शाबान 1355 हि. को फ़रमाया, मज़ार गांव औरंगाबाद, के क़ब्रिस्तान में है। आप आ़लिमे दीन, मुदर्रिस, उस्ताज़ुल उ़लमा, मुरीदो ख़लीफ़ा ख़्वाजा शम्सुल आ़रिफ़ीन और साहिबे करामत बुज़ुर्ग थे। ज़िन्दगी भर दर्सो तदरिस में गुज़ारी, काबुल, क़न्धार, ग़ज़्नी छछ और हज़ारा से त़लबा आ कर पढ़ते थे।[10]

5 पीरे त़रीक़त डॉक्टर मुह़म्मद अल्लाह दत्ता त़ालिब कुन्जाही رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ की पैदाइश 12 फ़रवरी 1886 ई. को कुन्जाह गुजरात में हुई और विसाल 11 शाबान 1377 हि. को हुवा, तदफ़ीन मक़ामे पैदाइश में की गई। इब्तिदाई ज़िन्दगी में आप ने फ़ौज में असिस्टेंट सर्जन की पोस्ट पर ख़िदमात सरअन्जाम दीं, फिर अमीरे मिल्लत अ़ल्लामा सय्यिद जमाअ़त अ़ली शाह मुह़द्दिस अ़लीपूरी से बैअ़त व ख़िलाफ़त की सआ़दत पाई। आप पाबन्दे शरीअ़तो सुन्नत, आ़शिक़े रसूल, साहिबे तस्नीफ़ और इस्लामी शाइ़र थे।[11]

6 शम्सुल अइम्मा इमाम बक्र बिन मुह़म्मद अन्सारी बुख़ारी رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ शैख़ुल ह़नफ़िया, मुफ़्तिये बुख़ारा, अबू ह़नीफ़ा सग़ीर और ह़ाफ़िज़े मज़्हबे ह़नफ़िय्या थे। उन की पैदाइश 427 हि. को ज़रन्जरी निज़्द बुख़ारा में हुई। शम्सुल अइम्मा अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ह़ुलवाई और दीगर उ़लमा व मशाइख़ से उ़लूमो फ़ुनून में महारत पाई। साह़िबे हिदाया शैख़ अ़ली बिन अबू बक्र फ़र्ग़ानी आप के ही शागिर्द हैं, उन्हों ने 19 शाबान 512 हि. को विसाल फ़रमाया।[12]

---

(1) वेबसाइट मुदव्वनह बुर्ज बिन उ़ज़ूज़, तर्जमतुल वलियुस्सालेह़ सय्यिदी मुह़म्मद बिन यख़लफ़ : albordj.blogspot.com
(2)तज़्किरए ग़ौसे सम्दानी, स. 13 ता 27 (3)الضوء اللامع، 2/282 تا 284
(4)امتاع الفضلاء بتراجم القراء، 2/354 تا 357 (5)عقد الفرائد، ص5، 6
(6) اتحاف الاکابر، ص549 , तज़्किरए उ़लमाए अ़रब, 1 / 490 ता 493
(7)الاصابہ، 1/443-اسد الغابہ، 1/294 (8)الاصابہ، 1/509-اسد الغابہ، 1/337
(9) मुम्ताज़ उ़लमाए फ़िरंगी मह़ली, स. 111 ता 115 – तज़्किरए उ़लमाए अहले सुन्नत, स. 32 – तज़्किरए उ़लमाए हिन्द, स. 94
(10) तज़्किरए उ़लमाए अहले सुन्नत, स. 111 ता 113
(11) तज़्किरए ख़ुलफ़ाए अमीरे मिल्लत, स. 212 ता 215
(12)سیر اعلام النبلاء، 14/375۔

नए लिखारी
(New Writers)

सब्र का क़ुरआनी बयान

मुबश्शिर अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ अ़त्तारी
(दर्जए सादिसा जामिअ़तुल मदीना)

इस्लाम एक मुतवाज़िन निज़ामे अख़्लाक़ निज़ामे अख़्लाक़ का अ़लमबरदार है, ह़याते इन्सानी का अम्न अख़्लाक़े ह़सना के साथ वाबस्ता है, अच्छी मुआ़शरत, कामयाब मई़शत और आला व शानदार आइली ज़िन्दगी अख़्लाक़ पर ही मुन्ह़सिर है, अख़्लाक़े ह़सना में से एक ख़ुल्क़ (यानी सिफ़्त) सब्र भी है जो अल्लाह और रसूल की रिज़ा, ह़ुसूले जन्नत, कामयाब ज़िन्दगी और दुनिया व आख़िरत में फ़लाह़ो कामरानी ह़ासिल करने का ज़रीआ़ है।

ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं कि सब्र करने वालों के इलावा हर नेकी करने वाले की नेकियों का वज़्न किया जाएगा क्यूंकि सब्र करने वालों को बेअन्दाज़ा और बेह़िसाब दिया जाएगा। (خازن، الزمر، تحت الآیۃ:10، 4/51)

सब्र की तारीफ़ : नफ़्स को इस चीज़ पर रोकना जिस पर रुकने का अ़क़्ल और शरीअ़त तक़ाज़ा कर रही हो या नफ़्स को इस चीज़ से बाज़ रखना जिस से रुकने का अ़क़्ल और शरीअ़त तक़ाज़ा करे सब्र कहलाता है। (नजात दिलाने वाले आमाल की मालूमात स. 44)

क़ुरआने पाक में मुतअ़द्दद मक़ामात पर सब्र के फ़ज़ाइलो इन्आ़मात को बयान किया गया है आइये हम भी सब्र का क़ुरआनी बयान पढ़ने की सआ़दत ह़ासिल करते हैं :

1 बिशारते इलाही : आज़माइश और तकालीफ़ पर सब्र करने वालों के लिये अल्लाह पाक की त़रफ़ से ख़ास बिशारत है जैसा कि अल्लाह पाक क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है : ﴿ وَ بَشِّرِ الصّٰبِرِیْنَ(۱۵۵) ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ख़ुशख़बरी सुना उन सब्र वालों को। (پ2، البقرۃ:155)

2 अल्लाह पाक की मइ़य्यत : सब्र अल्लाह पाक की मइ़य्यत और जवारे रह़मत ह़ासिल करने का बेहतरीन ज़रीआ़ है जैसा कि क़ुरआने करीम में आता है : ﴿ وَ اصْبِرُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِیْنَ(۴۶) ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और सब्र करो बेशक अल्लाह सब्र वालों के साथ है। (پ10، الانفال:46)

3 अल्लाह का मह़बूब : मसाइबो तकालीफ़ पर सब्रो इस्तिक़ामत इख़्तियार करने से इन्सान अल्लाह पाक का मह़बूब और मुक़र्रब बन जाता है जैसा कि अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है: ﴿ وَ اللّٰهُ یُحِبُّ الصّٰبِرِیْنَ(۱۴۶) ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और अल्लाह सब्र करने वालों से मह़ब्बत फ़रमाता है। (پ4، اٰل عمرٰن:146)

4 बख़्शिश का ज़रीआ : मुसीबत पर सब्र और नेमत पर अल्लाह पाक का शुक्र अदा करना ऐसे औसाफ़ हैं जो बख़्शिश और बड़ा सवाब हासिल करने का ज़रीआ हैं जैसा कि क़ुरआने पाक में इरशाद होता है : ﴿اِلَّا الَّذِیْنَ صَبَرُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِؕ-اُولٰٓىٕكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ كَبِیْرٌ(۱۱)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मगर जिन्हों ने सब्र किया और अच्छे काम किये उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है। (پ12، ھود:11)

5 जन्नत में दाख़िला : अल्लाह पाक अपने नेक बन्दों को इताअ़त और सब्र के बदले जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा जिस में हर तरह की आसाइशें और नेमतें होंगी जैसा कि अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है : ﴿وَ جَزٰىهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّ حَرِیْرًا(۱۲)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उन के सब्र पर उन्हें जन्नत और रेशमी कपड़े सिले में दिये। (پ29، الدھر:12)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों को कभी मरज़ से, कभी जान व माल की कमी से, कभी दुश्मन के डर, ख़ौफ़ से, कभी किसी नुक़्सान से, कभी आफ़ात व बलिय्यात से और कभी नित नए फ़ित्नों व आज़माइशों और तकालीफ़ से आज़माता है कि आया मेरा बन्दा सब्र का दामन इख़्तियार कर के मेरी रिज़ा व अज्रे अ़ज़ीम हासिल करता है या जज़्अ़ व फ़ज़्अ़ (रोना पीटना) और नाशुक्री कर के अपने अज्र को ज़ाएअ़ करता है, हमें भी चाहिये कि जब कोई मुसीबत या तक्लीफ़ आए तो सब्रो इस्तिक़लाल से काम लें और जज़्अ़ व फ़ज़्अ़ कर के आते हुए सवाब को हाथ से न जाने दें और अल्लाह पाक की रहमत और जन्नत के उम्मीदवार बन जाएं।

अल्लाह पाक की बारगाह में दुआ़ है कि वोह हमें हर हालत में सब्रो शुक्र इख़्तियार करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन

बुग़्ज़ो कीना की मज़म्मत ह़दीस की रौशनी में

मुह़म्मद ज़ैन अ़त़्त़ारी
(दर्जए राबिआ जामिअ़तुल मदीना)

कीना वोह मोहलिक बात़िनी बीमारी है जिस में मुब्तला होने वाला दुनिया व आख़िरत का ख़सारा उठाता है और उस के मुज़िर (नुक़्सान देह) असरात से उस के आस पास रहने वाले अफ़राद भी नहीं बच पाते और यूं येह बीमारी आ़म हो कर मुआ़शरे का सुकून बरबाद कर देती है। ख़ानदानी दुश्मनियां शुरूअ़ हो जाती हैं, एक दूसरे की टांगें खींची जाती हैं, ज़लीलो रुस्वा करने और माली नुक़्सान पहुंचाने की कोशिश की जाती है, अपने मुसलमान भाई की ख़ैरख़्वाही करने के बजाए उसे तक्लीफ़ पहुंचाने की कोशिश की जाती है, उस के ख़िलाफ़ साज़िशें की जाती हैं जिस से फ़ित्ना व फ़साद जन्म लेता है। फ़ी ज़माना उस की मिसालें देखी जा सकती हैं।

कीना परवर के शबो रोज़ रंज और ग़म में गुज़रते हैं और वोह पस्त हिम्मत हो जाता है। दूसरों की राह में रोड़े अटकाता है और ख़ुद भी तरक़्क़ी से महरूम रहता है। इमामे शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَیْه फ़रमाते हैं : اَقَلُّ النَّاسِ فِی الدُّنْیَا رَاحَةً اَلْحَسُوْدُ وَ الْحَقُوْدُ दुनिया में कीना परवर और हासिदीन सब से कम सुकून पाते हैं। (बुग़्ज़ो कीना, स. 15)

बुग़्ज़ो कीना की मज़म्मत के मतुअ़ल्लिक़ 3 अहादीसे करीमा पढ़िये :

1 मग़्फ़िरत से महरूमी : अल्लाह के महबूब صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : अल्लाह पाक (माह) शाबान की पन्दरहवीं रात अपने बन्दों पर (अपनी क़ुदरत के शायाने शान) तजल्ली फ़रमाता है, मग़्फ़िरत चाहने वालों की मग़्फ़िरत फ़रमाता है और रह़्म त़लब करने वालों पर रह़्म फ़रमाता है जब कि कीना रखने वालों को उन की ह़ालत पर छोड़ देता है। (شعب الایمان، 3/382، حدیث:3835)

2 दिल में किसी के लिये बुग़्ज़ो कीना न हो : ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं : नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : يَا بُنَيَّ اِنْ قَدَرْتَ اَنْ تُصْبِحَ وَ تُمْسِيَ لَيْسَ فِي قَلْبِكَ غِشٌّ لِاَحَدٍ فَافْعَلْ यानी ऐ मेरे बेटे ! अगर तुम से हो सके कि तुम्हारी सुब्ह़ो शाम ऐसी ह़ालत में हो कि तुम्हारे दिल में किसी के लिये बुग़्ज़ो कीना न हो तो ऐसा ही किया करो।

(ترمذی،4/309،حدیث:2687)

3 कीना परवरी दोज़ख़ में ले जाएगी : जनाब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اِنَّ النَّمِيمَةَ وَالْحِقْدَ فِي النَّارِ لَا يَجْتَمِعَانِ فِي قَلْبِ مُسْلِمٍ यानी बेशक चुग़लख़ोरी और कीना परवरी जहन्नम में हैं, येह दोनों किसी मुसलमान के दिल में जमा नहीं हो सकते। (معجم اوسط،3/301،حدیث:4653)

फ़क़ीह अबुल्लैस समरक़न्दी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : तीन अश्ख़ास ऐसे हैं जिन की दुआ क़बूल नहीं की जाती 1 ह़राम खाने वाला 2 कसरत से ग़ीबत करने वाला और 3 वोह शख़्स कि जिस के दिल में अपने मुसलमान भाइयों का कीना या ह़सद मौजूद हो। (बुग़्ज़ो कीना, स. 12)

मालूम हुवा कि अगर कोई शख़्स कीना, बुग़्ज़, चुग़लख़ोरी और ह़सद में मुब्तला हो तो वोह मुत्तक़ी व परहेज़गार कहलाने का ह़क़दार नहीं, बज़ाहिर वोह कैसा ही नेक सूरत व नेक सीरत हो, अल्लाह तआ़ला हमें ज़ाहिरो बात़िन में नेक बनने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मुत़ालअ़ए क़ुरआन की ज़रूरत व अहमिय्यत

अ़ब्दुर्रह़मान अ़त़्त़ारी मदनी
(तख़स्सुस फ़िल लुग़तुल अ़रबिय्या जामिअ़तुल मदीना)

क़ुरआने करीम रब्बे काइनात की त़रफ़ से नाज़िल होने वाला ऐसा दस्तूरे ह़यात है जो इन्सानिय्यत के लिये हिदायत, रह़मत और रौशनी का सरचश्मा है। येह मह़्ज़ एक मज़हबी किताब नहीं बल्कि अ़द्लो इन्साफ़, अख़्लाक़ व किरदार और फ़लाह़े इन्सानिय्यत का कामिल मन्शूर है। हमारी दुनियावी व उख़रवी कामयाबी इसी किताब से मज़बूत तअ़ल्लुक़ रखने में पोशीदा है।

क़ुरआने करीम का मुत़ालआ़ सिर्फ़ अल्फ़ाज़ की तिलावत नहीं बल्कि रूह़ की ग़िज़ा और दिल के इत़मीनान का ज़रीआ़ है। येह हमें मक़्सदे ह़यात समझाता, किरदार संवारता और ज़ुल्मतों में राहे हिदायत दिखाता है। जब हम ग़ौर व तदब्बुर से क़ुरआन को पढ़ते हैं तो गोया अपने ख़ालिक़ से हम कलाम होते हैं। इस का नूर दिल के अन्धेरों को मिटा देता है और हमें सह़ीह़ रास्ते पर चलने की तौफ़ीक़ बख़्शता है ताकि हम दुनिया की ह़क़ीक़त समझ कर आख़िरत की कामयाबी के लिये तय्यार हो सकें।

तदब्बुर का हुक्म : क़ुरआने करीम ख़ुद अपने मुत़ालआ़ करने वालों को सिर्फ़ तिलावत तक मह़दूद रहने का नहीं कहता, बल्कि गहरे ग़ौरो फ़िक्र, तदब्बुर और तफ़क्कुर की दावत देता है। इरशादे बारी तआ़ला है : ﴿اَفَلَا یَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ ؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या ग़ौर नहीं करते क़ुरआन में।

(پ5،النسآء:82)

सिरात़ुल जिनान में है : इस से मालूम हुवा कि क़ुरआन में ग़ौरो फ़िक्र करना आला दर्जे की इ़बादत है। इमाम ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इह़याउल उ़लूम में फ़रमाते हैं कि एक आयत समझ कर और ग़ौरो फ़िक्र कर के पढ़ना बग़ैर ग़ौरो फ़िक्र किये पूरा क़ुरआन पढ़ने से बेहतर है। (सिरात़ुल जिनान, 2/258)

ह़ज़रते इयास बिन मुआ़विया رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जो लोग क़ुरआने मजीद पढ़ते हैं और वोह तफ़्सीर नहीं जानते उन की मिसाल उन लोगों की त़रह है जिन के पास रात के वक़्त उन के बादशाह का ख़त़ आया और उन के पास चराग़ नहीं जिस की रौशनी मे वोह इस ख़त़ को पढ़ सकें तो उन के दिल डर गए और उन्हें मालूम नहीं कि उस ख़त़ में क्या लिखा है ? और वोह शख़्स जो क़ुरआन पढ़ता है और

उस की तफ़्सीर जानता है उस की मिसाल उस क़ौम की त़रह है जिन के पास क़ासिद चराग़ ले कर आया तो उन्हों ने चराग़ की रौशनी से ख़त़ में लिखा हुवा पढ़ लिया और उन्हें मालूम हो गया कि ख़त़ में क्या लिखा है। (सिरात़ुल जिनान 1/34)

मुत़ालए क़ुरआन की ज़रूरत क्यूं है ?

1 **हिदायत का वाहिद ज़रीआ :** हमारी ज़िन्दगी में बेशुमार चैलेन्जिज़ और सुवालात होते हैं। क़ुरआने करीम हमें हर मस्अले में सह़ीह़ राह दिखाता है, ह़लाल व ह़राम की तमीज़ सिखाता और हमें ज़िन्दगी के हर शोबे में राहनुमाई फ़राहम करता है।

2 **अख़्लाक़ी तरबियत :** क़ुरआने पाक बेहतरीन अख़्लाक़ की तालीम देता है, जैसे सच्चाई, अमानतदारी, अ़फ़्वो दरगुज़र, अ़द्लो इन्साफ़ और दूसरों के साथ हुस्ने सुलूक, मुत़ालअ़ए क़ुरआन से हम अपने अख़्लाक़ को बेहतर बना सकते हैं।

3 **ज़ेहनी सुकून और क़ल्बी इत़मीनान :** दुनिया की बेचैनियों और परेशानियों के बीच, क़ुरआन के मुत़ालए से दिलों को सुकून मिलता है। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है: ﴿اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَىٕنُّ الْقُلُوْبُ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : सुन लो अल्लाह की याद ही में दिलों का चैन है। (پ13، الرعد:28)

4 **तारीख़ी वाक़िआ़त और इ़ब्रतें :** क़ुरआन साबिक़ा अक़्वाम के वाक़िआ़त बयान करता है ताकि हम उन से इ़ब्रत ह़ासिल करें और उन की ग़लत़ियों से बचें।

5 **साइन्स और काइनात के राज़ों की त़रफ़ इशारे :** क़ुरआन में काइनात, इन्सान की तख़्लीक़ और क़ुदरती मज़ाहिर के बारे में ऐसे इशारे मिलते हैं जो साइन्सी तह़क़ीक़ात की बुन्याद बने।

6 **शैत़ान के हथकन्डों से बचाओ :** क़ुरआन का इ़ल्म हमें ह़क़ व बात़िल में तमीज़ सिखाता है और शैत़ान के वस्वसों और फ़रेब से बचने में मदद देता है।

आज ज़रूरत इस बात की है कि हम क़ुरआन को सिर्फ़ बरकत के लिये न पढ़ें बल्कि समझ कर अपनी ज़िन्दगियों का ह़िस्सा बनाएं। रोज़ाना चन्द आयात पढ़ने और उन पर ग़ौर करने की आ़दत बनाएं। क़ुरआने करीम से तअ़ल्लुक़ ही दिलों को ज़िन्दा करता, मुआ़शरे को संवारता और उम्मत को मुत्तह़िद करता है। अगर हम ने क़ुरआन से दूरी ख़त्म न की तो हम रौशनी के बजाए अन्धेरों में भटकते रहेंगे।

याद रखें ! क़ुरआन एक ज़िन्दा मोजिज़ा है, जो हमारी मुर्दा रूहों को नई ज़िन्दगी बख़्श सकता है। इस पर तदब्बुर करना और उस के अह़कामात पर अ़मल करना ही हमारी दुनिया और आख़िरत की कामयाबी का ज़ामिन है।

अल्लाह पाक हमें क़ुरआने पाक पढ़ कर, समझ कर अ़मल की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

बच्चों के लिये प्यारी ह़दीस

नजात की रात

अल्लाह पाक के प्यारे और आख़िरी नबी ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

اِذَا كَانَ لَيْلَةُ النِّصْفِ مِنْ شَعْبَانَ، فَقُوْمُوْا لَيْلَهَا وَصُوْمُوْا نَهَارَهَا

जब माहे शाबान की पन्दरहवीं रात आए तो उस में इ़बादत करो और दिन में रोज़ा रखो। (ابن ماجہ، 2/160، حدیث:1388)

प्यारे बच्चो ! अल्लाह तआ़ला ने साल भर में कुछ ख़ास रातें ऐसी बनाई हैं जिन में बहुत ज़ियादा बरकतें और रह़मतें होती हैं। येह रातें आ़म रातों की त़रह़ नहीं हैं बल्कि उन में इ़बादत करने का सवाब बहुत ज़ियादा मिलता है। जैसे हमारे स्कूल में कुछ ख़ास ईवेन्ट होते हैं जिन में ख़ुशियां मनाई जाती हैं, तह़ाइफ़, इन्आ़मात वग़ैरा की तक़सीम कारी होती है, बिल्कुल वैसे ही अल्लाह पाक ने भी कुछ ख़ास रातें रखी हैं जिन में वोह अपने बन्दों पर ख़ुसूसी रह़मत व करम फ़रमाता है।

जैसे माहे रमज़ान में एक रात शबे क़द्र है जो हज़ार महीनों से बेहतर है। माहे शाबानुल मुअ़ज़्ज़म की पन्दरहवीं रात शबे बराअत है, जिस में बख़्शिश व मग़फ़िरत के परवाने मिलते हैं, इसी त़रह़ माहे रजबुल मुरज्जब की सत्ताइसवीं रात को शबे मेराज कहते हैं, इस रात में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आस्मानों पर तशरीफ़ ले गए और अल्लाह पाक का दीदार किया और जन्नत की सैर की और दोज़ख़ को भी देखा।

इस त़रह़ की बड़ी रातों के बहुत सारे दीनी व दुन्यावी फ़वाइद हैं : मसलन इन रातों में दुआएं क़बूल होती हैं, अल्लाह पाक अपने बन्दों की ग़लत़ियां मुआ़फ़ फ़रमा देता है, ह़लाल रिज़्क़ की दुआ़ करने का बेहतरीन वक़्त मिलता है। एक नेकी का सवाब कई गुना मिलता है। इ़बादत की बरकत से अल्लाह पाक ख़ुश होता है, गुनाहों से बचने की तौफ़ीक़ मिलती है।

शबे बराअत का मत़लब है "**नजात की रात**", यानी उस रात बहुत सारे बन्दों को जहन्नम से नजात मिलती है, किन किन को जहन्नम से आज़ादी मिली है ? इस का इ़ल्म अल्लाह पाक के पास है, अल्लाह ही जानता है, बस हमें हुक्म है कि उस रात की क़द्र करें और ख़ूब इ़बादत कर के अल्लाह पाक को राज़ी करने की कोशिश करें।

अच्छे बच्चो ! शबे बराअत अल्लाह पाक की त़रफ़ से एक ख़ास तोह़फ़ा है। येह रात ग़फ़्लत में न गुज़ारें, अपनी उ़म्र और सलाह़िय्यत के मुत़ाबिक़ कुछ न कुछ इ़बादत ज़रूर करें। थोड़ा अ़मल करें लेकिन दिल से करें और फिर हमेशा करते रहने का इरादा भी करें।

शबे बराअत में बच्चों की एक्टिविटी इस मुक़द्दस रात में भी इ़शा की नमाज़ बाजमाअ़त अदा करें और बच्चियां घर में अपनी अम्मी के साथ नमाज़ पढ़ें, इस रात की बरकतें पाने के लिये ज़ियादा नहीं तो कम अज़ कम दो रकअ़त नफ़्ल ही पढ़ें, जितनी हो सके तिलावते क़ुरआने पाक करें, अल्लाह से अपनी ज़रूरतें मांगें, अपने और दोस्तों के अच्छे नम्बर आने की दुआ़ करें, अपनी ग़लत़ियों पर मुआ़फ़ी मांगें, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूद पढ़ें। हो सके तो दिन में रोज़ा रखें जैसा कि शुरूअ़ में लिखी ह़दीसे पाक में इस की तरग़ीब दी गई है तो यूं ह़दीसे मुबारका पर भी अ़मल होगा।

अल्लाह पाक हमें अह़ादीस पढ़ कर, समझ कर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

एड़ी की ठोकर से चश्मा जारी हो गया

रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुक़द्दसा में अल्लाह पाक की क़ुदरत के जल्वे नज़र आते हैं। अल्लाह तआला ने आप को ऐसे बेशुमार मोजिज़ात अ़ता फ़रमाए जिन्हों ने न सिर्फ़ आप की नुबुव्वत की सच्चाई को ज़ाहिर किया बल्कि इन्सानी हमदर्दी और दाइमी ईमान अफ़रोज़ी का सामान भी बने। आइये आज ऐसे ही एक मोजिज़े के बारे में सुनते हैं :

अबू त़ालिब कहते हैं कि मैं अपने भतीजे यानी हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ ज़ुल मजाज़ में था, (येह अ़रफ़ा से एक फ़र्सख़ (तक़रीबन तीन मील) के फ़ासिले पर एक जगह है जहां जाहिलिय्यत के दौर में बाज़ार लगा करता था) अचानक मुझे प्यास लगी, मैं ने उन से कहा : भतीजे ! मुझे बहुत प्यास लग रही है। मैं येह बात सिर्फ़ प्यास की बेताबी व बेचैनी की वज्ह से कह बैठा था न कि इस लिये कि मुझे इन के पास पानी नज़र आ रहा था।

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी सुवारी से उतर कर कहा : चचा ! क्या वाक़ेई तुम्हें प्यास लगी है ? मैं ने जवाब दिया : हां। फिर आप ने अपनी एड़ी ज़मीन या किसी पत्थर पर मार कर कुछ पढ़ा, इसी लम्हे में पानी के एक चश्मे पर खड़ा था (यानी वहां एक चश्मा जारी हो गया) मैं ने ऐसा पानी पहले कभी न देखा था। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कहा : **"पिएं"** मैं ने इतना पिया कि मेरी प्यास बुझ गई। फिर आप ने एड़ी मार कर पत्थर को वैसा ही बना दिया जैसा पहले था। (सीरते हल्बिय्या, 1 / 170)

سُبْحٰنَ اللّٰه ! एड़ी को ज़मीन या पत्थर पर मार कर उस से पानी का चश्मा जारी कर देना अल्लाह पाक के आख़िरी नबी, मुहम्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अ़ज़ीम मोजिज़ा है। इस वाक़िए से हमें चन्द बातें सीखने को मिलती हैं :

- दूसरों की परेशानी का ख़याल करते हुए अपनी त़ाक़तो क़ुदरत के मुत़ाबिक़ उसे दूर करने की कोशिश करनी चाहिये।
- अल्लाह पाक के फ़ज़्ल से अल्लाह वालों की बारगाह से ऐसे काम बन जाते हैं जो आ़म इन्सानों के बस से बाहर होते हैं।
- कभी कभी मुश्किल वक़्त में ऐसी मदद मिलती है जिस का अन्दाज़ा भी नहीं होता, येह अल्लाह की ख़ास रह़मत होती है।
- अल्लाह पाक जिसे चाहे इ़ज़्ज़त और क़ुदरत दे, वोह किसी ज़ाहिरी सबब के बग़ैर भी बड़ा काम कर सकता है।
- बाज़ चीज़ें देख कर इन्सान का यक़ीन और पुख़्ता हो जाता है कि अल्लाह सब कुछ कर सकता है, और नेक लोग उस के ख़ास बन्दे होते हैं।
- अल्लाह वाले दूसरों की मदद इस त़रह़ करते हैं कि सामने वाले को शर्मिन्दगी भी न हो और काम भी आसानी से हो जाए।
- ऐसा बरताव जो दिल को ख़ुश कर दे, वोह हमेशा याद रहता है और दिल में जगह बना लेता है।
- अच्छे इन्सान को येही ज़ेब देता है कि वोह दूसरों के लिये फ़ाइदेमन्द हो।
- पानी या किसी भी क़ाबिले इस्तिमाल चीज़ को ज़ाएअ़ नहीं करना चाहिये और न ही बे मसरफ़ छोड़ना चाहिये।
- मुश्किलों से नजात के लिये विर्द वज़ीफ़े और दुआ़ का सहारा लेना फ़ाइदेमन्द है।

मजूसी को इस्लाम कैसे मिला ?

नोमान भाई ! मेरे रजिस्टर से पेज निकालने से पहले आप को मुझ से पूछना चाहिये था। उसैद रज़ा हाथ में रजिस्टर पकड़े कह रहे थे।

नोमान : यार एक पेज ही की तो बात है, आप तो ऐसे रो रहे हैं जैसे मैं ने पूरा रजिस्टर ले लिया हो।

उसैद रज़ा जवाब देने ही लगे थे और दोनों बच्चों की तकरार फिर शायद मज़ीद जारी रहती कि इतने में सर बिलाल दरवाज़े के क़रीब पहुंच कर ठहर गए, सब से पहले मुआ़विया की नज़र उन पर पड़ी और जल्दी से दोनों बच्चों को सर की त़रफ़ मुतवज्जेह करते हुए रुक जाने का कहा।

सर बिलाल ब आवाज़े बुलन्द सलाम करते हुए अपनी कुर्सी के पास तशरीफ़ लाए और दुरूद शरीफ़ पढ़ने के बाद सभी बच्चों को अपनी अपनी जगह बैठने का कहा और फिर मुआ़विया से कहने लगे : क्या मछली बाज़ार बना रखा था सुब्ह सुब्ह आप लोगों ने ?

मुआ़विया : नहीं सर ! बस नोमान भाई और उसैद भाई आपस में झगड़ रहे थे।

सर बिलाल : जी नोमान बेटा ! क्या वज्ह बनी, आप दोनों तो हमारी क्लास के समझदार बच्चों में से हैं।

नोमान : सर आज मैथ का टेस्ट है और मैं पेपर शीट लाना भूल गया था, इसी लिये उसैद भाई के रजिस्टर से पेज निकाल लिया था और उन्हों ने आते ही मुझ से लड़ना शुरूअ़ कर दिया, कन्जूस न हो तो ! एक पेज से क्या होता है मैं उन्हें पूरी दस शीट्स ला दूंगा सुब्ह।

जी उसैद बेटा ! आप क्या कहते हैं, सर बिलाल ने उसैद रज़ा से पूछा तो वोह खड़े हो कर बोले : सर ! मैं ने लड़ना नहीं शुरूअ़ किया था मैं सिर्फ़ इस लिये मना कर रहा था कि रजिस्टर से यूं पेज निकालने की वज्ह से वोह लूज़ हो जाता है और येह मुझ से पूछते तो सही ! मेरे पास एक्स्ट्रा शीट्स रखी हुई थीं मैं ने उन में से दे देनी थी।

सर बिलाल ने ख़ामोशी से दोनों की बात सुनी थी बग़ैर किसी क़िस्म की दख़्ल अन्दाज़ी किये क्यूंकि उन के ख़याल में यूं मस्अला वाज़ेह हो कर सामने आ जाता है और उसे बेहतर अन्दाज़ में ह़ल कर सकते हैं लिहाज़ा अब उन्हों ने अपनी बात शुरूअ़ की : नोमान बेटा ! मुझे लगता है उसैद दुरुस्त कह रहे हैं आप को वाक़ेई इन से पूछ लेना चाहिये था बिलफ़र्ज़ रजिस्टर ख़राब होने वाली बात न भी होती फिर भी यूं बग़ैर पूछे लेना तो बिल्कुल भी दुरुस्त त़रीक़ा नहीं है और फिर ग़लती ख़ुद करने के बावुजूद उन्हें कन्जूस कह रहे हैं येह वोही बात हो गई "**एक तो चोरी ऊपर से सीना ज़ोरी**" इस बात पर बच्चे हंसने लगे।

मैं आप को चोर नहीं कह रहा लेकिन याद रखें ! किसी की भी चीज़ उस की इजाज़त के बिना तो बिल्कुल भी इस्तिमाल नहीं करनी चाहिये, क्यूंकि येह बन्दों के हुक़ूक़ में शामिल है और अल्लाह पाक बरोज़े क़ियामत इस ह़वाले से सख़्त ह़िसाब लेगा। हमारे बुज़ुर्ग बन्दों के हुक़ूक़ के मुआ़मले में इन्तिहाई ह़स्सास थे आएं आप को एक वाक़िआ़ सुनाता हूं :

एक मश्हूर ताबेई़ बुज़ुर्ग गुज़रे हैं आप सभी ने यक़ीनन उन का नाम सुन रखा होगा, ह़ज़रते इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ ताबेई़ तो आप को पता है ना किन को कहते हैं ?

नोमान : जी जी सर ! याद है आप ने ही बताया था कि ताबेई़ वोह होते हैं जो मुसलमान होते हुए रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के किसी सहा़बी से मिले हों और फिर मुसलमान ही फ़ौत हुए हों।

सर बिलाल : शाबाश बेटा ! इस का मत़लब है मेरी बातें आप याद रखते हैं, अच्छा तो इमाम अबू ह़नीफ़ा बहुत बड़े आ़लिम होने के साथ साथ बिज़नेसमैन भी थे इसी लिये लोग आप से क़र्ज़ यानी उधार भी ले जाते, एक बार आप अपने एक मक़रूज़ मजूसी (यानी आग की पूजा करने वाले) के यहां क़र्ज़ा वुसूल करने के लिये तशरीफ़ ले गए। इत्तिफ़ाक़ ऐसा हुवा कि उस के मकान के क़रीब आप की जूती में कीचड़ लग गई, कीचड़ छुड़ाने के लिये आप ने अपनी जूती को झाड़ा तो कुछ कीचड़ उड़ कर मजूसी की दीवार से लग गई, अब ह़ज़रत परेशान खड़े हैं कि करूं तो क्या करूं, कीचड़ साफ़ करता हूं तो दीवार की मिट्टी भी उखड़ेगी और साफ़ नहीं करता तो दीवार ख़राब हो रही है। इसी हिचकिचाहट भरी कैफ़िय्यत में मजूसी के दरवाज़े पर दस्तक दे दी। मजूसी ने बाहर निकल कर जब इमामे आ'ज़म को देखा तो बड़ा परेशान हुवा कि क़र्ज़ा वापस करने के पैसे नहीं हैं लिहाज़ा माज़िरत करने लगा लेकिन इमामे आ'ज़म तो अपनी ही परेशानी में थे, इस लिये इस बात की त़रफ़ तवज्जोह दिये बग़ैर उसे दीवार पर कीचड़ लग जाने की बात बताते हुए मुआ़फ़ी भी मांगी और कहा : मुझे येह बताइये कि आप की दीवार किस त़रह साफ़ करूं ? ख़ौफ़े ख़ुदा और आला अख़्लाक़ देख कर उस मजूसी ने इस्लाम क़बूल कर लिया गोया मजूसी कह रहा था कि ह़ज़रत ! दीवार की कीचड़ साफ़ करने से पहले मेरा दिल कुफ़्र की गन्दगी से पाक साफ़ कर दें। (تفسیر کبیر، 1/204)

सर की बात ख़त्म हुई तो नोमान जल्दी से खड़े हुए और हाथ जोड़ कर कहने लगे : उसैद भाई सोरी ! आइन्दा आप की कोई भी चीज़ बिला इजाज़त नहीं लूंगा और मैं ने आप को कन्जूस भी कहा प्लीज़ मुझे दिल से मुआ़फ़ कर दीजियेगा।

अरे नोमान भाई ! हाथ मत जोड़िये मैं ने आप को दिल से मुआ़फ़ किया, उसैद रज़ा ने नोमान के हाथ पकड़ते हुए कहा और सर बिलाल के साथ साथ सारी क्लास मुस्कुरा उठी।

हुरूफ़ मिलाइये !

प्यारे बच्चो ! उ़लमाए अहले सुन्नत की लिखी गईं दीनी किताबें हमें इस्लाम की सह़ीह़ राह दिखाती हैं। उन किताबों से हमें पता चलता है कि अल्लाह तआ़ला ने हमें किस त़रह ज़िन्दगी गुज़ारने का हुक्म दिया है। क़ुरआने पाक सब से बड़ी दीनी किताब है, जिस में हर इन्सान के लिये राहनुमाई है। जब हम दीनी किताबें पढ़ते हैं तो हमें नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों, नेक लोगों के वाक़िआ़त और अच्छे आमाल की मालूमात मिलती है। इस से हमारे दिल में नेकी का शौक़ और बुराई से बचने का ज़ेहन बनता है। दीनी मुत़ालआ़ से इन्सान का दिल रौशन होता है, इ़ल्म बढ़ता है और ईमान मज़बूत होता है। इस लिये हमें रोज़ाना कुछ वक़्त दीनी किताबों के मुत़ालए के लिये ज़रूर निकालना चाहिये ताकि हम एक अच्छे मुसलमान बन सकें।

आप ने ऊपर से नीचे, दाएं से बाएं हुरूफ़ मिला कर पांच अल्फ़ाज़ तलाश करने हैं जैसे टेबल में लफ़्ज़ "**नेक**" तलाश कर के बताया गया है। तलाश किये जाने वाले **5** अल्फ़ाज़ येह हैं : 1 किताब 2 सुन्नत 3 रौशन 4 ईमान 5 इस्लाम।

ر	ک	ش	ی	ک	ث	ا	ح	س
و	ی	ل	م	ا	ل	س	ا	ن
ش	ج	ت	د	ر	س	ی	و	ط
ن	ل	ی	خ	س	ی	ق	س	ک
م	ع	ت	ک	ی	ن	س	ر	ا
ت	ع	ب	ا	و	ا	ث	ت	ی
ا	س	ب	ا	ت	ک	و	ا	م
ر	د	و	گ	ی	و	ش	خ	ا
ت	ن	س	ت	ا	ر	ل	م	ن

अपने बच्चों को शुक्र गुज़ार बनाइये

शुक्र गुज़ारी मुसलमान का निहायत अहम और बुन्यादी वस्फ़ है। येह वोह ख़ूबी है जो इन्सान के दिल में इत़मीनान, सुकून और ख़ुशी पैदा करती है। शुक्र गुज़ार इन्सान हमेशा मुस्बत सोच रखता है और ह़सद, ह़िर्स और मायूसी से मह़फ़ूज़ रहता है। इसी लिये वालिदैन की येह अहम ज़िम्मेदारी है कि वोह अपने बच्चों को बचपन ही से शुक्र गुज़ारी की आ़दत सिखाएं ताकि वोह मुआ़शरे का बेहतरीन फ़र्द बन सकें। बच्चों को शुक्र गुज़ारी का आ़दी बनाने के लिये शुक्रगुज़ारी की अहमिय्यत और फ़वाइद बताइये।

शुक्र गुज़ारी की अहमिय्यत व फ़वाइद

क़ुरआने करीम में शुक्र गुज़ारी की अहमिय्यत को बयान किया गया है। अल्लाह पाक फ़रमाता है:

﴿لَىٕنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِیْدَنَّكُمْ وَ لَىٕنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِیْ لَشَدِیْدٌ(۷)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अगर एह़सान मानोगे तो मैं तुम्हें और दूंगा और अगर नाशुक्री करो तो मेरा अ़ज़ाब सख़्त है।[1] इस आयत से मालूम होता है कि शुक्र गुज़ारी नेमतों में इज़ाफ़े का सबब बनती है।

येह आयत बच्चों के ज़ेहन में येह बात बिठाने के लिये इन्तिहाई अहम है कि शुक्र गुज़ारी नेमतों में इज़ाफ़े का सबब है और नाशुक्री रब को इन्तिहाई नापसन्द है।

बच्चों को शुक्र गुज़ार बनाने के त़रीक़े

❁ अपनी औलाद को शुक्र गुज़ारी का आ़दी बनाने के लिये उन का ज़ेहन बनाइये कि जब भी कोई नेमत मिले तो अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करना चाहिये। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बकरह رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं : जब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कोई ख़ुशी ह़ासिल होती तो आप صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सज्दए शुक्र अदा करते।[2]

❁ बच्चों को सिखाएं कि जब कुछ खाएं या पिएं तो अल्लाह पाक का शुक्र अदा करें इस से अल्लाह पाक ख़ुश होता है। सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से मरवी है कि नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला को येह बात पसन्द है कि बन्दा हर निवाले और हर घूंट पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करे।[3]

❁ ऐसे छोटे बच्चे जिन को वालिदैन अपने हाथ से खाना खिलाते हैं उन को शुक्र की आ़दत डालने के लिये एक लुक़्मा खिलाने के बाद اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहने की तरग़ीब दें, जब वोह येह कह ले तो दूसरा निवाला खिलाएं। اِنْ شَآءَ اللّٰه कुछ ही दिनों में बच्चा हर लुक़्मे पर शुक्र करने का आ़दी बन जाएगा।

जब बच्चे खाना खा चुकें तो उन्हें اَلْحَمْدُ لِلّٰہ और "दुआ" पढ़ने की तरग़ीब दें। हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब खाना तनावुल फ़रमा लेते तो येह दुआ पढ़ते थे:

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِی اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا مُسْلِمِیْنَ

तर्जमा : अल्लाह तआला का शुक्र है कि जिस ने हमें खिलाया, पिलाया और हमें मुसलमान बनाया।[4]

बच्चे अपने आस पास रहने वाले मुख़्तलिफ़ लोगों की ख़ुशनुमा ज़िन्दगियों को देख कर उन से अपना मुवाज़ना करने लगते हैं जिस से उन को अपनी ज़िन्दगी में मौजूद नेमतें कमतर लगने लगती हैं येह चीज़ आगे चल कर हसद, मायूसी और डिप्रेशन के साथ साथ नाशुक्री का बाइस बनती है। वालिदैन को चाहिये कि बच्चों को समझाएं नेमतों का मुवाज़ना करते वक़्त अपने से कम नेमतों वाले को देखें। हदीसे पाक में है : हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ कहते हैं : नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब तुम में से कोई अल्लाह पाक की नेमतों की क़द्र जानना चाहे तो अपने से कम नेमत वालों को देखे, ज़ियादा वालों को न देखे।[5]

बच्चों का ज़ेहन बनाएं कि हर रात सोने से पहले अल्लाह की नेमतों को याद कर के अल्लाह का शुक्र अदा करें।

बच्चों को नेमतों की पहचान कराएं। बच्चों को रोज़ाना येह एहसास दिलाएं कि उन के पास जो सेहत, घर, वालिदैन, तालीम और अम्न की नेमतें हैं, वोह कितनी क़ीमती हैं। उन्हें येह बताएं कि दुनिया में बहुत से लोग उन नेमतों से महरूम हैं।

शुक्र गुज़ारी का आदी बनाने के लिये येह भी अहम है कि बच्चों को नाशुक्री के नुक़्सानात बताएं।

नाशुक्री के नुक़्सानात

नाशुक्री इन्सान के अन्दर हसद पैदा करती है और हसद नेकियों को ख़त्म कर देता है। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हसद नेकियों को इस तरह खा जाता है जिस तरह आग लकड़ी को खा जाती है।[6]

इसी तरह नाशुक्री अल्लाह की नेमतों को ज़ाइल कर देती है और इन्सान को हमेशा मायूसी और बेइत्मीनानी में मुब्तला रखती है जब कि शुक्र से नेमत महफ़ूज़ हो जाती है। हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अल्लाह पाक की नेमतों को शुक्र के ज़रीए महफ़ूज़ कर लो।[7]

हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया कि मुझे येह बात पहुंची है कि जब अल्लाह पाक किसी क़ौम को नेमत अता फ़रमाता है तो उन से शुक्र का मुतालबा फ़रमाता है। अगर वोह उस का शुक्र करें तो अल्लाह उन्हें ज़ियादा देने पर क़ादिर है और अगर नाशुक्री करें तो उन्हें अज़ाब देने पर भी क़ादिर है। वोह अपनी नेमत को उन पर अज़ाब से बदल देता है।[8]

ऐ अल्लाह ! हमें और हमारे बच्चों को शुक्र का आदी बना दे। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلّم

---

(1) پ13، ابراھیم:7 (2) ابن ماجہ، 2/163، حدیث:1394 (3) مسلم، ص1122، حدیث:6932 (4) ترمذی، 5/284، حدیث:3468 (5) الزھد لابن مبارک، ص502، حدیث:1433 (6) ابن ماجہ، 4/361، حدیث:4903 (7) حلیۃ الاولیاء، 5/374، رقم:7455 (8) شعب الایمان، 4/127، حدیث:4536۔

शुक्र की अहमिय्यत और फ़वाइद पर मुश्तमिल 204 रिवायात का मज्मूआ बना "शुक्र के फ़ज़ाइल" मक्तबतुल मदीना से हासिल कीजिये या दावते इस्लामी की वेबसाइट से मुफ़्त डाउनलोड कीजिये।
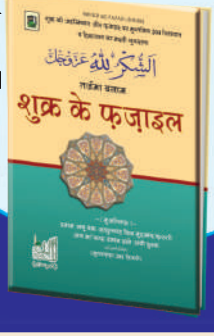

बेटियों को मेहमान नवाज़ी का सलीक़ा सिखाएं

इस्लामी तहज़ीब व तमद्दुन में मेहमान नवाज़ी को एक अ़ज़ीम सिफ़त और नेकी शुमार किया गया है। अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है: जो अल्लाह और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है तो उसे चाहिये कि मेहमान का इकराम (इ़ज़्ज़त) करे।[1] येह तालीम सिर्फ़ मर्दों के लिये नहीं बल्कि ख़वातीन, ख़ुसूसन बेटियों के लिये भी है, क्यूंकि वोही मुस्तक़्बिल की माएं, मालूमात और मुआ़शरती सुतून बनती हैं। मेहमान नवाज़ी सिर्फ़ खाने या चाय पेश करने का नाम नहीं, बल्कि येह एक अख़्लाक़ी ख़ूबी, दीनी तरबियत और तहज़ीबी रिवायत है, येह दिल की वुस्अ़त, हुस्ने अख़्लाक़ और दूसरों के लिये एहतिराम का मज़्हर है। लिहाज़ा ज़रूरी है कि हम अपनी बेटियों के दिल में मेहमान नवाज़ी का जज़्बा पैदा करें। वोह ख़ुश अख़्लाक़ी से पेश आएं, मुस्कुराते हुए सलाम करें, अदब से बात करें और अपनी हैसिय्यत के मुताबिक़ मेहमान की ख़िदमत में लग जाएं।

अपने अ़मल से सिखाइये

जब घर में मेहमान आएं, वालिदा और वालिद उन के साथ हुस्ने सुलूक करें ताकि बेटी मुशाहदा से सीखे। मां बाप को चाहिये कि वोह बेटियों को अ़मली त़ौर पर मेहमान नवाज़ी में शामिल करें, चाहे किसी के लिये चाय बनाना हो, दस्तरख़्वान लगाना हो, या मुस्कुराहट के साथ पानी पेश करना हो। मेहमान के छोटे कामों की ज़िम्मेदारी दें ताकि वोह ख़िदमत का जज़्बा महसूस करे। याद रहे कि बेटी से सिर्फ़ ख़वातीन और महारिम की मेहमान नवाज़ी करवाई जाए। मेहमान ग़ैर महरम हो तो मेहमानों के लिये चाय और दीगर लवाज़िमात का इन्तिज़ाम करवाएं और ग़ैर महरम मेहमान के सामने जाने से मना करें। जब बेटी मेहमान नवाज़ी सीखती है, तो वोह दरअस्ल महब्बत बांटने का फ़न सीखती है येह ख़ूबी आगे चल कर उस की इज़्दिवाजी ज़िन्दगी में भी बरकत का सबब बनती है, क्यूंकि जो बेटी अपने घर में मेहमानों की ख़िदमत करना जानती है, वोह कल को अपने सुसराल में भी इ़ज़्ज़त व महब्बत की मिसाल बन जाती है। जब बेटी मेहमान के साथ हुस्ने सुलूक करे, उस की तारीफ़ करें ताकि वोह उस अ़मल को पसन्द करे और उसे दोहराना चाहे।

मेहमान नवाज़ी और रूहानी तरबियत

बेटियों को येह समझाना ज़रूरी है कि मेहमान नवाज़ी सिर्फ़ दुनियावी फ़ाइदा नहीं बल्कि आख़िरत में भी अज्र का बाइ़स है। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को अबुज़्ज़ीफ़ान (यानी बहुत मेहमान

नवाज़) कहा जाता है। आप बहुत मेहमान नवाज़ थे, आप की आदते करीमा थी कि अकेले खाना नहीं खाते थे, मेहमान आता, उस के साथ बैठ कर ही खाना खाते, अगर कभी मेहमान न आता तो ख़ुद बाहर जा कर किसी को ढूंडते, मेहमान को साथ लाते और उस के साथ बैठ कर खाना खाते थे। मेहमान नवाज़ी को दिलचस्प बनाएं जब बेटियों में मेहमान नवाज़ी का शौक़ पैदा होता है तो वोह न सिर्फ़ घर बल्कि मुआशरे में भी महब्बत, इ़ज़्ज़त और हुस्ने सुलूक की मिसाल बनती हैं। ऐसी ही बेटियों का घराना मुस्तक़्बिल में बेहतरीन तरबियतगाह साबित होता है जो अपनी औलाद व ज़ेरे तरबियत बच्चियों को येही इक़्दार सिखाती हैं, यूं एक बावक़ार और बाअख़्लाक़ नस्ल परवान चढ़ती है। येह रवय्या न सिर्फ़ दीनी अज्र का बाइ़स है बल्कि अख़्लाक़ी तरबियत और मुआशरती वक़ार का निशान भी है। याद रखिये ! मेहमान नवाज़ी सिर्फ़ एक अ़मल नहीं, बल्कि एक किरदार है। मेहमान नवाज़ी तअ़ल्लुक़ात को मज़बूत बनाती है, मुआशरे में महब्बत और भाईचारे को फ़रोग़ देती है, और मुस्बत माहौल पैदा करती है। मेहमान को अल्लाह की रह़मत समझ कर इस का इस्तिक़बाल करें।

मेहमान नवाज़ी को फ़ज़ीलत समझें

मेहमान नवाज़ी को सआदत और फ़ज़ीलत समझें, न कि बोझ। नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है जब कोई मेहमान किसी के यहां आता है तो अपना रिज़्क़ ले कर आता है और जब उस के यहां से जाता है तो साह़िबे ख़ाना के गुनाह बख़्शे जाने का सबब होता है।[(2)] इमाम नववी رَحۡمَةُ اللّٰهِ عَلَيۡه फ़रमाते हैं: मेहमान नवाज़ी करना आदाबे इस्लाम और अम्बिया व सालिह़ीन की सुन्नत है।[(3)]

मेहमान नवाज़ी की तय्यारी करें

घर को साफ़ सुथरा रखें ताकि मेहमान आने पर आप को कोई फ़िक्र न हो। एक मेहमान नवाज़ मेज़बान होने के लिये पहले से तय्यारी ज़रूरी है।

ख़ुलूसे निय्यत का इज़्हार करें

मेहमानों से मुस्कुरा कर मिलें, उन की ज़रूरिय्यात और आराम का ख़याल रखें। मेहमान आए तो अपने कामों में मसरूफ़ रहने के बजाए उस को टाइम दें, उस के साथ बातचीत करें कि उस से दोस्ताना और पुरलुत्फ़ माहौल बनता है। लेकिन याद रहे मेहमान हो या कोई भी, झूट, ग़ीबत और गुनाहों भरी गुफ़्तगू से हमेशा बचें।

मेहमान के सामने खाना पेश करने के आदाब

1 खाना ह़ाज़िर करने में जल्दी की जाए 2 खाने में अगर फल भी हों तो पहले फल पेश किये जाएं क्यूंकि त़िब्बी लिहाज़ (Medical Point of View) से फल पहले खाना ज़ियादा मुवाफ़िक़ है 3 मुख़्तलिफ़ अक़्साम के खाने हों तो ह़त्तल इम्कान सब खाने इकट्ठे पेश किये जाएं 4 जब तक कि मेहमान खाने से हाथ न रोक ले तब तक दस्तरख़्वान न उठाया जाए 5 मेहमानों के सामने इतना खाना रखा जाए जो उन्हें काफ़ी हो क्यूंकि किफ़ायत से कम खाना रखना मुरव्वत के ख़िलाफ़ है और ज़रूरत से ज़ियादा रखना बनावट व दिखलावा है।[(4)] अल्लाह पाक हमें मेज़बानी और मेहमानी के आदाब का ख़याल रखने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1)بخاری، 4/105، حدیث:6019(2)کشف الخفاء،2/33، حدیث: 1641(3)شرح النووی علی المسلم،2/18(4)احیاء العلوم،2/22تا23ملخصاً۔

इस्लामी बहनों के शरई मसाइल

1 शौहर हक़्क़े मेहर की मुआफ़ी क़बूल न करे तो वोह ब दस्तूर लाज़िम रहता है ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उलमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि बीवी अपने शौहर को हक़्क़े मेहर में अदा की जाने वाली रक़म मुआफ़ कर दे, मगर शौहर इन्कार कर दे और कहे कि जब रक़म आएगी तो मैं हक़्क़े मेहर ज़रूर अदा करूंगा ? तो क्या इस सूरत में शरअन शौहर पर हक़्क़े मेहर का अदा करना लाज़िम रहेगा ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

औरत अपनी रिज़ामन्दी व ख़ुशी से अपना हक़्क़े मेहर मुआफ़ कर दे तो वोह मुआफ़ हो जाता है बशर्ते कि शौहर ने इन्कार न किया हो, लिहाज़ा पूछी गई सूरत में शौहर चूंकि हक़्क़े मेहर की मुआफ़ी से इन्कार कर रहा है, तो इस सूरत में हक़्क़े मेहर मुआफ़ नहीं होगा बल्कि शौहर के ज़िम्मे उस की अदाएगी लाज़िम रहेगी।

(ردالمحتار مع الدر المختار، 4/240ملتقطاً-البحر الرائق شرح کنز الدقائق، 3/161-بہارِ شریعت، 2/68)

وَاللّٰہُ اَعۡلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوۡلُہٗ اَعۡلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 औरत जुमुआ वाले दिन भी नमाज़े ज़ोहर ही अदा करेगी ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उलमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि औरत जुमुआ के दिन ज़ोहर पढ़ेगी या जुमुआ की नमाज़ अदा करेगी ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

औरत जुमुआ वाले दिन भी नमाज़े ज़ोहर ही अदा करेगी कि जुमुआ फ़र्ज़ होने की चन्द शराइत हैं इन्ही में से एक शर्त मर्द होना भी है, लिहाज़ा औरत पर जुमुआ फ़र्ज़ नहीं। अलबत्ता येह मस्अला ज़ेहन नशीन रहे कि अगर किसी औरत ने जुमुआ अदा कर लिया तो उस पर से नमाज़े ज़ोहर साक़ित हो जाएगी।

(تنویر الابصار مع الدر المختار، 3/30-32 ملتقطاً-بدائع الصنائع فی ترتیب الشرائع، 1/285ملتقطاً-نورالایضاح وشرحہ مراقی الفلاح، ص269-بہارِ شریعت، 1/770، 771ملتقطاً)

وَاللّٰہُ اَعۡلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوۡلُہٗ اَعۡلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 मुद्दते रज़ाअत में औरत का दूध पीने से रज़ाअत साबित हो जाती है

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उलमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि डेढ़ साला बच्चा अपनी चची की बेटी का फ़ीडर पी ले, जिस में चची ने अपना दूध निकाल कर डाला हो उस में कोई और दूध मिक्स न हो, तो क्या येह दूध पी लेने से येह दोनों बच्चे आपस में रज़ाई भाई बहन बन जाएंगे ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जी हां ! पूछी गई सूरत में येह दोनों बच्चे रज़ाई भाई बहन कहलाएंगे कि मुद्दते रज़ाअत में औरत का दूध ख़्वाह वोह थोड़ा हो या ज़ियादा किसी भी तरीक़े से बच्चे के पेट तक पहुंच जाए तो हुर्मते रज़ाअत साबित हो जाती है, वोह औरत बच्चे की रज़ाई मां कहलाती है और उस औरत की जितनी औलाद है वोह दूध पीने वाले के भाई बहन हैं।

यहां तक तो पूछे गए सुवाल का जवाब था अलबत्ता येह मस्अला ज़ेहन नशीन रहे कि अगर किसी ने फ़ीडर में आम दूध के साथ औरत का दूध मिला दिया तो अब अगर औरत का दूध ज़ियादा हो या दोनों दूध बराबर हों तो हुर्मते रज़ाअत साबित हो जाएगी, और अगर औरत का दूध कम हो और आम दूध ज़ियादा हो तो हुर्मते रज़ाअत साबित नहीं होगी।

(تحفۃ الفقہاء، 2/282-البحر الرائق شرح کنز الدقائق، 3/246-بہارِ شریعت، 2/39)

وَاللّٰہُ اَعۡلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوۡلُہٗ اَعۡلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

सादगी क्या हैं ?

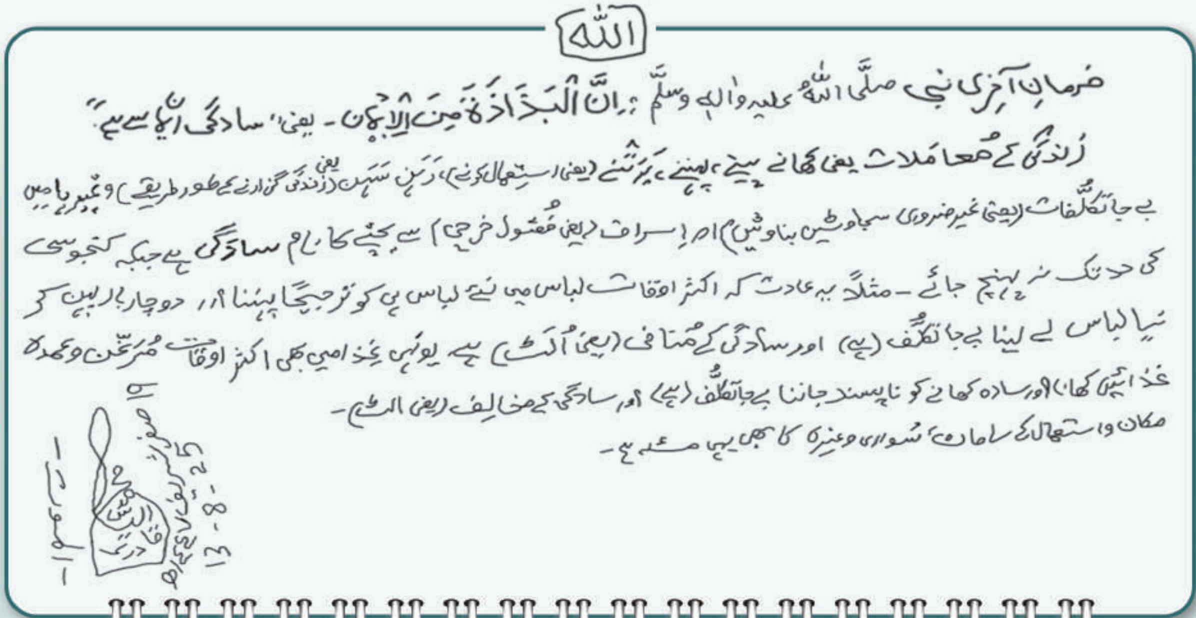

فرمانِ آخری نبی صلی اللہ علیہ والہ وسلم: اِنَّ الْبَذَاذَۃَ مِنَ الْاِیْمَان - یعنی "سادگی ایمان سے ہے"

زندگی کے معاملات یعنی کھانے پینے، پہننے، برتنے (یعنی استعمال کرنے)، رہن سہن (یعنی زندگی گزارنے کے طور طریقے) وغیرہ میں بے جا تکلفات (یعنی غیر ضروری سجاوٹیں بناوٹیں) اور اسراف (یعنی فضول خرچی) سے بچنے کا نام سادگی ہے جبکہ کنجوسی کی حد تک نہ پہنچ جائے۔ مثلاً یہ عادت کہ اکثر اوقات لباس میں نئے لباس ہی کو ترجیحاً پہننا اور دو چار بار پہن کر نیا لباس لے لینا بے جا تکلف (ہے) اور سادگی کے منافی (یعنی اُلٹ) ہے یونہی غذا میں بھی اکثر اوقات مرغن و عمدہ غذائیں کھانا اور سادہ کھانے کو ناپسند جاننا بے جا تکلف (ہے) اور سادگی کے مخالف (یعنی الٹ)۔

مکان و استعمال کے سامان، سواری وغیرہ کا بھی یہی مسئلہ ہے۔

13-8-25

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : اِنَّ الْبَذَاذَةَ مِنَ الْاِيْمَان यानी "सादगी ईमान से है।"

ज़िन्दगी के मुआ़मलात यानी खाने, पीने, पहनने, बरतने (यानी इस्तिमाल करने) रहन सहन (यानी ज़िन्दगी गुज़ारने के त़ौर तरीक़े) वग़ैरह में बेजा तक़ल्लुफ़ात (यानी गैर ज़रूरी सजावटें बनावटें) और इसराफ़ (यानी फ़ुज़ुल ख़र्ची) से बचने का नाम सादगी है जब कि कन्जूसी की ह़द तक न पहुंच जाए। मसलन येह आ़दत कि अक्सर औक़ात लिबास में नए लिबास ही को तरजीह़न पहनना और दो चार बार पहन कर नया लिबास ले लेना बेजा तकल्लुफ़ (है) और सादगी के मुनाफ़ी (यानी उलट) है। यूंही ग़िज़ा में भी अक्सर औक़ात मुरग़्ग़न व उ़म्दा ग़िज़ाएं खाना और सादा खाने को नापसन्द जानना बेजा तकल्लुफ़ (है) और सादगी के मुख़ालिफ़ (यानी उलट)।

मकान व इस्तिमाल के सामान, सुवारी वग़ैरा का भी येही मस्अला है।

दीने इस्लाम की ख़िदमत में आप भी दावते इस्लामी का साथ दीजिये और अपनी ज़कात, सदक़ाते वाजिबा व नाफ़िला और दीगर अ़तिय्यात (Donation) के ज़रीए़ माली तआ़वुन कीजिये !

आप के चन्दे को किसी भी जाइज़, दीनी, इस्लाही (Reformatory),
फ़लाही (Welfare) रूहानी ख़ैर ख़्वाही और भलाई के काम में ख़र्च किया जा सकता है